भण्डारण भारती

भंडारण विशेषांक

अंक : 81

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

जन-जन के लिए भण्डारण

केंद्रीय भंडारण निगम

रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली नीति

केंद्रीय भंडारण निगम अपने ग्राहक अनुकूल, कुशल एवं पारदर्शी पद्धति द्वारा वैश्विक मानकों की वेअरहाउसिंग एवं लॉजिस्टिक सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए वचनबद्ध है तथा अपनी सभी गतिविधियों को इस प्रकार कार्य निर्मित करता है ताकि प्रभावशाली ''रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली नीति'' को सुनिश्चित किया जा सके।

रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली नीति (एबीएमएस) में निरंतर सुधार लाने के लिए हम निम्नानुसार प्रयास करेंगे:

- एबीएमएस के जोखिमों की पहचान।
- हमारे संगठन में रिश्वत पर प्रतिबंध।
- सभी लागू विधिक आवश्यकताओं का अनुपालन।
- बेहतर विश्वास को प्रोत्साहित करना या प्रतिशोध के डर के बिना आत्मविश्वास में भरोसा जागृत करने के आधार पर प्रबंधन प्रणाली स्थापित करना।
- रिश्वत विरोधी अनुपालन कार्य की स्वतंत्रता तथा प्राधिकार को स्पष्ट करते हुए प्रबंधन प्रणाली स्थापित करना।
- रिश्वत विरोधी नीति का अनुपालन नहीं करने के परिणाम को स्पष्ट करते हुए प्रबंधन प्रणाली स्थापित करना।
- सभी कर्मचारियों की भागीदारी और योगदान सुनिश्चित करना।

भण्डारण भारती

छमाही पत्रिका | भंडारण विशेषांक | अंक: 81

अक्तूबर, 2023 – मार्च, 2024

मुख्य संरक्षक
अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद

सहायक संपादक
रेखा दुबे, शशि बाला,
वरुण भारद्वाज

संपादन सहयोग
बीरेन्द्र सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास,
नई दिल्ली–110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक : विबा प्रैस प्रा. लि.
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया,
फेस–2, नई दिल्ली–110020

विषय		पृष्ठ संख्या
प्रबंध निदेशक की कलम से...		03
निदेशक (वित्त) की ओर से...		04
निदेशक (कार्मिक) की ओर से...		05
सुस्वागतम्		06
संपादकीय		07
आलेख		
आधुनिकीकरण एवं केन्द्रीय भण्डारण निगम...	परशुराम गुप्ता	08
केंद्रीय भण्डारण निगम में शीतगृह...	विपिन कुमार सिंह	11
भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता...	मधुर पाहवा	14
मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली...	नम्रता बजाज	22
निगम की रेल परिवहन सेवाएं	पीयूष सरोज	29
केंद्रीय भण्डारण निगम और ओडिशा मिलेट्स...	अनन्या धराश्री राउत	32
जल है तो कल है...	वरुण भारद्वाज	35
जी 20 का मुखिया : भारत...	पंकज पाण्डेय	37
दिल्ली की जीवनदायिनी – मेट्रो	प्रिया	50
निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस – एक परिचय		
सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–I एवं II	क्षे.का.बेंगलुरु	18
सेंट्रल वेअरहाउस, जंस्कार एवं द्रास	क्षे.का. चंडीगढ़	19
विविध		
निगम में "पारंगत" प्रशिक्षण...	राजभाषा अनुभाग	28
कोई लौटा दे, मेरे बीते हुए दिन	रेखा दुबे	40
केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी...	राजभाषा अनुभाग	44
जयपुर अतीत एवं वर्तमान	रजनी सूद	45
आत्मविश्वासः उच्चस्तरीय जीवन की कुंजी	स्वाति अग्निहोत्री	47
विश्वास और अंधविश्वास	मीनाक्षी गंभीर	53
निगम की कीट नियंत्रण सेवा	तकनीकी विभाग	56
ये तेरा डर, ये मेरा डर	रोहित उपाध्याय	57
खिलखिलाकर हँसिए, मुस्कुराइए ...	डॉ. मीना राजपूत	62
साहित्यिकी		
सबसे सुंदर लड़की	विष्णु प्रभाकर	30
कहानी		
घर छोटा हो गया है	सन्तोष	25
कविताएं		
उलझनें	कविता कपूर	10
आखें	अशोक कुमार	27
कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना	सुनीता बाला	34
छोटे का महत्व	डॉ.एच.बी.दास	39
उन्नत देश, भारत देश	जीतेन्द्र कुमार	49
साष्टांग प्रणाम	देवराज सिंह 'देव'	61
सचित्र गतिविधियां		67

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के संबल के रूप में एकीकृत भंडारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण, लॉजिस्टिक सेवाएं एवं तत्संबंधी अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैंडलिंग एवं विवरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियाँ प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के माध्यम से भंडारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भंडारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैंडलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भंडारण वित्तपोशण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फॉरवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक वेल्यू चेन की योजना बनाना और उसमें विविधता लाना।
- वेअरहाउसिंग और लॉजिस्टिक क्षेत्रों में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि निगम द्वारा 'भंडारण भारती' पत्रिका का नियमित रूप से प्रकाशन किया जा रहा है। इसी शृंखला को बनाए रखते हुए पत्रिका का नवीनतम अंक 'भंडारण विशेषांक' के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रसन्नता की बात है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी निगमित कार्यालय सहित सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में निगम का 68वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। यह एक ऐसा अवसर होता है जब हम निगम की स्थापना से अब तक की यात्रा के दौरान अर्जित उपलब्धियों को याद करते हुए भविष्य के लिए पूरी निष्ठा एवं समर्पण की भावना से कार्य करने का संकल्प लेते हैं।

आज निगम ग्रेड 'ए' वेअरहाउस, कोल्ड स्टोरेज एवं प्रोसेसिंग यूनिट सहित 126 लाख मीट्रिक टन की क्षमता के साथ 546 टर्मिनल संचालित कर रहा है। आधुनिकीकरण एवं परिसंपत्ति मुद्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ते हुए निगम द्वारा बेंगलुरू में 3.5 लाख वर्ग फीट तथा ग्रेटर नोएडा में 3.25 लाख वर्ग फीट के आधुनिक हाई–राइज ग्रेड–ए के वेअरहाउस का निर्माण किया गया और नासिक एवं वडोदरा में कोल्ड स्टोरेज की सुविधा प्रदान की गई। निगम खाद्यान्नों के वेअरहाउसिंग सर्विस प्रोवाइडर (डब्ल्यूएसपी) के कार्य से आगे बढ़ते हुए भंडारण, हैंडलिंग और परिवहन की सुविधा प्रदान करने, आयात–निर्यात व्यापार को लॉजिस्टिक सहायता प्रदान करने, तापमान–नियंत्रित भंडारण का विस्तार करने और आधुनिक ई–कॉमर्स और संगठित खुदरा क्षेत्र की मांगों को पूरा करने संबंधी विविध कार्य भी कर रहा है। डब्ल्यूडीआरए के साथ पंजीकृत हमारे सभी सामान्य गोदाम ई–एनडब्ल्यूआर जारी करते हैं जिसे किसान और अन्य जरूरतमंद जमाकर्ता गिरवी रखकर कम दरों पर लोन प्राप्त कर सकते हैं और इस तरह छोटे और सीमांत किसानों के लिए ई–एनडब्ल्यूआर सुविधा और प्रोत्साहन का वातावरण बनाने की दिशा में रिपोजिटरी प्रतिभागी बनना भी एक विशेष कदम है। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि निगम ने गवनर्मेंट सेक्टर कैटेगरी में डब्ल्यूडीआरए से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

निगम वर्तमान में न्यूनतम मैंटेनेंस वाली सामग्री का उपयोग करके उपयोग चक्र की लागत को कम करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। निगम को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली आईएस/आईएसओ 37001:2016 के लिए फिर से प्रमाणित किया गया है। यह उपलब्धि उच्चतम नैतिक मानकों के साथ बिजनेस करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है और पारदर्शिता के प्रति हमारे समर्पण की पुष्टि करती है। हमें हितधारकों और समाज को लाभान्वित करने के लिए व्यापक रूप से नवाचार, प्रयोग और अपने विचारों को संप्रेषित करते रहना चाहिए और प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहिए।

आज तकनीकी के विकास से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। हिंदी के क्षेत्र में भी विभिन्न प्रकार के ई–टूल्स का प्रयोग किया जा रहा है। निगम में भी राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्मिकों को विभिन्न प्रकार की कार्यशाला एवं प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त विभागीय प्रयोग के लिए भंडारण शब्दावली का प्रकाशन भी किया गया। तथापि, राजभाषा संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में निगम हरसंभव प्रयास कर रहा है। जहां निगम अपनी व्यापारिक गतिविधियों को प्रमुखता देते हुए भंडारण की सुविधा उपलब्ध करा रहा है, वहीं राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुरूप अपने कर्तव्यों को भी पूरा करने के लिए कृतसंकल्प है। संसदीय राजभाषा समिति एवं हिंदी सलाहकार समिति में भी निगम के राजभाषा कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त किया गया।

मुझे विश्वास है कि अपने अथक प्रयासों और लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करके हम अपने सपनों को साकार कर सकते हैं। तो आइये! हम उत्कृष्टता की ओर निरंतर आगे बढ़ें एवं निगम के विकास तथा प्रगति के प्रति समर्पित रहें।

शुभकामनाओं सहित,

अमित कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) की ओर से...

भंडारण भारती पत्रिका के 'भंडारण विशेषांक' के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आज के इस डिजिटल युग में, कर्मचारियों के साथ संपर्क और पारदर्शिता बनाए रखना बहुत आवश्यक है जिसमें यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पत्रिका एक ऐसा मंच है, जहाँ हम निगम की उपलब्धियों, आगामी योजनाओं और भावी नीतियों को साझा करते हैं।

निगम पारदर्शिता, शून्य टॉलरेंस नीति और अपने कामकाज में निरंतर सुधार की दृष्टि में विश्वास करता है। हमारा यह निरंतर प्रयास रहा है कि हम अपने संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करें। हम निगम के विकास की दिशा में खाद्यान्नों के भंडारण, कोल्ड स्टोरेज, पेस्ट कंट्रोल सर्विसेज़, रेलसाइड प्रचालन, आयात–निर्यात प्रचालन के अतिरिक्त ग्रेडिंग, सॉर्टिंग, प्रोसेसिंग, प्रिजर्वेशन, परिवहन तथा वितरण आदि विविध कार्यों में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। निगम की अब तक की उल्लेखनीय उपलब्धियों का श्रेय निगम के कार्मिकों की समर्पण की भावना एवं कड़ी मेहनत को जाता है।

वास्तव में किसी भी संगठन में गृह पत्रिका कार्मिकों की हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निगम अपने कार्यों में वैज्ञानिक एवं गुणवत्ता के समावेश के साथ राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है और इसी दिशा में भंडारण भारती पत्रिका भी राजभाषा के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है।

मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करते हुए आप सभी के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक रहेगी। इसमें प्रकाशित सामग्री से न केवल हिंदी में काम करने की भावना को बल मिलेगा अपितु पाठकों को निगम के कार्यकलापों एवं उद्देश्यों के बारे में भी जानकारी मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित।

अनुज कुमार
निदेशक (वित्त)

निदेशक (कार्मिक) की ओर से...

भंडारण भारती पत्रिका का नवीनतम अंक 'भंडारण विशेषांक' के रूप में आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

हम सभी जानते हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है और विविधताओं से परिपूर्ण इस देश को एकता के सूत्र में बांधने के कार्य में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति देने की दिशा में हम निरंतर प्रयासरत रहे हैं। इसी क्रम में निगम में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस का भी आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक काव्य–पाठ किया। यह भी प्रशंसनीय है कि संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण, हिंदी सलाहकार समिति की बैठक तथा प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा किए गए निरीक्षण में भी निगम के राजभाषा हिंदी में किए जा रहे कार्यों के प्रति संतोष व्यक्त किया जाता रहा है।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी निगम ने अपनी कार्यप्रणाली एवं गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करते हुए स्थापना दिवस मनाया। किसी भी संगठन में मानव संसाधन के विकास की विशेष भूमिका होती है जिसके लिए प्रशिक्षण, लगन, मेहनत और उत्साह होना आवश्यक है। आज आवश्यकता इस बात की है कि निगम अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए मानव संसाधन का समुचित प्रयोग करे ताकि संगठन सुस्थिर विकास की दिशा में आगे बढ़ सके। हमारा निगम उत्पादक और उपभोक्ता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है तथा इसने देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज देश आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'' के आदर्शों के लिए प्रतिबद्ध है और निगम भी इन आदर्शों के साथ निरंतर आगे बढ़ रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर अपना स्तर बनाए रखेगी और इसमें प्रकाशित रोचक एवं उपयुक्त सामग्री राजभाषा की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा का संवर्धन करेगी।

शुभकामनाओं सहित।

संगीता

संगीता रामरख्यानी
निदेशक (कार्मिक)

सुस्वागतम्

केंद्रीय भंडारण निगम, मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद पर दिनांक 29.02.2024 को कार्यभार ग्रहण करने पर सुश्री अपराजिता शर्मा का हार्दिक अभिनंदन करता है। आप भारतीय डाक एवं दूरसंचार लेखा तथा वित्त सेवा की 1995 बैच की अधिकारी हैं। आप विज्ञान में स्नातकोत्तर और स्वर्ण पदक विजेता हैं। आपके पास इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस से सार्वजनिक नीति में उन्नत प्रबंधन एवं एनआईएफएम से वित्त प्रबंधन तथा इग्नू से पर्यावरण और सतत विकास तथा आपदा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा हैं।

आपका वित्त, बजट, मानव संसाधन, प्रशासन, कर्मचारी और स्थापना, क्षमता निर्माण, दूरसंचार राजस्व, आंतरिक जांच लेखा परीक्षा जैसे सरकार के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने का 27 वर्ष से अधिक का व्यापक अनुभव है। आपने भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के तत्वावधान में सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड में तकनीकी सलाहकार के रूप में भी काम किया है। आप भारत सरकार के डाक विभाग में विभिन्न राज्यों के वित्त, प्रशासन और मानव संसाधन का नेतृत्व कर चुकी हैं। आप भारतीय डाक एवं दूरसंचार लेखा तथा वित्त सेवा कैडर के लिए मिशन कर्मयोगी की नोडल अधिकारी भी रहीं हैं।

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि सुश्री अपराजिता शर्मा द्वारा विभिन्न विभागों में किए गए कार्य के गहन अनुभव का पूरा लाभ निगम को प्राप्त होगा और उनके मार्गदर्शन में निगम सतर्कता के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

केंद्रीय भंडारण निगम परिवार मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद पर कार्यभार संभालने के लिए उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता है।

संपादकीय

भंडारण भारती के भंडारण विशेषांक के इस नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका पिछले कई वर्षों से निगम में राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

इस पत्रिका में निगम के समूचे भारत में फैले कार्यालयों से कार्मिकों के लेख प्रकाशित होते हैं जिनसे ग्राहकों, हितधारकों और पाठकों को विभिन्न विषयों के साथ–साथ संगठन के बारे में नवीनतम जानकारी मिलती है। भंडारण भारती पत्रिका न केवल ज्ञान और संस्कृति का भंडार है बल्कि यह एक ऐसा मंच भी है जहां विभिन्न विचारों का आदान–प्रदान होता है और इसमें प्रकाशित कविताएं, कहानियां और अन्य साहित्यिक रचनाएं न केवल पाठकों का ज्ञानवर्धन करती हैं अपितु उन्हें प्रेरणा भी प्रदान करती हैं।

इस अंक में, निगम के अधीनस्थ वेअरहाउसों एवं साहित्यिकी जैसे स्थायी स्तंभों के अतिरिक्त भंडारण से जुड़े विभिन्न विषयों यथा – वेअरहाउसों का आधुनिकीकरण, शीतगृह का महत्व, रेल परिवहन सेवाएं, निगम और ओडिशा मिलेट्स मिशन आदि आलेख, कहानी एवं कविताएं प्रकाशित की गईं हैं। विविध स्तंभ के तहत भी अनेक विषयों – दिल्ली मेट्रो, विश्वास और अंधविश्वास आदि पर रचनाएं प्रकाशित की गईं हैं। पत्रिका में निगम में किए जा रहे नवीनतम कार्यों, गतिविधियों और उपलब्धियों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया है।

हम आशा करते हैं कि आपको यह अंक अवश्य पसंद आएगा और इसमें प्रकाशित लेखों से आपको महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी। हम भंडारण भारती पत्रिका के सभी पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे पत्रिका को पढ़ें और अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाएं हमें दें। आपके सुझावों से हमें पत्रिका को और भी बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

आधुनिकीकरण एवं केन्द्रीय भण्डारण निगम के बढ़ते आयाम

परशुराम गुप्ता*

आज से लगभग 70 वर्ष पहले यदि कोई "गोदाम" शब्द सुनता था तो उसके मन में ''धूल भरे गोदाम'' की छवि आती थी। अपरिभाषित आकृति के भवन जो शहरों की बाहरी सीमाओं पर स्थित होते थे, केवल 4 दीवारों वाली संरचनाएँ, जिनमें तल से छत तक सामग्री अव्यवस्थित रूप से भर दी जाती थी। लंबे समय तक, गोदामों को भारत के परिवहन एवं भण्डारण श्रृंखला में कमजोर कड़ी माना जाता था। लेकिन 1957 में केंद्रीय भण्डारण निगम की स्थापना के बाद गोदामों को लेकर जो छवि लोगों के मन में प्रकट होती थी, वो आज काफी बदल चुकी है।

केंद्रीय भंडारण निगम खाद्य अनाज के भंडारण सेवा प्रदाता से लेकर एक संतुलित आय स्रोतों का सतत, संवेदनशील मिश्रण बन गया है। यह एक्ज़िम (आयात–निर्यात) व्यापार को भंडारण और लॉजिस्टिक समर्थन प्रदान करता है, ई–कॉमर्स जैसी आधुनिक आवश्यकताओं के लिए भंडारण समाधान प्रदान करता है, जिसमें तापमान नियंत्रित भंडारण शामिल है। आज, केंद्रीय भंडारण निगम क्षेत्र/खंड की आवश्यकता को पूरा करने के लिए भंडारण और लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने की क्षमता रखता है।

निगम के विकास की कहानी क्षमता वृद्धि, **आधुनिकीकरण**, भंडारण और लॉजिस्टिक्स, रेल प्रचालन, तापमान नियंत्रित भंडारण प्रक्रियाओं, स्वचालन और मूल्य योग्य सेवाओं में प्रवृत्त होकर लिखी जा रही है, जिसमें ग्रेडिंग, सॉर्टिंग, प्रोसेसिंग, पैकेजिंग आदि शामिल हैं।

केंद्रीय भण्डारण निगम ने पिछले कुछ सालों में आधुनिकीकरण के नए आयामों को हासिल किया है जिसमें इसने अनेक सॉफ्टवेयर को लॉन्च किया है इसमें ई–ऑफिस, एचआरएमएस, डब्ल्यूएमएस, बीटीएस, आरएमएस, टैली ईआरपी, एमपीआर इत्यादि शामिल हैं। इन सभी सॉफ्टवेयर की मदद से आज घंटों का काम मिनटों में समाप्त कर लिया जाता है एवं इससे निगम की संपूर्ण कार्यक्षमता का कायाकल्प हुआ है।

आधुनिकीकरण के लाभः

- **ऊर्जा और संसाधन का उपयोगः** आधुनिक भंडारण प्रणालियों में सुरक्षित और अधिक अद्यतित साधनों का उपयोग होता है, जिससे ऊर्जा की बचत होती है और संसाधनों का उपयोग घटता है। केंद्रीय भण्डारण निगम ऊर्जा के स्रोतों का इस प्रकार उपयोग कर रहा है जिससे कम ऊर्जा में अधिक से अधिक भण्डारण सम्बन्धी कार्यों को किया जा सके।

- **अधिक प्रभावी उपयोगः** आधुनिक भंडारण प्रणालियाँ विशेषज्ञता के साथ उपयोग करती हैं, जिससे उत्पादों का बेहतर प्रबंधन होता है और उनका उपयोग प्रभावी रूप से होता है। आज से लगभग 60 से 70 साल पहले किसी गोदाम में रखे हुए किसी किसान का माल उसको वापिस लौटाना है तो हमें बीसियों रिकॉर्ड्स खंगालने पड़ते थे, केवल ये जानने के लिए कि फलाना किसान का माल कौन–सा है और वो इस भंडार गृह में कब रखने के लिए लाया था। फिर उसके भण्डारण शुल्क इत्यादि की गणना करना। इन समस्त कार्यों को पूरा होने में काफी समय लगता है। **आज केंद्रीय भण्डारण निगम में** WMS (वेअरहाउस मैनेजमेंट सिस्टम) **आ**

*तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

जाने से भंडारगृह का कोई भी स्टाफ केवल कुछ ही मिनटों में यह बताने में सक्षम है कि किसी भी गोदाम में कितना माल पड़ा है वो कौन-कौन सी पार्टी का है, भंडारगृह में कब से भंडारित है, एवं इसका भण्डारण शुल्क कितना होगा। साथ ही , इसमें हमें हर कार्य के लिए अलग-अलग फिजिकल रिकॉर्ड बनाने की भी कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि संपूर्ण भंडारगृह प्रणाली डब्ल्यूएमएस में समाहित है।

ई-ऑफिस ने तो ऑफिस कार्य करने के तरीके को ही पूरी तरह से बदल दिया है। आज चाहे निगम का कोई भी कार्मिक देश या विदेश के किसी भी कोने में हो, वो वहां से ऑफिस का कार्य ई-ऑफिस में कर सकता है।

- **डेटा और एनालिटिक्स का उपयोगः** आधुनिक भंडारण प्रणालियों में डेटा और एनालिटिक्स का उपयोग करके व्यवसायों को उत्पादों की मांग पूरी करने के लिए सही निर्णय लेने में मदद मिलती है। **एचआरएमएस केंद्रीय भण्डारण निगम द्वारा अपनाया गया ऐसा सॉफ्टवेयर है जो निगम के सभी कर्मचारियों की दिन-प्रतिदिन की हाज़िरी, अवकाश, विशेष अवकाश इत्यादि का रिकॉर्ड रखता है।**

- **सुरक्षाः** आधुनिक भंडारण प्रणालियाँ उत्पादों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने में मदद करती हैं, जिससे उनका अधिक सुरक्षित रखरखाव होता है। केंद्रीय भण्डारण निगम अपनी भण्डारण व्यवस्था एवं कार्यक्षमता के लिए देश भर में प्रसिद्ध है।

हाल ही में, खाद्य आपूर्ति मंत्रालय ने केंद्रीय भंडारण निगम के आधुनिकीकरण और इसकी भंडारण क्षमताओं को सुधारने की बात की। इन आधुनिकीकरण संबंधित पहलुओं का भी जिक्र किया गया थाः

- नेफेड के साथ मिलकर प्याज, आलू और टमाटर के भंडारण के लिए और अधिक कोल्ड चेन सुविधाओं को बनाने के लिए ठंडे श्रृंगारिक उपकरण बनाने का निर्देश दिया।

- साल 2023 के अंत तक भंडारण क्षमता को दोगुना करना और 10000 करोड़ रुपये का टर्नओवर प्राप्त करना। सभी भंडारगृहों में नियमित रूप से आग, भूकंप, चोरी और दुर्घटनाओं के लिए सुरक्षा मॉनीटरिंग की जांच करना। **(हालांकि निगम का 2022-23 का टर्नओवर लगभग 2200 करोड़ रहा है। लक्ष्य बड़ा है, लेकिन केंद्रीय भण्डारण निगम के समस्त कार्मिक इसको प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं।**

- उन्होंने कहा कि कार्यों के निर्णय लेने की अधिकतम शक्तियां निगम को प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने निगम से मुख्य रूप से देश में कोल्ड चेन भंडारण को महत्ता देने के लिए कहा।

- पूरे देश में गेहूं और चावल के भंडारण के लिए आधुनिक साइलो बनाना ताकि अधिक से अधिक अनाज देश में और लंबे समय तक भंडारित किया जा सके।

आधुनिक भंडारण प्रणालियों का अधिक उपयोग करने से व्यवसायों को उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर होने में मदद मिलती है और उत्पादों का बेहतर प्रबंधन होता है, जिससे उद्योग और व्यवसायों को सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से भी लाभ होता है। केंद्रीय भण्डारण निगम आज सफलता की जिन ऊंचाईयों को छू रहा है उसका अधिकतम श्रेय इसके आधुनिकीकरण को दिया जाना गलत नहीं होगा। **केंद्रीय भण्डारण निगम में आधुनिकीकरण एक ऐसा कार्यशील प्रयत्न है जिसका स्वर्ण युग आना अभी बाकी है।**

उलझनें

कविता कपूर*

"वक्त पर छोड़ दीजिए, कुछ
जो आज नहीं सुलझेंगे, वो
उलझनों के हल
सुलझ जाएंगे कल"।

सवालों के जवाबों, की वो तलाश
सुलझ जाते चुटकियों में यूंही, जो काश
हट जाता हर मुश्किल से जो परदा
हम भी कह देते उलझनों को अलविदा।

उलझनें इन्सान को सोने नहीं देतीं
जिद पे अड़ जाओ, तो रोने भी नहीं देतीं
वैसे खामोशी बुरी चीज नहीं जनाब,
खुदही में संजोए हुए हैं, सभी जवाब।

कल रात का आलम कुछ इस तरह था
मन जागा-जागा और तन सोया-सा था
सब कुछ जानने की वो कशिश
हर जवाब पाने की, वो कोशिश।

क्या है, क्यों है, अब है, या था कल
आज और अभी का, होता वो कोलाहल
मन ढेरों सवालों से सराबोर
और थामें ना थमता वो शोर।

असमंजस में खूब, लगाता वो जोर
कभी इस ओर तो, कभी उस ओर
जल्द ही मिल जाता यूं जो उसे छोर
तो हो शांत, सो जाता, वो भी एक ओर।

चलता रहा सवाल और जवाब का वो दौर
और ना जाने कब हो गई भोर
यूं तो आंखें बन्द थी, पर एकाएक
जवाब पाते ही, हो उठी वो आनंद विभोर।

*बहन श्रीमती रमा कोहली, प्रधान निजी सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

केंद्रीय भण्डारण निगम में शीतगृह का महत्व

विपिन कुमार सिंह*

केंद्रीय भण्डारण निगम में शीतगृह का महत्व

हाल ही में केंद्रीय भण्डारण निगम ने शीतगृह निर्माण की ओर कदम बढ़ाया है। ऐसा ही एक शीतगृह का निर्माण सीएफएस, कालंबोली में शुरू हुआ है जिसका उद्घाटन हमारे माननीय प्रबंध निदेशक द्वारा किया गया।

यह कदम हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में तैयार खाद्य उत्पादों के बेहतर भंडारण और परिवहन का मार्ग प्रशस्त करेगा। कोल्ड स्टोरेज की कार्यप्रणाली को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है ।

कोल्ड स्टोरेज कैसे काम करता है ?

भारत दूध और फलों का दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक भी है जिसमें आम, पपीता, अमरूद और केले शामिल हैं। साथ ही मांस और पोल्ट्री उत्पादों का भी पर्याप्त उत्पादन होता है। अभी भी राष्ट्र में फल और सब्जियों की सालाना खपत लगभग 4.6–15.9 % है। यह अपव्यय कोल्ड स्टोरेज के बुनियादी ढांचे और आधुनिक कटाई तकनीकों की कमी के कारण है ।

कोल्ड स्टोर में क्या-क्या रख सकते हैं ?

आलू, टमाटर, मटर जैसी फसल सीजन के अनुसार होती हैं जबकि दुकानों पर पूरे साल मिलती हैं क्योंकि उन प्रोडक्ट को कोल्ड स्टोरेज में रख दिया जाता है, जिसकी वजह से वह ताजा रहती हैं।

कोल्ड स्टोरेज कितने प्रकार के होते हैं ?

कोल्ड स्टोरेज का बिजनेस दो प्रकार का होता है

- फल और सब्जियों के लिए कोल्ड स्टोरेज
- दूध प्रोडक्ट, पोल्ट्री प्रोडक्ट इत्यादि के लिए कोल्ड स्टोरेज

लागत, मुनाफा व अन्य जानकारियाँ ।

भारत दुनिया का पांचवां ऐसा देश है, जहां सबसे अधिक डेयरी प्रोडक्ट, पोल्ट्री प्रोडक्ट, फल, सब्जियां, फ्रेश मीट प्रोडक्ट, अनाजों के अलावा प्रोसेस्ड एवं पैकिंग फूड आदि का उत्पादन होता है। भारत में प्रतिवर्ष 13 करोड़ टन फलों व सब्जियों का उत्पादन होता है, जो कृषि उद्योग का 18 प्रतिशत है। इन वस्तुओं की जीवन अवधि कम होने तथा इनके रखरखाव के साधन उपलब्ध न होने के कारण उत्पादन की लगभग 20 प्रतिशत वस्तुएं खराब होकर नष्ट हो जातीं हैं। इससे किसानों को भारी नुकसान होता है तथा उनकी फसल का सही दाम भी नहीं मिल पाता है। उद्योगों को भी काफी नुकसान होता है। यदि सारा नुकसान मिलाया जाए तो भारत की अर्थव्यवस्था को

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

भी भारी क्षति होती है। रखरखाव के साधनों की कमी के चलते होने वाले इन वस्तुओं के नुकसान से देश में महंगाई बढ़ती है। महंगाई बढ़ने के कारण देश की आम जनता परेशान होती है और सरकार को कोसती है जबकि असली वजह कुछ और ही होती है। इन सारी समस्याओं का एक ही हल है कोल्ड स्टोरेज। कोल्ड स्टोरेज की देश में मांग की अपेक्षा आज भारी कमी है। इस कमी को देखते हुए सरकार ने कोल्ड स्टोरेज बिजनेस को बढ़ावा देने की कई योजनाएँ बनाई हैं। कई तरह से इस बिजनेस को सब्सिडी मिलती है।

प्रोसेस्ड फूड का जमाना है ।

आज के जमाने में प्रोसेस्ड फूड की जबर्दस्त मांग है या यूं कहिये कि देश के 70 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो प्रोसेस्ड फूड के बिना जीवन नहीं गुजार सकते हैं। इन लोगों की डिमांड के अनुसार प्रोसेस्ड फूड की सप्लाई के लिए कोल्ड स्टोरेज की जबर्दस्त आवश्यकता है। वैसे कोल्ड स्टोरेज में फल, सब्जियां, चाकलेट, केक आदि प्रोसेस्ड फूड, पोल्ट्री प्रोडक्ट, अंडे व अंडे से बने प्रोडक्ट, डेयरी प्रोडक्ट दूध, दही, क्रीम, मक्खन, पनीर, मीट प्रोडक्ट आदि रखा जाता है। कोल्ड स्टोरेज में इन सभी वस्तुओं के जीवन–चक्र को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें आवश्यक तापमान में रखा जाता है। जहां लगी बड़ी–बड़ी कूलिंग मशीनों से वहां के मौसम को ठंडा किया जाता है।

सरकारी सब्सिडी के बावजूद नहीं बढ़ रहे कोल्ड स्टोरेज।

कोल्ड स्टोरेज अपने आप में बड़ा व्यवसाय है। जो बिजनेस मैन एक बार में ही बड़ी पूंजी लगाकर लम्बे समय तक मुनाफा कमाने के बारे में सोचते हैं, कोल्ड स्टोरेज का व्यवसाय उन्हीं के लिए है। भारत में फिलहाल वर्तमान समय में कोल्ड स्टोरेज की क्षमता लगभग 400 लाख टन की है। इसमें से 95 प्रतिशत कोल्ड स्टोरेज प्राइवेट बिजनेस मैन के हैं। 3 प्रतिशत कोल्ड स्टोरेज कोऑपरेटिव सेक्टर के हैं और 2 प्रतिशत कोल्ड स्टोरेज सरकार के पीएसयू सेक्टर के हैं। कोल्ड स्टोरेज की कमी के कारण भारी मात्रा में कृषि, दुग्ध, मांस उत्पाद के बरबाद होने से किसानों और व्यापारियों के साथ सरकार को भी घाटा हो रहा है। सरकार ने कोल्ड स्टोरेज उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक सब्सिडी आदि की आकर्षक योजनाएं भी चलायीं हैं। लेकिन इस उद्योग की मांग को पूरा नहीं किया जा पा रहा है।

कोल्ड स्टोरेज का बिजनेस समय मांगता है ।

कोल्ड स्टोरेज का व्यवसाय कोई आसान व्यवसाय नहीं है। कोल्ड स्टोरेज को तैयार कराने में ही एक साल का समय लग जाता है। शुरू में बहुत बड़ी राशि कोल्ड स्टोरेज को तैयार कराने में लगती है। उसके बाद यह बिजनेस धीरे–धीरे चलता है और लगभग 3 से चार साल तक बिना किसी मुनाफे के चलता है। उसके बाद मुनाफा मिलना शुरू हो जाता है। वैसे हर बिजनेस की तरह कोल्ड स्टोरेज के बिजनेस में भी जबर्दस्त प्रतियोगिता है लेकिन कोल्ड स्टोरेज की दूरी के कारण प्रत्येक कोल्ड स्टोरेज संचालक को उसका लाभ मिलता है।

कोल्ड स्टोरेज को पांच प्रकार की जरूरतों के हिसाब से बांटा गया है। पहला कोल्ड स्टोरेज आलू के रखने के लिए होता है। पूरे देश में आलू का जबर्दस्त उत्पादन होता है। आलू की फसल को बचाने के लिए देश के हर कोने में

कोल्ड स्टोरेज की सुविधा उपलब्ध है। आलू उत्पादक इन कोल्ड स्टोरेज का इस्तेमाल करके अपनी फसल की सुरक्षा करके, उसकी कीमत बढ़ा कर लाभ लेते हैं। दूसरे तरह के कोल्ड स्टोरेज डेयरी और पोल्ट्री प्रोडक्ट के लिए होते हैं। तीसरे तरह के कोल्ड स्टोरेज मीट उद्योग के लिए होते हैं। चौथे तरह के कोल्ड स्टोरेज प्रोसेस्ड फूड के लिए होते हैं। इस तरह के कोल्ड स्टोरेज को ई–कॉमर्स कंपनियां अपने प्रोडक्ट को सुरक्षित रखने के लिए इस्तेमाल करतीं हैं। इसके अलावा पाँचवीं तरह के वे कोल्ड स्टोरेज होते हैं जिनमें सभी तरह के प्रोडक्ट रखे जाते हैं। जानकार लोगों का कहना है कि सभी तरह के प्रोडक्ट रखने वाले कोल्ड स्टोरेज सबसे अधिक कमाई करते हैं इसलिए अधिकांश बिजनेस मैन इसी तरह के कोल्ड स्टोरेज की प्लानिंग करते हैं।

लोकेशन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है ।

कोल्ड स्टोरेज के व्यवसाय में लोकेशन सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। कोल्ड स्टोरेज के लिए जमीन का चुनाव करते वक्त इस बिजनेस की अनेक जरूरतों का ध्यान रखना होता है। यह जगह ऐसी होनी चाहिए कि कोल्ड स्टोरेज में रखे जाने वाले माल का उत्पादन क्षेत्र पास में ही हो या फिर उपभोक्ताओं की जरूरत वाले उत्पादों का बाजार पास में हो। इसके अलावा उस क्षेत्र में पानी और बिजली की अधिक सुविधा हो। साथ ही, किसी भी तरह का वाहन आसानी से कोल्ड स्टोरेज के परिसर तक आ–जा सके। साथ ही सब्जी व फल मंडी तथा अन्य मुख्य मार्केट अधिक दूर न हों। शहरी क्षेत्रों में इसी तरह की लोकेशन चाहिए और ग्रामीण क्षेत्रों में जहां स्थानीय फसलों को कोल्ड स्टोरेज में रखा जाना है वहां आपको सड़क के किनारे की बिजली और पानी की सुविधा वाली जगह लाभदायक साबित हो सकती है।

कौन–कौन से लाइसेंस चाहिए ।

कोल्ड स्टोरेज बिजनेस के लिये अनेक लाइसेंस व सरकारी परमिशन की भी जरूरत होती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं:–

- केन्द्र सरकार के उद्योग विभाग से कोल्ड स्टोरेज के बिजनेस की परमिशन लेनी होती है
- फैक्ट्री लाइसेंस चाहिए
- केन्द्र सरकार के फूड प्रोसेसिंग यूनिट से कोल्ड स्टोरेज का लाइसेंस लेना होता है
- राज्य सरकार के उद्योग विभाग से भी नो आब्जेक्शन सर्टिफिकेट चाहिए
- फूड केमिकल डिपार्टमेंट से क्लियरेंस चाहिए
- जीएसटी नंबर भी चाहिए
- फायर व इन्वायर डिपार्टमेंट से नो आब्जेक्शन सर्टिफिकेट चाहिए
- श्रम विभाग में रजिस्ट्रेशन कराना होगा
- ईपीएफ और ईएसआई में भी रजिस्ट्रेशन कराना होगा
- इसके अलावा केन्द्र सरकार की कोल्ड स्टोरेज की सारी शर्तें पूरी करके परमिशन लेनी होगी
- केन्द्र सरकार के फूड विभाग व पर्यावरण विभाग के निरीक्षण के बाद कोल्ड स्टोरेज की संस्तुति चाहिए
- फूड सेफ्टी एण्ड स्टैण्डर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) से भी लाइसेंस लेना होगा।

चीफ हैप्पीनेस ऑफिसर

प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा कार्यालय में कार्मिकों के खुशी और आनंद का वातावरण सृजित करने के उद्देश्य से श्री अमरीश गौतम, महाप्रबंधक (कार्मिक) को "चीफ हैप्पीनेस ऑफिसर" के रूप में नामित किया गया है।

प्रबंधन द्वारा कार्मिकों के कल्याण की दिशा में ये एक नया एवं महत्वपूर्ण कदम है। हमें पूर्ण विश्वास है कि इससे कार्यालय में कार्य के प्रति सकारात्मक वातावरण बनेगा।

भ्रष्टाचार के प्रति जागरूकता की अनिवार्यता

मधुर पाहवा*

पिछले कई वर्षों में हमने बहुत चुनौतियों का सामना किया है। हमारे अर्थशास्त्रियों ने जो नोटबंदी ओर जीएसटी लागू करने में जो हौसला दिखाया है, वह अतुलनीय है। आतंकवाद का आक्रमण तो बाहर से है, लेकिन हमारी अर्थव्यवस्था पर जो अवरोध हो रहा है वो हमारा अपना है और हमें इससे स्वयं उबरना होगा। काला धन और जाली पैसा ये दोनों ही भ्रष्टाचार के स्तंभ हैं एवं इन्फ्लैशन की जड़ है। जब तक ये जड़, ये स्तंभ हम उखाड़ के नहीं फेकेंगे, तब तक ईमानदार को भ्रष्ट से अलग करना असंभव है। इसमें हार हमेशा ईमानदार की ही होगी। वो मेहनत करता रहेगा लेकिन उसका फल हमेशा कड़वा ही मिलेगा। इन सब सुझावों का प्रतिफल तब तक नहीं मिलेगा जब तक हम चोर से आगे न निकल जाएं।

"मैं सरकारी अफसर हूं... फर्ज मेरा धर्म है"

"भ्रष्टाचार एक सख्त प्रशासनिक व्यवस्था के चिलचिलाते टायरों में तेल की तरह है"

"Corruption is like grease to the screeching tires of a rigid administrative system"

विकसित भारत के लिए आवश्यक है कि भारत में सिस्टम अथवा नौकरशाही के साथ जो नेगेटिविटी पिछले दशकों में जुड़ी थी, वो पॉजिटिविटी में बदले।

भ्रष्टाचार अर्थात भ्रष्ट आचरण। भ्रष्टाचार समाज को कमजोर बना देता है और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास को रोक देता है। यह नैतिकता, ईमानदारी और न्याय के मूल तत्वों का हनन भी करता है। भ्रष्टाचार से लोगों की रोजमर्रा की जिन्दगी प्रभावित होती है।

किसी राष्ट्र में भ्रष्टाचार के निम्न प्रकार हो सकते हैं ।

- सरकारी एवं सार्वजनिक क्षेत्र में
  - राजनैतिक भ्रष्टाचार
  - पुलिस द्वारा भ्रष्टाचार
  - न्यायिक भ्रष्टाचार
- शिक्षा प्रणाली में भ्रष्टाचार
- स्वास्थ्य एवं सैन्य क्षेत्र में भ्रष्टाचार
- उद्योग (सरकारी एवं गैर सरकारी) जगत का भ्रष्टाचार
- धर्म में भ्रष्टाचार
- दर्शन में भ्रष्टाचार
- श्रमिक संघों में भ्रष्टाचार
- सुहृद पूँजीवाद (Crony Capitalism) अर्थव्यवस्था की उस अवस्था का सूचक है जहाँ व्यापार में सफलता व्यापारी और सरकारी अधिकारियों के आपसी संबंध से तय होने लगती है।

"लोगों की उदासीनता भ्रष्टाचार को बढ़ाने के लिए सबसे अच्छी प्रजनन भूमि है।"

*प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

भ्रष्टाचार के विभिन्न तरीके

घूस (रिश्वत), चुनाव में धांधली, रतिक्रिया के बदले पक्षपात, हफ्ता वसूली, जबरन चन्दा लेना, बलात धन ऐंठना (Extortion), ब्लैकमेल, विवेकाधिकार का दुरुपयोग, भाई–भतीजावाद (Nepotism), अपने विरोधियों को दबाने के लिये सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, भ्रष्ट विधान बनाना, न्यायाधीशों द्वारा गलत या पक्षपातपूर्ण निर्णय, कालाबाजारी करना, व्यापारिक नेटवर्क, लेखाकारों द्वारा किसी बिजनेस के वित्तीय कथनों पर सही और निर्भीक राय न लिखना या उनके गलत आर्थिक कार्यों को ढकना, वंशवाद, टैक्स चोरी, झूठी गवाही, झूठा मुकदमा, परीक्षा में नकल, परीक्षार्थी का गलत मूल्यांकन, पैसे लेकर संसद में प्रश्न पूछना, पैसे लेकर वोट देना, वोट के लिये पैसा और शराब आदि बाँटना, पैसे लेकर रिपोर्ट छापना, विभिन्न पुरस्कारों के लिये चयनित लोगों में पक्षपात करना, दूसरे के किए काम को अपना बताकर अधिकारियों से अपने लिए कृपादृष्टि (किसी भी विषय पर पक्षपात) प्राप्त करना, अधिकारियों के खुशामद करने पर दूसरों अधिकारियों व कर्मचारियों से पक्षपात करना इत्यादी भ्रष्टाचार के सुप्रसिद्ध तरीके हैं।

"भ्रष्टाचार का भुगतान गरीबों द्वारा किया जाता है"

समाज और व्यवस्था को, राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। अगर उसे संयमित न किया गया तो भ्रष्टाचार मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों के मानस का अंग बन सकता है। मान लिया जाता है कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे तक सभी को, किसी को कम तो किसी को ज्यादा, लाभ पहुँचा रहा है। राजनीतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार एक–दूसरे से अलग न होकर परस्पर गठजोड़ से पनपते हैं। भ्रष्टाचार से आम लोग समस्याओं का सामना करते हैं, जबकि सिर्फ कुछ लोग ही भ्रष्टाचार से लाभान्वित होते हैं। भ्रष्टाचार कुछ लोगों के लिए एक अल्पकालिक जीत है जो कई लोगों को गहराई से नुकसान पहुंचाता है।

"भ्रष्टाचार एक कैंसर है, एक कैंसर जो लोकतंत्र में एक नागरिक के विश्वास को खत्म कर देता है, नवाचार और रचनात्मकता की प्रवृत्ति को कम कर देता है"।

भ्रष्टाचार के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि यह समाज के मूल्यों को भ्रष्ट कर देता है। भ्रष्टाचार राष्ट्र के नेताओं, सरकारी कर्मचारियों और सामान्य लोगों के आचरण में 'शरीर में कैंसर' समान फैल जाता है और न्याय एवमं राष्ट्र की प्रगति के साथ खिलवाड़ करता है। भ्रष्टाचार के परिणामस्वरूप, सामाजिक और आर्थिक असमानता बढ़ जाती है। भ्रष्टाचार राष्ट्र की उन्नति को भी प्रभावित करता है, क्योंकि यह निवेश और विकास के लिए जरूरी स्रोतों को प्रभावित करता है जिससे अर्थव्यवस्था कमजोर होती है। संसाधनों और अवसरों की उपलब्धता के रास्ते में रुकावट पैदा करता है, साथ ही भ्रष्टाचार से सार्वजनिक संस्थानों में भरोसा कम होता है और सामाजिक संस्थाओं की अहमियत कम होती है। भ्रष्टाचार लोगों में विश्वास कम करता है और सरकारी प्रक्रियाओं के साथ जुड़े रहने के लिए हतोत्साहित करता है।

"हममें से अभी भी ऐसे लोग हैं जो भ्रष्टाचार पर काबू पाने के लिए काम करते हैं और मानते हैं कि यह संभव है"।

भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए हमें नेताओं के खिलाफ खड़े होना होगा, साथ ही लोकतंत्रिक प्रक्रियाओं को सही तरीके से प्रयोग करने की मांग करनी होगी। हमें सशक्त और ईमानदार लोगों को सत्ता में लाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि भ्रष्टाचार को रोका जा सके। भारत में भ्रष्टाचार का विरोध करने के लिए निम्नलिखित नियंत्रण उपाय उपलब्ध हैं:–

1. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005
2. लोकसेवा अधिकार कानून
3. भ्रष्टाचार–निरोधक कानून
   - भारतीय दण्ड संहिता, 1860

- भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988
- बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम
- अर्थशोधन निवारण अधिनियम, 2002 (Prevention of Money Laundering Act, 2002)
- आयकर अधिनियम 1961 की अभियोग धारा (Prosecution section of Income Tax Act, 1961)
- लोकपाल अधिनियम, 2013

4. भ्रष्टाचार विरोधी पुलिस एवं न्यायालय
5. भ्रष्टाचार विरोधी नागरिक संगठन
   - इंडिया अगेंस्ट करप्शन
   - लोकसत्ता आन्दोलन
6. चुनाव सुधार
7. डिजिटल लेन–देनः डिजिटल लेन–देन से पारदर्शिता आती है और भ्रष्टाचार कम होता है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने से लोग समाज में सशक्त होते हैं और अपने अधिकारों की रक्षा करने के लिए उठते हैं। यह सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है और समाज को अधिक जागरूक बनाता है। भ्रष्टाचार का विरोध करना भारतीय संविधान के मूल तत्वों के साथ मेल खाता है। जब भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी सफल होती है, तो निष्पक्षता और समानता का लक्ष्य विफल हो जाता है। भ्रष्टाचार महत्वपूर्ण निविदा प्रक्रियाओं को भी कमजोर करता है, उद्योगों को नुकसान पहुंचाता है और प्रतिस्पर्धा को भी कमजोर करता है।

किसी राष्ट्र को भ्रष्टाचार मुक्त करने में सरकार की भी बहुत बड़ी एवं अहम जिम्मेदारी होती है जो जनता को शिक्षित करने से शुरू होती है। किसी देश की स्थिरता, विकास एवं अपराध से प्रभावी ढंग से लड़ने के लिए सभी के साथ समान और निष्पक्ष न्याय महत्वपूर्ण है।

"हमें एक–दूसरे को अपनी कहानियाँ बताने की जरूरत है। हमें यह दिखाने की जरूरत है कि हमारे पड़ोसी, हमारे परिवार, हमारे समुदाय के नेता – हर कोई जिसे हम जानते हैं, भ्रष्टाचार से प्रभावित हैं। मानवता जिन मुख्य मुद्दों का सामना कर रही है, उनमें से कोई भी जानकारी के बिना हल नहीं किया जा सकता।

सरकार द्वारा लिए जाने वाले भ्रष्टाचार रोधी उपाय :

- स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी प्रमुख सेवाओं में लागत के बारे में जनता, मीडिया और राज्य सरकारों के बीच जागरूकता बढ़ाना। बुनियादी सेवाओं के कार्यशील होने से पूरे समाज को लाभ होता है।
- ईमानदारी, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई संस्कृति का हिस्सा होनी चाहिए। उन्हें मौलिक मूल्यों के रूप में सिखाया जाना चाहिए।
- अपने देश के युवाओं को नैतिक व्यवहार क्या है, भ्रष्टाचार क्या है और इससे कैसे लड़ना है, इसके बारे में शिक्षित करें और उन्हें शिक्षा के अधिकार की मांग करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सुनिश्चित करना कि नागरिकों की भावी पीढ़ियाँ भ्रष्टाचार मुक्त देशों की उम्मीद में पली–बढ़ीं, एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने के लिए सबसे अच्छे उपकरणों में से एक है।

- भ्रष्टाचार की घटनाओं की रिपोर्ट करें। ऐसा माहौल बनाएं जहां कानून का शासन कायम हो।
- लोगों में प्रचार होना चाहिए कि वह ऐसी किसी भी गतिविधि में भाग लेने से इंकार करें जो कानूनी और पारदर्शी न हो।
- सरकारों को घरेलू और विदेशी निवेश बढ़ाने पर जोर देना चाहिए। बेरोजगारी में कमी से अर्थव्यवस्था में अधिक पैसा आएगा जिससे अंततः भ्रष्टाचार में कमी आएगी। हर कोई उन देशों में निवेश करने के लिए अधिक इच्छुक होता है जब वह यह देखता है कि धन भ्रष्ट अधिकारियों की जेब में नहीं भेजा जा रहा है।
- भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहनशीलता प्रथाओं को लागू करके आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देना। एक पारदर्शी और खुला व्यापारिक समुदाय किसी भी मजबूत लोकतंत्र की आधारशिला है।

"युवाओं का कर्तव्य भ्रष्टाचार को चुनौती देना है"

जैसा कि हम महत्वाकांक्षी जलवायु कार्रवाई और एक न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए युवाओं की सक्रियता देख रहे हैं, वैसे ही राष्ट्र के सभी नागरिकों को भ्रष्टाचार और उससे संबंधित गतिविधियों का ख़ात्मा करने के लिए आगे बढ़कर जवाबदेही और न्याय की भी मांग करनी चाहिए।

यदि भ्रष्टाचार एक बीमारी है, तो पारदर्शिता इसके उपचार का अनिवार्य हिस्सा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना, मानव अधिकारों के लिए लड़ना है। युवाओं को अपने जीवन के लिए एक ऐसा उद्देश्य ढूंढना महत्वपूर्ण है, जो सार्थक हो। भ्रष्टाचार से लड़ना बेहद संतुष्टिदायक हो सकता है।

हमें अपने व्यक्तिगत स्तर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ खड़ा होना होगा। हमें ईमानदारी से काम करना और संसाधनों के दुरुपयोग से बचना होगा। हमारा राष्ट्र केवल ईमानदार लोगों के साथ ही समृद्धि प्राप्त कर सकता है। भ्रष्टाचार का ख़ात्मा होने से दुनिया के लोगों को बहुमूल्य संसाधन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

"मजबूत निगरानी संस्थानों के बिना, दण्ड से मुक्ति ही वह आधार बन जाती है जिस पर भ्रष्टाचार की प्रणालियाँ निर्मित होती हैं और यदि दंडमुक्ति को नष्ट नहीं किया गया, तो भ्रष्टाचार को समाप्त करने के सभी प्रयास व्यर्थ हैं"

"Without strong watchdog institutions, impunity becomes the very foundation upon which systems of corruption are built"

और अंत में, सबसे महत्वपूर्ण बात, यदि आप भ्रष्ट गतिविधि से अवगत हैं, चाहे वह व्यवसाय में हो या सरकार में, तो बोलें। हममें से जिनके पास आवाज है, उन्हें उन लोगों की ओर से बोलना चाहिए जो अक्सर चुप रहते हैं। इस उद्देश्य के लिए सरकारों को किसी भी पहलू से संबंधित कोई भी प्रश्न, चिंता या रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक एथिक्स हेल्पलाइन बनानी चाहिए। हम सब भ्रष्टाचार जैसी बड़ी समस्या के समाधान का हिस्सा बन सकते हैं। हर किसी के लिए एक बेहतर दुनिया संभव है।

"लोगों को जागरूक होना चाहिए कि वे एक भ्रष्ट व्यवस्था को बदल सकते हैं"

निगम के अधीनस्थ वेअरहाउस – एक परिचय

भंडारण भारती पत्रिका के अंक 80 में सेंट्रल वेअरहाउस, अहमदाबाद–I, सेंट्रल वेअरहाउस, लखनऊ–I का परिचय प्रकाशित किया गया था। इस अंक में सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा यूनिट–I, सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा यूनिट–II, सेंट्रल वेअरहाउस जंस्कार, एवं सेंट्रल वेअरहाउस, द्रास का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा यूनिट–I

वर्ष 1963 में स्थापित सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–I केन्द्रीय भण्डारण निगम, बेंगलुरु रीजन के अधीनस्थ वेअरहाउस है। यह हमनाबाद रिंग रोड से 1 किमी और गुलबर्गा जंक्शन एवं गुलबर्गा बस स्टैंड से 5 किमी की दूरी पर है। 3.55 एकड़ में फैले हुए इस वेअरहाउस की भण्डारण क्षमता 9780 मीट्रिक टन है। सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–I का कवर्ड एरिया 5825 वर्गमीटर/62679 वर्गफुट है। केंद्र परिसर में डामर रोड है और गोदाम की छत गैलवेल्यूम शीट एवं फ्लोरिंग कंक्रीट की है। यह आईएसओ 9001:2015, आईएसओ 14001: 2015 – आईएसओ 45001:2018 से आईएसओ सर्टिफाइड है और एफएसएसएआई और डब्ल्यूडीआरए लाइसेंस प्राप्त है। उक्त केंद्र में आपातकालीन स्थिति अर्थात आग आदि से निपटने के लिए पर्याप्त व्यवस्था है। इस केंद्र पर लगभग 16 सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं।

सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा यूनिट–II

सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–II, केन्द्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु के अधीनस्थ केंद्र है जो रेलवे क्रॉसिंग के पास हीरापुर, गुलबर्गा में स्थित है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग **एनएच 50** से 1.1 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह केंद्र कलबुर्गी रेलवे स्टेशन और कलबुर्गी बस स्टैंड के निकटस्थ है जिसकी केंद्र से दूरी क्रमशः 4.5. किमी और 2.8 किमी है। 24.04 एकड़ में फैले हुए सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–II की स्थापना वर्ष 1993 में हुई थी। इसकी कुल भण्डारण क्षमता 84369 मीट्रिक टन (47046 वर्ग मीटर/506398 वर्ग फुट) है।

सेंट्रल वेअरहाउस, गुलबर्गा–II में 60 मीट्रिक टन की क्षमता के प्रत्येक दो (02) इलेक्ट्रॉनिक लॉरी वेब्रिज (विद्युत चालित धर्मकांटा/तुलासेतु) की सुविधा उपलब्ध है और केंद्र समस्त आधारभूत एवं आवश्यक सुविधाओं से युक्त है। सुरक्षा की दृष्टि से संपूर्ण केंद्र एवं परिसर सीसीटीवी सुविधा से युक्त है जिसे सीसीटीवी लाइव–फीड के माध्यम से किसी भी समय देखा जा सकता है।

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, भारतीय खाद्य निगम, रिलायंस और ओलम इस केंद्र के सम्मानित जमाकर्ताओं में से एक हैं।

सेंट्रल वेअरहाउस – जंस्कार

केंद्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के अधीनस्थ सेंट्रल वेअरहाउस, जंस्कार भारतीय सेना के कैंप के समीप शीला रोड पर स्थित है तथा यह वैज्ञानिक भण्डारण की सभी औपचारिकताओं से परिपूर्ण है। यह वेअरहाउस अक्तूबर, 2023 से अस्तित्व में आया। इस वेअरहाउस की मुख्य विशेषताएं, उपलब्ध सेवाएँ एवं सुविधाएँ निम्न हैं:–

1. यह वेअरहाउस पदुम शहर के बाहरी इलाके में शीला जलप्रपात की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित है, जो भारत के लद्दाख के कारगिल जिले में जंस्कार तहसील का मुख्य शहर और प्रशासनिक केंद्र है।
2. केंद्र में वैज्ञानिक भण्डारण हेतु 4176 मी.टन. (3340 मी.टन. पूर्व संशोधित) क्षमता उपलब्ध है, जो कि भारतीय खाद्य निगम के उपयोग के लिए बनाया गया है।
3. यह वेअरहाउस आई.एस.ओ. 9001:2023 आई.एस.ओ. 14001:2005 एवं ओ.एच.एस.ए.एस. 180005:2007 द्वारा प्रमाणित है।

4. वेअरहाउस में सुरक्षा के लिए डी.जी.आर. सुरक्षा प्रदान की गई है।
5. यह वेअरहाउस में अग्निशमन उपकरण मौजूद हैं।
6. वेअरहाउस में गोदाम/परिसर साफ–सुथरे एवं पर्यावरण के अनुरूप हैं।
7. वेअरहाउस में स्वच्छ जन–सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
8. वेअरहाउस भण्डारण विकास एवं विनियामक प्राधिकरण के अंतर्गत पंजीकृत हैं।
9. वेअरहाउस में जल्द ही 60 मी.टन. का इलेक्ट्रॉनिक धर्मकांटा लगाया जाएगा।
10. वेअरहाउस को जल्द ही सी.सी.टी.वी. निगरानी प्रणाली से युक्त किया जाएगा।
11. इस वेअरहाउस द्वारा सभी कीट नियंत्रण सेवाएँ भी उचित दर पर उपलब्ध कराई जाती हैं।
12. इस वेअरहाउस पर ऑनलाइन लेनदेन करने तथा वेअरहाउस के सुगम संचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) संचालित है।

सेंट्रल वेअरहाउस, जंस्कार का संक्षिप्त विवरण

1. सामान्य पक्ष

- निर्माण वर्ष : अक्तूबर, 2023
- कुल क्षमता : 4176 मी.टन. (3340 मी.टन. पूर्व संशोधित)
- कवर एरिया : 4176 मी.टन.
- गोदामों की संख्या : 01

सेंट्रल वेअरहाउस – द्रास

केंद्रीय भण्डारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ के अधीनस्थ सेंट्रल वेअरहाउस, द्रास भारतीय सेना के कैंप के समीप कारगिल रोड पर स्थित है तथा यह वैज्ञानिक भण्डारण की सभी औपचारिकताओं से परिपूर्ण है। यह वेअरहाउस 30 अगस्त, 2023 से अस्तित्व में आया। इस वेअरहाउस की मुख्य विशेषताएं, उपलब्ध सेवाएँ एवं सुविधाएँ निम्न हैं:–

1. यह वेअरहाउस द्रास शहर के बाहरी इलाके में कारगिल की ओर जाने वाली सड़क पर स्थित है, जो भारत के लद्दाख के कारगिल जिले में द्रास तहसील का मुख्य शहर और प्रशासनिक केंद्र है ।
2. केंद्र में वैज्ञानिक भण्डारण हेतु 4176 मी.टन. (3340 मी.टन. पूर्व संशोधित) क्षमता उपलब्ध है, जो भारतीय खाद्य निगम के उपयोग के लिए बनाया गया है।
3. यह भंडारगृह आई.एस.ओ. 9001:2023 आई.एस.ओ. 14001:2005 एवं ओ.एच.एस.ए.एस. 180005:2007 द्वारा प्रमाणित है।
4. वेअरहाउस में सुरक्षा के लिए डी.जी.आर. सुरक्षा प्रदान की गई है।

5. यह वेअरहाउस में अग्निशमन उपकरण मौजूद हैं।
6. वेअरहाउस में गोदाम/परिसर साफ–सुथरे एवं पर्यावरण के अनुरूप है ।
7. वेअरहाउस में स्वच्छ जन–सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
8. वेअरहाउस भण्डारण विकास एवं विनियामक प्राधिकरण के अंतर्गत पंजीकृत हैं।
9. वेअरहाउस में जल्द ही 60 मी.टन. का इलेक्ट्रॉनिक धर्म कांटा लगाया जाएगा।
10. वेअरहाउस को जल्द ही सी.सी.टी.वी. निगरानी प्रणाली से युक्त किया जाएगा।
11. इस वेअरहाउस द्वारा सभी कीट नियंत्रण सेवाएँ भी उचित दर पर उपलब्ध कराई जाती हैं।
12 इस वेअरहाउस पर ऑनलाइन लेनदेन करने तथा वेअरहाउस के सुगम संचालन हेतु वेअरहाउस प्रबंधन प्रणाली (डब्ल्यू.एम.एस.) संचालित है।

सेंट्रल वेअरहाउस, द्रास का संक्षिप्त विवरण

2. सामान्य पक्ष

- निर्माण वर्ष : 30 अगस्त, 2023
- कुल क्षमता : 4176 मी.टन. (3340 मी.टन. पूर्व संशोधित)
- कवर एरिया : 4176 मी.टन.
- गोदामों की संख्या : 01

रचनाकार कृपया ध्यान दें

1. कृपया प्रकाशनार्थ सामग्री या लेख निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग के ई–मेलः rajbhasha.cwc@cewacor.nic.in पर अथवा डाक द्वारा भेजें।
2. लेख के साथ इस आशय की घोषणा होनी चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक रचना है।
3. रचना भेजते समय कृपया इस बात का ख्याल रखें वह स्तरीय हो तथा समाज, साहित्य एवं संस्कृति से जुड़ी हुई हों।
4. भंडारण से संबंधित रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रकाशित रचनाओं पर पुरस्कार/मानदेय प्रदान किया जाता है।
5. आप सभी रचनाएं निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं–

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), केंद्रीय भंडारण निगम,
निगमित कार्यालय, 4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, हौजखास, नई दिल्ली–110016

मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस)

कार्यालय स्वचालित भविष्य (automated future) की ओर...

नम्रता बजाज*

आज के इस डिजिटल युग में प्रत्येक संगठन यही चाहता है कि उसकी कार्यप्रणाली कुशल और प्रभावी बने। मानव संसाधन (एचआर) विभाग भी इससे अछूता नहीं है। कर्मचारियों की प्रोफाइल का प्रबंधन एवं उनका डाटा मेनटेन और विभिन्न एचआर कार्यों को निष्पादित करना कोई आसान कार्य नहीं है। ऐसे में मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

सबसे पहले तो हम बात करेंगे कि एचआरएमएस है क्या? वास्तव में, एचआरएमएस सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग (application) है जो कर्मचारियों से जुड़े कार्यों को स्वचालित और प्रबंधित करने में किसी भी संगठन की सहायता करता है। यह कर्मचारी के सेवाकाल से संबद्ध जानकारियों के प्रबंधन के लिए सेंट्रलाइज़्ड प्लेटफार्म प्रदान करता है, जिसमें भर्ती और कर्मचारी नियुक्ति से लेकर वेतन और परफॉर्मेंस मैनेजमेंट तक सब कुछ सम्मिलित होता है। जो भी संगठन अपनी एचआर प्रक्रियाओं को दक्ष और बेहतर बनाना चाहता है, वह एचआरएमएस का लाभ लेता है।

एचआरएमएस से अनेक मानव संसाधन कार्य स्वचालित किए जा सकते हैं, जिससे समय की बचत होती है और मानवीय त्रुटियों की संभावना कम होती है। यह कर्मचारी डेटा की सेंट्रलाइज़्ड रिपोज़िटरी तैयार करता है, जिससे मानव संसाधन कार्मिकों को तैयार डेटा मिल जाता है और इससे बेहतर निर्णय लेने में सहायता मिलती है। इससे कागजी कार्रवाई कम होने के साथ–साथ लागत कम करने में भी मदद मिलती है। यह कर्मचारियों और प्रबंधकों के बीच संपर्क को बेहतर करता है जिससे कर्मचारी स्व–सेवा पोर्टल के माध्यम से अपनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और एचआरएमएस में उपलब्ध विभिन्न मोड्यूल्स में अपनी आवश्यकता के आधार पर प्रबंधन को अपना अनुरोध भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली संपूर्ण मानवशक्ति प्रबंधन को कवर करती है। इसमें सुव्यवस्थित भर्ती और नियुक्ति, कर्मचारी निष्पादन प्रबंधन और ट्रैकिंग, वित्त और पेरोल प्रबंधन आदि शामिल हैं। तो, आइए मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (HRMS) की विशेषताओं के बारे में जानें।

- कर्मचारी सूचना प्रबंधन – मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है–कर्मचारी सूचना प्रबंधन प्रणाली, जिसमें कर्मचारियों के व्यक्तिगत डेटा, कार्यकाल, वेतन, छुट्टी अनुरोध, कर और ऋण की जानकारी और अन्य प्रासंगिक डेटा आदि को एकत्रित एवं मेनटेन किया जाता है।
- पेरोल प्रबंधन – पेरोल सिस्टम एचआरएमएस की क्लाउड–आधारित सुविधा है जो कार्यस्थल में संपूर्ण पेरोल प्रक्रिया को एकीकृत, प्रबंधित और स्वचालित करती है। अपग्रेडिड पेरोल प्रक्रिया के साथ पेरोल और ऋण की गणना की जा सकती है तथा कर एवं नीतियों का विश्लेषण किया जा सकता है। साथ ही, स्वतः भुगतान पर्ची तैयार होने से कर्मचारी डेटाबेस की सुरक्षा बनाए रखने में भी मदद मिलती है।
- समय एवं उपस्थिति प्रबंधन – एचआरएमएस में समय और उपस्थिति प्रबंधन प्रणालियाँ मानव संसाधन प्रक्रियाओं और समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस सॉफ्टवेयर से नियोक्ता कर्मचारियों की सटीक उपस्थिति जैसे–उनके लॉग–इन और लॉग–आउट समय, अवकाश और छुट्टी आदि को ट्रैक कर सकते हैं।

*सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा/एचआरएमएस), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

केंद्रीय भंडारण निगम में भी डिजिटाइजेशन की दिशा में आगे बढ़ने एवं प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने तथा सेवा नियमों, मौजूदा मानव संसाधन नीतियों और प्रथाओं के अनुसार मानव संसाधन प्रक्रिया को स्वचालित करने के उद्देश्य से वर्ष 2018 में कुछ मोड्यूल्स जैसे–छुट्टी, एलटीसी, एनओसी, संपत्ति सूचना आदि अनुमोदन, डेटा अपडेशन से संबंधित (पदोन्नति, सेवानिवृत्ति गतिविधियाँ) और वित्तीय निपटान (वेतन, पेंशन, टीए, चिकित्सा प्रतिपूर्ति, कर्मचारी सेवा रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण आदि) के लिए ऑन–लाइन रियल टाइम आधार पर मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (HRMS) की सुविधा प्रदान की गई जिससे कार्यों में न केवल दक्षता एवं पारदर्शिता आई अपितु सभी कार्यों में सुविधा हुई और साथ ही मानव संसाधन के कार्यान्वयन में भी एकरूपता आई। इसके बाद तो धीरे–धीरे अनेक अन्य मोड्यूल्स जैसे–एनओसी, छुट्टी एवं एलटीसी नकदीकरण, प्रमोशन आर्डर, ट्रैवल डैस्क, वर्चुअल हायरिंग मोड्यूल, ईएसीआर आदि भी इसमें सम्मिलित किए गए।

आज निगम की मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस) में विभिन्न मोड्यूल्स हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण विषय **समय और उपस्थिति प्रबंधन** (Time and attendance management) पर हम इस अंक में बात करेंगे और इसके सही प्रयोग के बारे में चर्चा करेंगे।

उपस्थिति मोड्यूल के कार्यान्वयन के बाद निगम के क्षेत्रीय कार्यालयों और निगमित कार्यालय में किसी भी कर्मचारी का वेतन बिना उसकी गलती के न कटे, यह सुनिश्चित करने के लिए उपस्थिति की स्थिति की निगरानी नियमित रूप से करना अति आवश्यक है।

इसके लिए किसी भी कार्मिक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है:

(क) आधे दिन की छुट्टी के लिए आवेदन करने से पहले, दैनिक उपस्थिति (Daily Attendance) टैब पर दिए गए विवरण को अवश्य देखना चाहिए जिससे भविष्य में इससे संबंधित कोई भी डेटा सुधार कराने की स्थिति न आए।

(ख) कार्मिक को किसी विशिष्ट माह की उपस्थिति साइकल के लिए मासिक कैलेंडर की जांच करके यह सुनिश्चित करना चाहिए कि रिकॉर्ड में कहीं भी A (अनुपस्थित) चिह्नित नहीं है। इससे यह जानने में मदद मिलेगी कि वेतन में कोई कटौती तो नहीं है।

(ग) साथ ही, कार्मिक को किसी विशिष्ट वर्ष की उपस्थिति साइकल के लिए वार्षिक कैलेंडर की जांच करने की भी सलाह दी जाती है जिससे यह सुनिश्चित हो कि रिकॉर्ड में कहीं भी A (अनुपस्थित) चिह्नित नहीं है। इससे यह जानने में मदद मिलेगी कि वेतन में कोई कटौती तो नहीं है।

(घ) सेलरी रिवर्सल के मामले में, दैनिक उपस्थिति टैब में दो प्रविष्टियां दी गई होंगी। एक प्रविष्टि छुट्टी के प्रकार को अनुपस्थित के रूप में दर्शाएगी, जबकि दूसरी प्रविष्टि छुट्टी के प्रकार को ऑफिशियल ड्यूटी। टूर या किसी अन्य लागू प्रकार के रूप में दर्शाएगी। जैसे–(1/2 Official Duty, 1/2 Casual Leave)

(ङ) यदि आपको उपस्थिति डेटा में कोई विसंगति दिखती है, तो इसके लिए आप हेल्पडेस्क पोर्टल के माध्यम से उस महीने की 16 तारीख को या उससे पहले टिकट प्रस्तुत करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वेंडर उसी वेतन साइकल में आपकी समस्या/मुद्दे का समाधान कर सके। 16 तारीख के बाद प्रस्तुत की गई टिकट पर समाधान होने के बाद आपकी उपस्थिति अगले माह के उपस्थिति साइकल में ही रेगुलराइज हो पाएगी।

अंततः, यही कहना चाहूंगी कि एचआरएमएस कर्मचारियों और नियोक्ताओं दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। यह संगठन का समय और संसाधनों को बचाने में तो मदद करता ही है, वहीं बेहतर निर्णय लेने में भी सक्षम बनाता है जिससे कार्यस्थल में संतुष्टि और उत्पादकता में वृद्धि होती है। भविष्य में, एचआरएमएस प्रौद्योगिकी में निरंतर विकास होने के साथ ही इसके और अधिक परिष्कृत और बहुआयामी बनने की भी उम्मीद है।

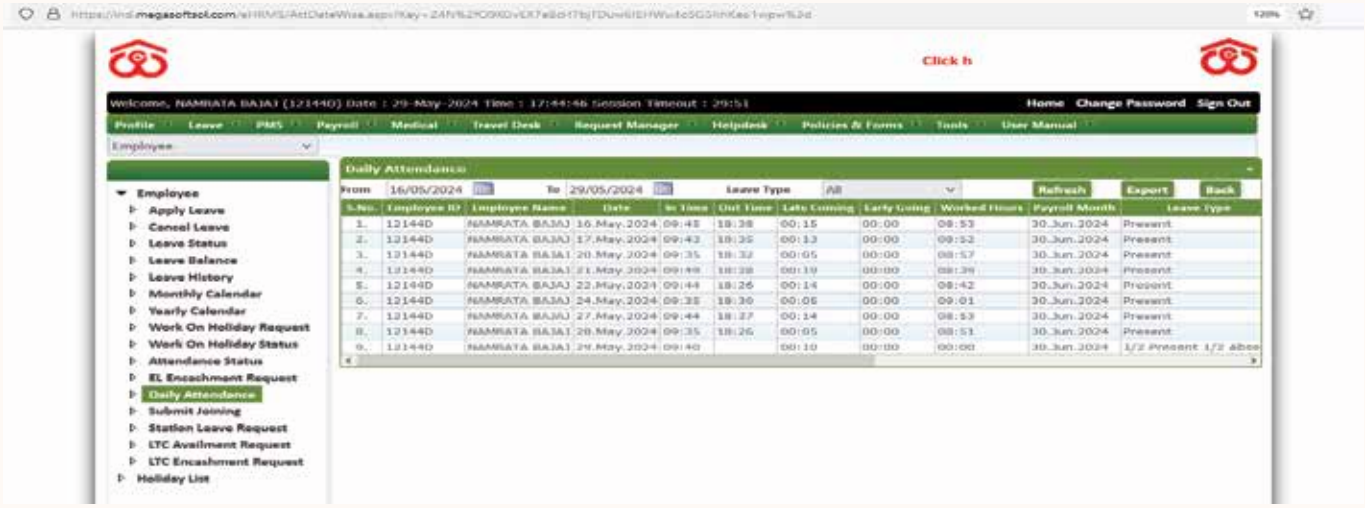

निगम की बिल ट्रैकिंग प्रणाली

बिल ट्रैकिंग सिस्टम (बीटीएस) को निगमित कार्यालय और निगम के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में लागू किया गया है ताकि एक मंच के माध्यम से बिलों की मूवमेंट तथा उनके भुगतान की स्थिति को ऑनलाइन ट्रैक किया जा सके। यह थर्ड पार्टी भुगतान पर सीवीसी दिशा–निर्देशों को सुनिश्चित करने के लिए निगम को सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, बीटीएस विक्रेताओं की सैन्ट्रल रिपोज़िटरी तैयार करने की भी सुविधा देता है।

घर छोटा हो गया है

सन्तोष *

स्नातक उत्तीर्ण करने के बाद, अतुल ने न जाने अभी तक कितनी प्रतियोगी परीक्षा दी होगी, पर हर बार उसका अभियान या तो मुख्य परीक्षा तक पहुँच पाता या प्रारम्भिक परीक्षा में ही नौकरी पाने का सफर दम तोड़ देता। इसी कड़ी में एक और मुख्य परीक्षा देकर, अतुल परीक्षा केंद्र से मुस्कुराता चेहरा लेकर निकला और ट्रेन पकड़ने की जल्दबाजी में ऑटो के आगे वाली सीट पर बेमुश्किल तरीके से बैठने की कोशिश करने लगा, जिस पर पहले से ही तीन लोग ड्राइवर को जेड (Z) सुरक्षा देने की मुद्रा में बैठे हुए थे। तभी फोन की झंझनाहट ने अतुल को किसी के कॉल आने का संकेत दिया। परंतु उसके दोनों हाथ, उसके शरीर को वो मजबूती दिए हुए थे, जिसके कारण ही वह अपने गोल–मटोल शरीर को मुश्किल से 3–4 इंच की सीट (या सीट का स्पर्श मात्र) पर बैठाए हुए या यू कहिये कि टिकाए हुए था।

10 मिनट के रोमांचक सफर से उतरने के बाद, अतुल ने फोन निकालकर मम्मी के आए हुए मिस कॉल पर कॉल बैक किया।

अतुल की मम्मीः– परीक्षा कैसा हुआ?

अतुलः– अच्छा हुआ, शायद इंटरव्यू का बुलावा आ जाए।

मम्मीः– माता रानी की कृपा हैं। ट्रेन में बैठने से पहले, कुछ खाना खा लेना।

अतुलः– हाँ, ठीक। ट्रेन में बैठ के बात करता हूँ।

अतुल फोन काट कर, अपने आरक्षित स्लीपर क्लास सीट पर ज्यों ही बैठा कि ट्रेन चल पड़ी और महज 4 घंटे की यात्रा के बाद वो अपने घर पहुँच गया।

कुछ ही दिनों के बाद, अतुल को इंटरव्यू के लिए बुलावा भी आ गया और अपनी कठिन मेहनत के बाद उसका चयन एक राष्ट्रीय बैंक में परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में हो गया। उसको अपनी जॉइनिंग के लिए गुरुग्राम स्थित बैंक के ट्रेनिंग संस्थान में 10 दिनों के बाद जाना था।

ट्रेनिंग संस्थान से प्रारम्भिक प्रशिक्षण लेने के पश्चात जब अतुल ने पोस्टिंग के स्थान का लिफाफा खोला तो पाया कि उसकी पोस्टिंग दक्षिण भारत के एक छोटे से गाँव में कर दी गई है। जहां से उसे अपने घर आने में ट्रेन से लगभग 35–40 घण्टे लग जाएगा। उसने अपनी पोस्टिंग बदलने का काफी यत्न किया, परंतु सभी ने बताया कि यह विभाग के पॉलिसी के विपरीत है और शायद नहीं बदला जा सकता है।

बेहद भारी मन से अतुल ने वेमगल (बेंगलुरु से 85 किमी दूर एक छोटा–सा गाँव) जा कर अपने नौकरी जीवन की शुरुआत की। चूंकि उसके पिता फौज में थे और अतुल अपने माता–पिता की इकलौती संतान था, इसलिए घर पर उसकी माँ की देखभाल करने वाला कोई नहीं था। इसी कारण अतुल जल्द से जल्द अपने गृह राज्य स्थानांतरण चाहता था, जिसके लिए उसने अपने क्षेत्रीय कार्यालय, सर्कल कार्यालय कई आवेदन दिए परंतु, कहीं से कोई सकारात्मक जवाब नहीं आया। फिर लगभग एक साल बाद, एक दिन, बैंक मुख्यालय से उप–महाप्रबंधक की टीम, अतुल के बैंक शाखा पर किसी पुराने केस के सिलसिले में आई तो, उसने काफी झिझक के बाद अपने स्थानांतरण की बात उप–महाप्रबंधक को बताई और अपने घर की समस्या को को विस्तृत रूप से समझाया।

*भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जिसके बाद उन्होंने, अतुल को एक नया आवेदन लिखने का सुझाव दिया जिसके कुछ दिन बाद ही, अतुल के स्थानांतरण का कार्यालय आदेश आ गया और उसका स्थानांतरण उसके घर से महज 20 किमी की दूरी वाली शाखा में कर दिया गया।

अतुल ने एक सप्ताह के बाद ही, अपने नई शाखा में ज्वॉइन भी कर लिया। ये वही सारी दवाइयां थी जिससे अतुल की मम्मी की तबीयत में मामूली सुधार हो रहा था, पर अब अतुल के मात्र आ जाने से, वही सारी दवाइयाँ संजीवनी बूटी का काम करने लगीं और उनका स्वास्थ्य काफी हद तक ठीक होने लगा।

अब अतुल की मम्मी ने उसकी शादी की बात शुरू कर दी और अगले लग्न में ही उसका विवाह ऋतु से हो गया। वैसे तो ऋतु उसी जनपद के दूसरे क्षेत्र की थी, परंतु उसकी शिक्षा, दिल्ली के आवासीय स्कूल में हुई थी जिसके कारण उसके ख़्यालात में आधुनिकता बहुतायत मात्रा में झलकती थी। शादी से पहले ही, अतुल ने होम लोन लेकर घर का नवीनीकरण करवा लिया था और दो कमरे के घर को, दो मंजिल का बनवा दिया था। एक वर्ष बाद ही अतुल के पिता भी रिटायर होकर घर आ गए और अब नीचे के मंजिल पर माता–पिता रहते थे और ऊपरी मंजिल पर अतुल–ऋतु।

कुछ माह बाद ही, ऋतु ने अतुल को बोला कि उसका मन यहाँ नहीं लग रहा और उसे अपना कैरियर बनाने के लिए दिल्ली जाना चाहिए। ऋतु ने फैशन डिजाइनिंग का कोर्स भी किया हुआ था। यह बात सुनते ही, अतुल को एक धक्का–सा लगा, क्योंकि, ऋतु के दिल्ली जाने का मतलब हैं कि उसे भी अपना तबादला दिल्ली करवाना होगा।

अब इस बात को लेकर आए दिन दोनों के बीच झगड़े होने लगे। अतुल अपने माता–पिता को छोड़कर जाने को इच्छुक नहीं था। साथ ही उसे समझ नहीं आ रहा था कि अपने बॉस को कैसे बोलेगा कि उसका स्थानांतरण यहाँ से दिल्ली कर दिया जाए जबकि सबको पता है कि किन परिस्थितियों में अतुल का ट्रान्सफर उसके घर के पास हुआ है।

काफी दिनों तक चलने वाले मनमुटाव के बाद, एक दिन अतुल ने अपने माता–पिता से ऋतु के दिल्ली जाने की बात पर चर्चा की। सब कुछ सुनने के बाद, अतुल के पिता ने जाने को कह दिया, और बोला कि, यहाँ की चिंता ना करे, और कुछ जरूरी होगा तो, बस 12 घण्टे की ही तो दूरी है यहाँ से दिल्ली की। पर अतुल की माँ थोड़ी उदास हो गई, उसे लगने लगा कि ऋतु शायद उसके साथ एडजस्ट नहीं कर पा रही या उसने ऋतु से कुछ बुरा बर्ताव किया है। वैसे तो घर का काम करने के लिए दो नौकर थे ही, जो अतुल की शादी से पहले घर का सारा काम करते थे, पर शादी के बाद, अतुल की माँ ने खाना बनाने की जिम्मेदारी ऋतु को ही दी थी। यह सब बात सोच कर वो एक बार ऋतु से बात करने, बड़ी मुश्किल से सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपरी मंजिल पर गईं।

वह कमरे तक पहुँची ही थी कि, उसे लगा कि ऋतु किसी से वीडियो कॉल पर बात कर रही है।

(कमरे के अंदर से)

ऋतु– देखो ना अदिति (ऋतु की दिल्ली कॉलेज की सहेली), मैं कितने दिनों से अतुल को कह रही हूँ दिल्ली तबादला कराने को, पर वह सुन ही नहीं रहा। वो तो सास–ससुर की सेवा में ही रहना चाहता है। मुझे भी तो करियर बनाना है अपना।

अदिति– ऋतु !, तुझे तो पता है कि मेरा कोई भाई नहीं है, और बड़ी दीदी की शादी जामनगर में हुई है, जिससे मेरे मम्मी–पापा एकदम अकेले हो गए हैं। मेरे सास–ससुर भी रिटायर होने के बाद दिन भर घर पर ही रहते हैं। तेरी तरह ही, मेरा मायका और ससुराल एक ही शहर में है। मेरे पति तो कोई बात करने के लिए कभी अपने माँ के पास बैठते भी नहीं। मैं ही हमेशा अपनी सास से बात करती रहती हूँ। मैं भी चाहूँ तो उनको बोल कर दिल्ली चली जाऊं, और वहीं पर अपने माँ–पापा को अपने

पास रखूँ जैसे आकांक्षा (ऋतु और अदिति की गहरी दोस्त) ने किया है। पर, मेरा मानना है कि घर जितना छोटा होता है, दिक्कत उतनी ही बढ़ती है। मैं तो अपनी सास को हमेशा कहती हूँ कि मेरा घर बड़ा हो गया है, एक मायका और एक ससुराल। और जहां तक रही करियर की बात तो आज कल के ऑनलाइन जमाने में वर्क फ्रॉम होम के जरिए भी नौकरी करना मुश्किल नहीं है।

इसके बाद आवाज आनी बंद हो गई, शायद ऋतु ने इस प्रवचन रूपी सलाह से झुंझलाकर फोन काट दिया हो या मोबाइल नेटवर्क की कोई दिक्कत हो। अतुल की माँ ने कमरे के अंदर जाना उचित ना समझा, और चुपचाप नीचे अपने कमरे में आ गई।

चूंकि सुबह अतुल के पिता ने अतुल को दिल्ली जाने की अनुमति दे ही दी थी तो, अतुल ने काफी सोच–विचार कर अपने दिल्ली तबादले के लिए एक आवेदन लिखा और अपने बॉस के चैम्बर में दाखिल हुआ।

अतुल– (चुपचाप, आवेदन को टेबल पर रख दिया)।

बॉस– ये क्या है?

अतुल– सर, मेरा दिल्ली स्थानांतरण का आवेदन है, कृपया इसे क्षेत्रीय कार्यालय अग्रेषित कर दीजिये।

बॉस– (आवेदन पढ़ने के बाद, एक अचंभित नजर से अतुल की तरफ देखते हुए) तुमने अपने दिल्ली स्थानांतरण का कारण क्या लिखा है, इस आवेदन में?

अतुल– सर, आप खुद ही पढ़ लीजिए।

बॉस– नहीं। जब तक तुम खुद नहीं बोलोगे, मैं इसे अग्रेषित नहीं करूंगा।

(लंबी गहरी सांस लेकर, और रुद्र गले से)

अतुल– (बॉस से नजर मिलाने की हिम्मत ना करते हुए, सिर झुका के बोला) मेरा घर अब छोटा हो गया है। (चश्मे को थोड़ा उठा के दोनों आँखों के नम कोनों को पोंछता हुआ बाहर आ जाता है।)

आँखें

अशोक कुमार *

आँखें ईश्वर का दिया हुआ वरदान हैं,
पांच इन्द्रियों में से एक का नाम हैं
आँखें दिखाती हैं दुनिया के नजारे,
धरती, आकाश ,सूरज, चाँद सितारे

जंगल, पहाड़, सागर, रेगिस्तान की छटा निराली,
अनेकों तरह के लोग स्थान, पेड़ और हरियाली
एक इंसान का दूसरे से परिचय कराती हैं,
बिना बोले ही अपनी बात कह जाती है

जब किसी की नहीं मैच होती नजर और वाणी,
आंखें ही बतलाती हैं असली कहानी
आंख प्रकट करती है अनेकों तरह के भाव,
प्रेम, घृणा, खुशी, कमजोरी, हिम्मत और तनाव

सुख, दुःख, अहंकार और अभिमान,
सहानुभूति, क्रोध, दया और सम्मान
जब किसी को होती है कोई परेशानी,
आंखें कर देती हैं उसकी बयानी

अधिक सुख-दुःख जब कोई सहन नहीं कर पाता,
आंसू बनकर आँख से है निकल जाता
जब होते हैं रंगमंच के नाटक,
आंखें हो जाती हैं चुलबुली और नटखट

नृत्य नाटिकाओं में भाव भंगिमाएं ढेर सारी,
प्रकट करने की होती आँखों की जिम्मेदारी
इंसान जब छल, कपट या झूठ बोलता है,
आँखों से सच्चाई का अंदाजा लगता है

निश्छल और सौम्य आँखें सबको भाती हैं,
ये इंसान के व्यक्तित्व की पहचान कराती हैं
आँखों का जीवन में बहुत बड़ा योगदान है,
इनका उचित उपयोग और देखभाल जरूरी काम है

जब कोई लगाता है ईश्वर का ध्यान,
अपने अंदर की आँखों से देखता है इंसान

*सेवानिवृत्त प्रबंधक (सा.), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम में "पारंगत" प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा पारंगत पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण आरंभ किया गया है। इसी क्रम में केंद्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय में हिंदी में कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण के लिए नामांकित किया गया है।

केंद्रीय भंडारण निगम के निगमित कार्यालय में पारंगत पाठ्यक्रम की कक्षाएं एकांतर दिवस पर आयोजित की जा रही हैं, जिसमें कुल 15 कार्मिक प्रशिक्षण ले रहे हैं। निगमित कार्यालय में यह प्रशिक्षण जनवरी से मई 2024 के दौरान आयोजित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि निगमित कार्यालय में पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम यहां दूसरी बार आयोजित किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण के संकाय के रूप में केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की हिंदी शिक्षण योजना से हिंदी प्राध्यापक श्रीमती किरण लता यादव आमंत्रित की गई हैं।

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु में भी पारंगत की कक्षाएं आयोजित की जा रही हैं जिसका शुभारंभ दिनांक 04.01.2024 को किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की कक्षाएं सप्ताह में दो दिन (प्रत्येक कक्षा 1.30 घंटे की अवधि) क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में आयोजित की जा रहीं हैं जिसमें निगम के 10 कार्मिक और कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बेंगलुरु के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस कार्यक्रम की संकाय सदस्या श्रीमती जेयसी फर्नांडीज, सहायक निदेशक (भाषा), हिंदी शिक्षण योजना, बेंगलुरु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग हैं।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में उल्लेखनीय है कि पारंगत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने पर राजभाषा विभाग द्वारा प्रोत्साहन राशि प्रदान किए जाने का भी प्रावधान किया गया है।

*राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से

निगम की रेल परिवहन सेवाएं

पीयूष सरोज*

लॉजिस्टिक्स परिदृश्य में क्रांति लाने के लिए एक कदम उठाते हुए केंद्रीय भंडारण निगम ने अपनी अत्याधुनिक माल ढुलाई और कंटेनर रेल परिचालन सेवाओं की शुरुआत की घोषणा की है। इस अभूतपूर्व पहल का उद्देश्य कार्गो आवाजाही के क्षेत्र में कुशल, लागत प्रभावी और टिकाऊ परिवहन समाधानों की बढ़ती मांग को पूरा करना है।

वैश्वीकरण के कारण व्यापार की मात्रा में तेजी से वृद्धि हो रही है, परिवहन के पारंपरिक तरीकों को अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सड़क की भीड़, ईंधन की बढ़ती लागत और पर्यावरण संबंधी चिंताओं ने नवीन विकल्पों की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया है। केंद्रीय भंडारण निगम की माल ढुलाई और कंटेनर रेल संचालन सेवाओं की शुरूआत इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर समय पर प्रतिक्रिया के रूप में आती हैं।

इस पहल में सबसे आगे कार्गो परिवहन से जुड़ी लागत को कम करने की प्रतिबद्धता है। रेल नेटवर्क की दक्षता का लाभ उठाकर, केंद्रीय भंडारण निगम का लक्ष्य प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण की पेशकश करना है जो विभिन्न उद्योगों में व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण बचत में तब्दील हो। चूंकि रेल परिवहन स्वाभाविक रूप से अधिक ईंधन–कुशल है और सड़क परिवहन की तुलना में भीड़भाड़ की संभावना कम है अतः ग्राहक परिचालन खर्चों में पर्याप्त कटौती की उम्मीद कर सकते हैं।

समय दक्षता केंद्रीय भंडारण निगम की रेल परिचालन सेवाओं का एक महत्वपूर्ण पहलू है। समर्पित माल गलियारों और सुव्यवस्थित लॉजिस्टिक्स प्रक्रियाओं के साथ, शिपमेंट को तेजी से और निर्बाध रूप से ले जाया जा सकता है, जिससे पारगमन समय कम हो जाता है और माल की समय पर डिलीवरी सुनिश्चित होती है। यह बढ़ी हुई दक्षता न केवल उत्पादकता को बढ़ाती है, बल्कि व्यवसायों को सीमित समय–सीमा में पूरा करने और बाजार के अवसरों को भुनाने में भी सक्षम बनाती है।

इसके अलावा, केंद्रीय भंडारण निगम की रेल परिचालन सेवाएं एक बार में कार्गो आवाजाही की सुविधा प्रदान करेंगी, जिससे कई ट्रांसशिपमेंट की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी और बार–बार हैंडलिंग से जुड़ी क्षति या हानि का जोखिम कम हो जाएगा। इससे न केवल कार्गो की सुरक्षा बढ़ती है बल्कि पारगमन संबंधी देरी और व्यवधान भी कम होते हैं।

लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में सुरक्षा सर्वोपरि है और केंद्रीय भंडारण निगम कार्गो और कर्मियों दोनों की भलाई सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है। कठोर सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करके और अत्याधुनिक तकनीक का लाभ उठाकर केंद्रीय भंडारण निगम की रेल परिचालन सेवाएं पूरी परिवहन प्रक्रिया में सुरक्षा और संरक्षा के उच्चतम मानकों को कायम रखती हैं। लोडिंग और अनलोडिंग से लेकर ट्रांज़िट और डिलीवरी तक, जोखिमों को कम करने और मूल्यवान संपत्तियों की सुरक्षा के लिए हर कदम की सावधानीपूर्वक योजना बनाई और क्रियान्वित की जाती है।

इसके अलावा, केंद्रीय भंडारण निगम की रेल परिचालन सेवाएं तीसरे पक्ष के लॉजिस्टिक्स प्रदाताओं के साथ निर्बाध रूप से एकीकृत होती हैं, जिससे सहयोग और तालमेल की सुविधा मिलती है जो अधिक दक्षता और मूल्य सृजन को बढ़ावा देती है। विश्वसनीय साझेदारों की विशेषज्ञता और संसाधनों का लाभ उठाकर केंद्रीय भंडारण निगम लॉजिस्टिक्स प्रबंधन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है जो संसाधनों का अनुकूलन करता है और परिणामों को अधिकतम करता है।

अंत में, केंद्रीय भंडारण निगम की माल ढुलाई और कंटेनर रेल परिचालन सेवाओं का शुभारंभ लॉजिस्टिक उद्योग के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा। लागत में कमी, समय दक्षता, सुरक्षा वृद्धि और शुरू से अंत तक सेवा वितरण को प्राथमिकता देकर केंद्रीय भंडारण निगम कार्गो परिवहन में उत्कृष्टता के मानकों को फिर से परिभाषित करने के लिए तैयार है।

*भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

साहित्यिकी

सबसे सुंदर लड़की

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, सन् 1912 को मीरापुर, जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इन्हें इनके एक अन्य नाम 'विष्णु दयाल' से भी जाना जाता है। इनके पिता का नाम दुर्गा प्रसाद था, जो धार्मिक विचारधारा वाले व्यक्तित्व के धनी थे। विष्णु प्रभाकर की आरंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई थी। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से ही बी.ए. की डिग्री भी प्राप्त की थी। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गाँधी जी के जीवन आदर्शों से प्रेम के कारण प्रभाकर जी का रुझान कांग्रेस की तरफ हो गया व आजादी के दौर में बजते राजनीतिक बिगुल में उनकी लेखनी का भी एक उद्देश्य बन गया था, जो आजादी के लिए संघर्षरत थी। अपने लेखन के दौर में वे प्रेमचंद, यशपाल और अज्ञेय जैसे महारथियों के सहयात्री भी रहे, किन्तु रचना के क्षेत्र में उनकी अपनी एक अलग पहचान बन चुकी थी। 1931 में 'हिन्दी मिलाप' में पहली कहानी दीवाली के दिन छपने के साथ ही उनके लेखन का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह जीवनपर्यंत निरंतर चलता रहा। नाथूराम शर्मा 'प्रेम' के कहने से वे शरतचन्द्र की जीवनी 'आवारा मसीहा' लिखने के लिए प्रेरित हुए, जिसके लिए वे शरतचन्द्र को जानने के लिये लगभग सभी स्रोतों और जगहों तक गए। उन्होंने बांग्ला भाषा भी सीखी और जब यह जीवनी छपी, तो साहित्य में विष्णु जी की धूम मच गयी। देश–विदेश की अनेक यात्राएँ करने वाले विष्णुजी जीवनपर्यंत पूर्णकालिक सजीव रचनाकार के रूप में साहित्य की साधना में लिप्त रहे थे। विष्णु प्रभाकर जी की प्रमुख रचना 'आवारा मसीहा' सर्वाधिक चर्चित जीवनी है। इस जीवनी रचना के लिए इन्हें 'पाब्लो नेरूदा सम्मान', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' जैसे कई विदेशी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनका लिखा प्रसिद्ध नाटक 'सत्ता के आर–पार' पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 'मूर्ति देवी पुरस्कार' प्रदान किया गया, हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा प्रभाकर जी को 'शलाका सम्मान' भी मिल चुका है। भारत के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकारों में से एक विष्णु प्रभाकर जी का निधन 96 वर्ष की उम्र में 11 अप्रैल, 2009 को नई दिल्ली में हो गया।

समुद्र के किनारे एक गांव था। उसमें एक कलाकार रहता था। वह दिनभर समुद्र की लहरों से खेलता रहता, जाल डालता और सीपियां बटोरता। रंग–बिरंगी कौड़ियां, नाना रूप के सुंदर–सुंदर शंख, चित्र–विचित्र पत्थर, न जाने क्या–क्या समुद्र जाल में भर देता। उनसे वह तरह–तरह के खिलौने, तरह–तरह की मालाएं तैयार करता और पास के बड़े नगर में बेच आता। उसका एक बेटा था, नाम था उसका हर्ष। उम्र अभी ग्यारह की भी नहीं थी, पर समुद्र की लहरों में ऐसे घुस जाता, जैसे तालाब में बत्तख।

एक बार ऐसा हुआ कि कलाकार के एक रिश्तेदार का मित्र कुछ दिन के लिए वहां छुट्टी मनाने आया। उसके साथ उसकी बेटी मंजरी भी थी। होगी कोई नौ–दस वर्ष की, पर थी बहुत सुंदर, बिल्कुल गुड़िया जैसी। हर्ष बड़े गर्व से उसका हाथ पकड़कर उसे लहरों के पास ले जाता। एक दिन मंजरी ने चिल्लाकर कहा,''तुम्हें डर नहीं लगता?'' हर्ष ने जवाब दिया,''डर क्यों लगेगा? लहरें तो हमारे साथ खेलने आती हैं।'' तभी एक बहुत बड़ी लहर दौड़ती हुई हर्ष की ओर आई, जैसे उसे निगल जाएगी। मंजरी चीख उठी, पर हर्ष तो उछलकर उस लहर पर सवार होकर किनारे आ गया।

मंजरी डरती थी, पर मन–ही–मन चाहती थी कि वह भी समुद्र की लहरों पर तैर सके। जब वह दूसरी

लड़कियों को ऐसा करते देखती तो उसे यह तब और भी जरूरी लगता। विशेषकर कनक को, जो हर्ष के हाथ में हाथ डालकर तूफानी लहरों पर दूर निकल जाती। वह बेचारी थी बड़ी गरीब, पिता एक दिन नाव लेकर गए, तो लौटे ही नहीं. डूब गए। तब से मां मछलियां पकड़कर किसी तरह दो बच्चों को पालती थी। कनक छोटे–छोटे शंखों की मालाएं बनाकर बेचती थी। मंजरी को वह अधनंगी काली लड़की जरा भी नहीं भाती थी।

एक दिन हर्ष ने देखा कि उसके पिता एक सुंदर–सा खिलौना बनाने में लगे हैं। वह एक पक्षी था, जो रंग–बिरंगी सीपियों से बनाया गया था। वह देर तक देखता रहा, फिर पूछा,''बाबा! यह किसके लिए बनाया है?''

कलाकार ने उत्तर दिया, ''यह सबसे सुंदर लड़की के लिए है। मंजरी सुंदर है न? दो दिन बाद उसका जन्म दिन है। उस दिन इस पक्षी को उसे भेंट में देना।'' हर्ष की खुशी का पार नहीं था। बोला,''हां–हां, बाबा मैं जरूर यह पक्षी मंजरी को दूंगा।'' और वह दौड़कर मंजरी के पास गया। उसे समुद्र के किनारे ले गया और बातें करने लगा, फिर बोला,''दो दिन बाद तुम्हारा जन्म दिन है?''

''हां, पर, तुम्हें किसने बताया?''

''बाबा ने! उस दिन तुम क्या करोगी?''

''सवेरे उठकर स्नान करूंगी। फिर सबको प्रणाम करूंगी। घर पर सहेलियों को दावत देती हूं. वे नाचती–गाती हैं। यहां भी दावत दूंगी।''

और इस तरह बातें करते–करते वे न जाने कब उठे और दूर तक समुद्र में चले गए। सामने एक छोटी–सी चट्टान थी। हर्ष ने कहा,''आओ, उस छोटी चट्टान तक चलें।''

मंजरी काफी निडर हो चली थी। बोली, ''चलो'' तभी हर्ष ने देखा कि कनक बड़ी चट्टान पर बैठी है, कनक ने चिल्लाकर कहा,''हर्ष यहां आ जाओ।''

हर्ष ने जवाब दिया,''मंजरी वहां नहीं आ सकती। तुम्हीं इधर आ जाओ।''

अब मंजरी ने भी कनक को देखा. उसे ईर्ष्या हुई। वह वहां क्यों नहीं जा सकती, वह क्या उससे कमजोर है। वह यह सोच ही रही थी कि उसे एक बहुत सुंदर शंख दिखाई दिया। मंजरी अनजाने ही उस ओर बढ़ी। तभी एक बड़ी लहर ने उसके पैर उखाड़ दिए और वह बड़ी चट्टान की दिशा में लुढ़क गई। उसके मुंह में खारा पानी भर गया, उसे होश नहीं रहा।

यह सब आनन–फानन में हो गया। हर्ष ने देखा और चिल्लाता हुआ वह उधर बढ़ा, पर तभी एक और लहर आई और उसने उसे मंजरी से दूर कर दिया। अब निश्चित था कि मंजरी बड़ी चट्टान से टकरा जाएगी, परंतु उसी क्षण कनक उस क्रुद्ध लहर और मंजरी के बीच आ कूदी और उसे हाथों में थाम लिया। दूसरे ही क्षण तीनों छोटी चट्टान पर थे। हर्ष और कनक ने मिलकर मंजरी को लिटाया, छाती मली, पानी बाहर निकल गया। उसने आंखें खोलकर देखा। उसे जरा भी चोट नहीं लगी थी। पर वह बार–बार कनक को देख रही थी।

अपने जन्म दिन की पार्टी के अवसर पर मंजरी बिल्कुल ठीक थी। उसने सब बच्चों को दावत पर बुलाया। सभी उसके लिए कुछ–न–कुछ उपहार लेकर आए थे। सबसे अंत में कलाकार की बारी आई। उसने कहा,''मैंने सुंदर लड़की के लिए सबसे सुंदर खिलौना बनाया है। आप जानते हैं, वह लड़की कौन है? वह है मंजरी।'' सबने खुशी से तालियां बजाईं। हर्ष अपनी जगह से उठा और उसने बड़े प्यार से वह सुंदर खिलौना मंजरी के हाथों में थमा दिया। मंजरी बार–बार उस खिलौने को देखती और खुश होती। लेकिन दो क्षण बाद अचानक मंजरी अपनी जगह से उठी। उसके हाथों में वही सुंदर पक्षी था। वह धीरे–धीरे वहां आई, जहां कनक बैठी थी। उसने बड़े स्नेह भरे स्वर में उससे कहा,''यह पक्षी तुम्हारा है सबसे सुंदर लड़की तुम्हीं हो।'' और एक क्षण तक सभी अचरज से दोनों को देखते रहे। कनक अपनी प्यारी–प्यारी आंखों से बस मंजरी को देखे जा रही थी और दूर समुद्र में लहरें चिल्ला–चिल्लाकर उन्हें बधाई दे रही थीं।

केंद्रीय भण्डारण निगम और ओडिशा मिलेट्स मिशन

अनन्या धराश्री राउत*

श्री अन्न (मिलेट्स) एक सूखा–सहिष्णु फसल है, जहां अन्य फसलें उगने में विफल हो जाती हैं, वहाँ इसे शुष्क, निर्जल जलवायु में भी उगाया जा सकता है। यह एक पौष्टिक अनाज भी है जिसमें फाइबर एवं आवश्यक खनिजों की उच्चतम मात्रा पाई जाती है।

भारत में पिछले कुछ दशकों में मिलेट्स उत्पादन में मजबूत वृद्धि देखी गई है। भारत को प्रमुख रूप से 15 कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इनमें ऐसे स्थान भी हैं, जहां देश के अन्य हिस्सों की तुलना में काफी कम वार्षिक वर्षा होती है। इन भागों में रागी, बाजरा, ज्वार आदि फसलें उगाई जा सकती हैं। इसके अलावा, इन अनाजों से मिलने वाले स्वास्थ्य लाभों को विश्व स्तर पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

विस्तार और विकास की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, देश के पूर्वी हिस्से में मौजूद ओडिशा राज्य ने वर्ष 2017 में ओडिशा मिलेट्स मिशन शुरू किया। इसका मुख्य उद्देश्य हर थाली में मिलेट्स को शामिल करना, इसके उत्पादन को पुनर्जीवित करना और अंततः इसे सरकारी योजनाओं में शामिल करना था। राज्य में कुपोषण देखा जा रहा था। इसके अलावा, किसान अधिक मुनाफा देने वाली व्यावसायिक फसलों की ओर आकर्षित हो जाते हैं जिससे मिलेट्स उत्पादन में कमी हो जाती है।

बड़े सपनों, दृढ़ निश्चय और ऊंची उम्मीदों के लिए ओडिशा मिलेट्स मिशन को सफलता मिली। इसकी शुरूआत वर्ष 2017 में 30 ब्लॉकों से हुई और वर्तमान में यह राज्य के 142 ब्लॉकों में सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है।

इसके प्रचार और विपणन के दौरान मिशन को जिस मुख्य कमी का सामना करना पड़ा वह उचित भंडारण सुविधाओं की थी। जरूरत के इस समय में केंद्रीय भंडारण निगम टी.डी.सी.सी.ओ.एल (Tribal Development Co-operative Corporation of Odisha Limited) के साथ जुड़ गया जो ओडिशा मिलेट्स मिशन के लिए खरीद एजेंसी है।

अन्य सभी मिलेट्स के बीच ओडिशा मुख्य रूप से रागी का उत्पादन करता है। इन्हें टी.डी.सी.सी.ओ.एल के तहत किसान उत्पादक समूहों जैसी सुविधा एजेंसियों के माध्यम से किसानों से खरीदा जाता है। बाद में इन्हें भंडारण के लिए केंद्रीय भंडारण निगम लाया जाता है।

आमतौर पर, इन उत्पादों को किसानों द्वारा किसान उत्पादक संगठन के माध्यम से आयोजित मंडी केंद्रों पर लाया जाता है। मिलेट्स की गुणवत्ता का सत्यापन कृषक उत्पादक संगठन के सदस्य एवं टीडीसीओएल के अधिकारियों द्वारा किया जाता है। गुणवत्ता सत्यापन प्रक्रिया

*तकनीकी सहायक, सेंट्रल वेअरहाउस, जेपोर

को मंजूरी मिलने के बाद, उपज जमा करने वाले किसानों को पंजीकृत किया जाता है और उपज की मात्रा दर्ज की जाती है। प्रमाणित उपज को टी.डी.सी.सी.ओ.एल. द्वारा प्रदान की गई बोरियों में 50 किलोग्राम बैग (शुद्ध वजन) में पैक किया जाता है और फिर सील कर दिया जाता है। अब उपज को ओडिशा सरकार के पोर्टल में पंजीकृत किया जाता है, जो अब किसान उत्पादक संगठनों को विशिष्ट गोदामों में खरीदी गई मात्रा को वितरित करने के लिए ट्रांजिट पास बनाने की अनुमति देता है।

जब स्टॉक डिलीवरी के लिए केंद्रीय भंडारण निगम में आता है तो किसान उत्पादक संगठन का विवरण और ट्रांजिट पास पर उल्लिखित अन्य सभी डेटा को टीडीसीसीओएल के नामित अधिकारी की उपस्थिति में निगम द्वारा सत्यापित किया जाता है। निगम में अन्य सभी औपचारिकताओं को स्थिर रखते हुए रागी के लिए गुणवत्ता विश्लेषण भाग थोड़ा अलग है।

फिंगर मिलेट, जिसे रागी के नाम से भी जाना जाता है, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर उगाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण मिलेट है। इसका वैज्ञानिक नाम है Eleusine coracana- इसके दाने सरसों के समान आकार में छोटे होते हैं। इसका रंग भूरे से गहरे भूरे तक होता है और कभी–कभी काला भी हो सकता है।

सबसे पहले एक ही खेप में यादृच्छिक तरीके से लगभग सभी बैगों से नमूने एकत्र किए जाते हैं। कुल 1 किग्रा (अनुमानित) वजन का नमूना एकत्र किया जाता है। अब एकत्र किए गए नमूने को समान मिश्रण के लिए 38 छिद्रों वाले एक नमूना विभाजक (Sample Separator) के माध्यम से पारित किया जाता है। नमूना विभाजक से गुजरने के बाद 250 ग्राम (अनुमानित) का सैंपल एकत्र किया जाता है। शेष 750 ग्राम (अनुमानित) का नमूना नमी की मात्रा मापने के लिए लिया जाता है। अब 250 ग्राम (अनुमानित) के इस नमूने को चार छलनी आकारों – 4 मिमी, 3.35 मिमी, 1.70 मिमी और 1.00 मिमी के साथ एक छलनी सेट के माध्यम से पारित (Pass) किया जाता है। इस प्रक्रिया में नमूने से बाह्य पदार्थ अलग हो जाते हैं और 250 ग्राम (अनुमानित) के नमूने के आकार के अनुसार मापा जाता है। अब विदेशी पदार्थ से मुक्त नमूना कांच की सतह पर लिया जाता है और पतले गोलाकार आकार में बड़े करीने से फैलाया जाता है। विश्लेषण के लिए 9 स्थानों से यादृच्छिक रूप से फैले हुए नमूने से 20 ग्राम नमूना लिया जाता है। 20 ग्राम का विश्लेषण नमूना अब एक तामचीनी प्लेट पर लिया जाता है। इसमें से क्षतिग्रस्त अनाज, थोड़ा क्षतिग्रस्त अनाज तथा अन्य खाद्यान्नों को अलग कर लिया जाता है। भारत सरकार के खाद्य मंत्रालय के अनुसार रागी के लिए समान विशिष्टताएँ हैं:– बाह्य पदार्थ– 1.0%, क्षतिग्रस्त अनाज– 1.0%, थोड़ा क्षतिग्रस्त अनाज– 2%, अन्य खाद्यान्न– 1.0%, नमी की मात्रा– 12%

उल्लिखित सीमा से अधिक का कोई भी स्टॉक भंडारण के लिए अस्वीकृति का पात्र होगा। नमूना संग्रह से लेकर अपवर्तन मापने तक विश्लेषण की सभी प्रक्रियाएं टी.डी.सी.सी.ओ.एल. के प्रतिनिधि की उपस्थिति में होती हं। यदि स्टॉक सभी गुणवत्ता मानदंडों को पूरा करता है तो इसे केंद्रीय भंडारण निगम के गोदामों में एक स्टैक में निर्धारित ब्लॉकों में संग्रहीत किया जाता है या फिर स्टॉक को अस्वीकार कर दिया जाता है और स्टॉक के पुनः प्रसंस्करण के लिए संबंधित किसान उत्पादक संगठन को वापस भेज दिया जाता है। यह सारी प्रक्रिया टी.डी.सी.सी.ओ.एल. के प्रतिनिधि की देखरेख में होनी चाहिए।

उचित मानक स्टॉक के लिए इन सभी चरणों का सूक्ष्मता से पालन किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक भंडारण सुविधा, प्रशिक्षित तकनीकी सहायकों, गुणवत्ता परीक्षण के लिए उचित उपकरणों और उत्कृष्ट प्रशासनिक प्रबंधन के साथ केंद्रीय भंडारण निगम को ओडिशा सरकार के टी.डी.सी.सी.ओ.एल. द्वारा ओडिशा मिलेट्स मिशन के तहत रागी के भंडारण का काम सौंपा गया है। 2017 में सेंट्रल वेअरहाउस, जूनागढ़, कलाहांडी ओडिशा में केंद्रीय भंडारण निगम के साथ भंडारण शुरू किया।

इसकी शुरूआत सेंट्रल वेअरहाउस, जूनागढ़ में 30000 क्विंटल के भंडारण लक्ष्य के साथ हुई और इसे 70000 क्विंटल के कुल खरीद लक्ष्य के साथ वर्ष 2020 में सेंट्रल वेअरहाउस, जेपोर, कोरापुट, ओडिशा तक बढ़ा दिया गया। आज की तारीख में जब हम 2024 में खड़े हैं तो सेंट्रल वेअरहाउस, केंदुपल्ली–1, सेंट्रल वेअरहाउस, नबरंगपुर, सेंट्रल वेअरहाउस, रायगडा, सेंट्रल वेअरहाउस, बालासोर, सेंट्रल वेअरहाउस, बलजीतपड़ा, सेंट्रल वेअरहाउस, चौद्वार, सेंट्रल वेअरहाउस, जटनी, सेंट्रल वेअरहाउस, सोनपुर में भी रागी भंडारित किया जा रहा है। अब निगम के गोदामों में रागी की मात्रा मात्र 30000 क्विंटल से बढ़कर 280000 क्विंटल तक पहुंच गई है।

कम पानी और अन्य कम आदानों का उपयोग करके अत्यधिक स्वास्थ्य लाभ और पर्यावरण के प्रति इसके योगदान से भारत सरकार के अनुरोध पर संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया है। विरासत में समृद्ध, संभावनाओं से भरपूर (Rich in heritage-Full of potential) के नारे के साथ इस पहल को काफी लोकप्रियता मिली। यहां तक कि भारत द्वारा आयोजित जी20 बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों को भी मिलेट्स परोसा गया। वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित करने के साथ ही फसल के बाद मूल्य संवर्धन, घरेलू खपत बढ़ाने और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलेट्स उत्पादों की ब्रांडिंग के लिए समर्थन प्रदान किया गया।

इन सबके बीच प्राथमिक हिस्सा भंडारण (Primary part) संरक्षण और रखरखाव के लिए उपज की अच्छी गुणवत्ता का सत्यापन करना होता है, जिसमें केंद्रीय भंडारण निगम ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सभी पहलुओं में भंडारण और संरक्षण का कार्य विपणन, ब्रांडिंग, लोकप्रिय बनाने के अन्य सभी प्रयासों को शानदार सफलता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। केंद्रीय भंडारण निगम ने इस उद्देश्य के लिए अपना पूरा समर्थन दिया है और आज तक भी अपना समर्थन जारी रखा है। उम्मीद है कि ओडिशा मिलेट्स मिशन में केंद्रीय भंडारण निगम की भूमिका आगे चलकर बहुत महत्वपूर्ण होगी और केंद्रीय भंडारण निगम इस मिशन का एक अपरिहार्य हिस्सा बन जाएगा। यह मिशन और केंद्रीय भंडारण निगम दोनों के लिए अगले दशक या उससे भी आगे के लिए एक लाभदायक स्थिति होगी। यह देश को ''विकसित भारत'' में बदलने में योगदान देगा।

कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना

सुनीता बाला*

अगर कोई व्यक्ति दिन रात मेहनत करता है तो लोग कहते हैं कि पैसों के लिए मरा जा रहा है और मेहनत न करे तो निखट्टू है,

पैसा खर्च करो तो उसे फिजूलखर्ची व दिखावा कहा जाता है और पैसा खर्च न करे तो उसे कंजूस व मक्खीचूस कहा जाता है,

अगर आपके पास पैसा बहुत है तो कहेगें दो नम्बर का होगा और अगर पैसा कम है तो कहेंगे कि थोड़ी सूझबूझ होती तो यह हाल नहीं होता,

और जिन्दगी भर मेहनत से जमा किये गए पैसों के बारे में कहा जाता है कि बेवकूफ है पैसे का सुख नहीं भोगा तो कमाया ही क्यों था।

*अधीक्षक, सेंट्रल वेअरहाउस, नांगलोई

जल है तो कल है

जल बिन जीवन है नहीं, जल देता है प्राण ।
बड़ा ही शक्तिवान जल, करे सृष्टि निर्माण ।।

वरुण भारद्वाज*

जल मानव जीवन का मुख्य आधार है। मानव को जीवित रखने के लिये वायु के बाद दूसरा स्थान जल का ही है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है और न ही इसका कोई विकल्प है। आधुनिक समय में सिंचाई, जल–विद्युत उत्पादन, मत्स्यपालन, जल–यातायात तथा उद्योग आदि के लिये जल का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा जल का इस्तेमाल पीने, नहाने, भोजन बनाने, कपड़ा साफ करने आदि दैनिक कार्यों के लिये भी किया जाता है। जल से ही मानवीय क्रियाकलापों का निष्पादन होता है, इसीलिये कहा जाता है कि जल मानव जीवन के लिये एक अनिवार्य और प्रकृति का दिया हुआ मनुष्य के लिये एक नायाब तोहफा है।

विशेषज्ञों के अनुसार, एक व्यक्ति 1 सप्ताह तक भोजन के बिना रह सकता है, लेकिन पानी की एक बूंद के बिना 5 दिनों से अधिक नहीं रह सकता है। जैसे ही मानव शरीर में 1% पानी की कमी होती है, उसे प्यास लगने लगती है। 5 प्रतिशत तक की कमी होने पर शरीर की नसें और इसकी सहनशक्ति कम होने लगती है। जब ऐसा होता है, तो शरीर थकावट महसूस करता है। अगर शरीर में पानी का स्तर 10 प्रतिशत तक गिर जाता है, तो व्यक्ति को धुंधला दिखाई देने लगता है। अगर शरीर में पानी की कमी 20 प्रतिशत तक हो जाती है, तो यह इंसान की मौत का कारण भी बन सकता है। यही कारण है कि मनुष्य को हमेशा अपने शरीर को पानी की आपूर्ति करनी चाहिए।

"जल है तो कल है", बावजूद इसके जल बेवजह बर्बाद किया जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल–संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। हम हमेशा से सुनते आए हैं **"जल ही जीवन है"**। जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना नहीं की जा सकती। जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमुल्य संसाधन है जल, या यूं कहें कि सभी सजीवों के जीने का आधार है जल। धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, किन्तु इसमें से 97% पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3% है। इसमें भी 2% पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1% पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है।

नगरीकरण और औद्योगिकीकरण की तीव्र गति व बढ़ता प्रदूषण तथा जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। जैसे–जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

और बढ़ती जाती है, लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे–तैसे गर्मी का सीजन निकल जाए, बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल संरक्षण के प्रति बेरुखी अपनाए रहते हैं।

आगामी वर्षों में जल संकट की समस्या और अधिक विकराल हो जाएगी, ऐसा मानना है विश्व आर्थिक मंच का। इसी संस्था की रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि दुनियाभर में 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग पानी की कमी के संकटों से जूझ रहे हैं। शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता और संबंधित ढेरों समस्याओं को जानने के बावजूद विश्व की बड़ी आबादी जल संरक्षण के प्रति सचेत नहीं है। जहां लोगों को मुश्किल से पानी मिलता है, वहां लोग जल की महत्ता को समझ रहे हैं, लेकिन जिसे बिना किसी परेशानी के जल मिल रहा है, वे ही बेपरवाह नजर आ रहे हैं। आज भी शहरों में फर्श चमकाने, गाड़ी धोने और गैर–जरूरी कार्यों में पानी को निर्ममतापूर्वक बहाया जाता है।

जल संकट सरकार और आम जनता दोनों के लिए चिंता का विषय है। इस दिशा में अगर त्वरित कदम उठाते हुए सार्थक पहल की जाए तो स्थिति बहुत हद तक नियंत्रण में रखी जा सकती है, अन्यथा आने वाले वर्ष हम सबके लिए चुनौतीपूर्ण साबित होंगे। हमारा देश अपने सभी नागरिकों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने और जल संरक्षण के लिए जल जीवन मिशन जैसे महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। माताओं और बहनों के जीवन को आसान बनाने में **"जल जीवन मिशन"** अत्यंत प्रभावी साबित हो रहा है। जन–जन की भागीदारी से घर–घर नल से जल पहुंचने का संकल्प पूरा करने में भारत सरकार प्रतिबद्ध है। जल संसाधनों के समन्वित और समग्रता पर आधारित प्लानिंग के मामले में भारत आज अग्रिम पंक्ति में आ चुका है और जल्द ही हम इस क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व करने की स्थिति में होंगे।

पानी की एक–एक बूंद बचाने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं, वह हमें जरूर करना होगा। इसके अलावा पानी की रीसाइकलिंग पर भी हमें उतना ही जोर देते रहना है। घर में इस्तेमाल किया हुआ पानी जो गमलों में काम आ सकता है या गार्डनिंग में काम आ सकता है अर्थात ऐसा जल जरूर दोबारा इस्तेमाल किया जाना चाहिए। थोड़े से प्रयास से हम घर में ऐसी व्यवस्थाएं बना सकते हैं। रहीम दास जी सदियों पहले कुछ मकसद से ही कह गए हैं कि – **रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।** जितने अच्छे ढंग से हम वर्षा जल का संचयन और प्रबंधन कर पाएंगे उतना ही कम परिश्रम हमें सूखे की समस्या से निपटने में करना पड़ेगा। अगर हम बरसात शुरू होने से पहले जल संचयन की योजनाएं बना लें तो हम उन अरबों रुपए की बचत कर सकते हैं जो किसी सूखे से निपटने में व्यर्थ हो जाते हैं क्योंकि सूखे के कारण न केवल सभी लोगों को घोर कष्ट झेलने पड़ते हैं बल्कि इससे पशुधन की हानि होती है और सारे काम धंधे एवं रोजगार भी चौपट हो जाते हैं।

चूंकि जल मानव जीवन का आधार है अर्थात जल ही जीवन है एवं जल ही भोजन है। तो आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम जल जैसे अमूल्य संसाधन की हर बूंद का संचयन करेंगे। इससे न केवल लोगों का जीवन सुगम बनेगा बल्कि इससे लोगों की 'ईज़ ऑफ लिविंग' में भी वृद्धि होगी। अतः हमें सभी को साथ लेकर वसुधैव कुटुंबकम की भावना से वाटर वॉरियर बनकर जल संरक्षण एवं उसके सही उपयोग हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। ताकि, जल के अभाव में किसी भी व्यक्ति या जीव के जीवन में कोई आपदा न आने पाए। अंत में इन पंक्तियों से हमें प्रेरणा लेने की आवश्यकता है–

सच कहते हैं जल बना, जीवन की पहचान। व्यर्थ बहाकर करें ना, इसका अब नुकसान।।

रखो बचाकर जल सदा, इसमें जीवन धार। आपके जीवन की ये, खींचे है पतवार।।

जी-20 का मुखिया : भारत – जिम्मेदारी एवं अवसर

पंकज पाण्डेय*

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G- 20) अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और अधिशासन निर्धारित करने तथा उसे मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत देश द्वारा 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक G 20 की अध्यक्षता की गयी।

परिचय एवं इतिहास

- G -20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच के रूप में की गई थी।

- 2007 के वैश्विक, आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर G -20 को राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के स्तर तक उन्नत किया गया था और 2009 में इसे ''अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंच'' के रूप में नामित किया गया था।

- शुरूआत में G -20 व्यापक आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित था, परंतु बाद में इसके एजेंडे में विस्तार करते हुए इसमें अन्य बातों के साथ व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार–विरोध शामिल किया गया।

- ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G- 20) में 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) और यूरोपीय संघ शामिल हैं। G 20 सदस्य देशों में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व की लगभग दो–तिहाई आबादी है।

संचालन एवं कार्य प्रक्रिया

- G -20 समूह का प्राथमिक जनादेश अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए है, जिसमें दुनिया भर में भविष्य के वित्तीय संकटों को रोकने हेतु विशेष जोर दिया गया है, यह वैश्विक आर्थिक एजेंडा को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- G -20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक क्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है।

*अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

- G -20 अध्यक्षता के तहत एक वर्ष के लिए G -20 एजेंडा का संचालन किया जाता है और शिखर सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। G -20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं: वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक।

- वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व करते हैं, जबकि शेरपा ट्रैक का नेतृत्व शेरपा करते हैं।

- वित्त ट्रैक का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्री और सेंट्रल बैंक गवर्नर करते हैं। दो ट्रैक के भीतर, विषयगत रूप से उन्मुख कार्य समूह हैं जिनमें सदस्यों के संबंधित मंत्रालयों के साथ–साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं (वित्त ट्रैक मुख्य रूप से वित्त मंत्रालय के नेतृत्व में है)। ये कार्य समूह प्रत्येक अध्यक्षता के पूरे कार्यकाल में नियमित बैठकें करते हैं ।

- शेरपा पक्ष की ओर से G 20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है, जो नेताओं के निजी प्रतिनिधि होते हैं। शेरपा वर्ष के दौरान हुई वार्ता का पर्यवेक्षण करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा आइटम पर चर्चा करते हैं और G 20 के मूल कार्य का समन्वय करते हैं।

- इसके अलावा, ऐसे सम्पर्क समूह हैं जो G 20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, विचार मंचों, महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं।

- G 20 समूह का कोई स्थायी सचिवालय नहीं है। इसकी अध्यक्षता ट्रोइका द्वारा समर्थित है – पिछला, वर्तमान और आने वाली अध्यक्षता।

- भारत की अध्यक्षता के दौरान, ट्रोइका में क्रमशः इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील शामिल हुए ।

प्राथमिकताएँ

- समावेशी, न्यायसंगत और सतत् विकास
- जीवन (पर्यावरण के लिये जीवन शैली)
- महिला सशक्तीकरण
- स्वास्थ्य, कृषि और शिक्षा से लेकर वाणिज्य तक के क्षेत्रों में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना एवं तकनीक–सक्षम विकास
- कौशल–मानचित्रण
- संस्कृति और पर्यटन
- जलवायु वित्तपोषण
- चक्रीय अर्थव्यवस्था
- वैश्विक खाद्य सुरक्षा
- ऊर्जा सुरक्षा
- ग्रीन हाइड्रोजन
- आपदा जोखिम में कमी तथा अनुकूलन
- विकासात्मक सहयोग
- आर्थिक अपराध के विरुद्ध लड़ाई
- बहुपक्षीय सुधार।

G–20 की अध्यक्षता : भारत का दृष्टिकोण एवं कर्तव्य

G 20 समूह के भीतर विश्व के वे तमाम विकसित देश शामिल हैं जिनकी वर्ल्ड जीडीपी में करीब 85 प्रतिशत की भागीदारी बताई जाती है। ऐसे में प्रत्येक भारतीय को इस सुनहरे मौके की अहमियत को पहचानते हुए देश के तेजी से बढ़ते कद को लेकर गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। भारत के लिए इस पायदान तक पहुंचने का सफर बिलकुल भी आसान नहीं रहा। इसके लिए हमारा देश एक कठोर दौर से गुजरा है, जिसमें कोविड जैसी वैश्विक महामारी भी सामने आई थी। याद हो कोविड काल में विश्व का ऐसा कोई देश नहीं था जिसके ऊपर उसका

जरा भी असर न हुआ हो। दुनिया के लगभग सभी देश किसी न किसी रूप में कोविड के चलते प्रभावित हुए थे। भारत भी इनमें से एक रहा। उसके बावजूद भारत ने जिस तरह से रिकवरी की यह वाकई काबिल–ए–तारीफ है और अब लगातार देश के उन्हीं प्रयासों के परिणाम हम सभी के सामने हैं। यहां यह कहना भी सही होगा कि आज भारत इस मुकाम पर पहुंचा है लेकिन, इसके पीछे हजारों वर्षों की बहुत बड़ी यात्रा जुड़ी है, अनंत अनुभव जुड़े हैं। हमने हजारों वर्षों का उत्कर्ष और वैभव भी देखा है। हमने विश्व के सबसे अंधकारमय दौर भी देखे हैं। हमने सदियों की गुलामी और अंधकार को जीने के लिए मजबूरी भरे दिन भी देखे हैं। फिर भी भारत अपनी विकास यात्रा में नहीं रुका है।

G 20 की अध्यक्षता भारत के लिए एक बड़े अवसर के रूप में आई। अतः इस अवसर का पूरा उपयोग करना चाहिए और वैश्विक भलाई व विश्व कल्याण पर ध्यान देना चाहिए। चाहे शांति हो या एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता हो या सतत विकास, भारत के पास चुनौतियों से संबंधित समाधान हैं। हमने 'एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य' की जो थीम दी है, वह हमारी 'वसुधैव कुटुम्बकम' की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। बीते कुछ साल में इस तरह से भारत लगातार वैश्विक मंचों पर बेहतर करता आ रहा है और 130 करोड़ भारतीयों की शक्ति और सामर्थ्य के साथ निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

छोटे का महत्व

डॉ.एच.बी.दास*

छोटे-छोटे जल बूंदों से बनता है सागर।

छोटे-छोटे धान से भर जाता है धान्यागार।।

छोटे-छोटे फूलों से बगीचे दिखते हैं सुन्दर।

छोटे-छोटे पत्थर से बनाया जाता है मंदिर।।

शक्ल बच्चे की छोटी-सी मिलता सबसे प्यार।

बात होती है छोटी-सी बन जाती है यादगार।।

छोटी-छोटी किताबों से भरता है पुस्तकागार।

छोटी-छोटी बचत से भर जाता है कोषागार।।

*महाप्रबंधक (आंतरिक लेखा परीक्षा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन

रेखा दुबे *

उड़ने दो परिंदों को अभी शोख हवाओं में,
फिर लौट के बचपन के ज़माने नहीं आते।।

बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते–फिरते तितली बनके.....रेडियो पर ये गाना सुना और दिल फिर पुरानी यादों में खो गया। बचपन के सुंदर और कोमल एहसास, उसकी मासूमियत और सच्चेपन को अपनी स्मृति से बिसारना आसान नहीं होता। वाकई वो भी क्या जमाना था। तनाव शब्द तो कभी सुना ही नहीं था हमने। हमारे बाबूजी को सरकारी आवास मिला था और हम उसी आवास में राजा थे अपने दिल के। घर में सुख–सुविधाओं के ज्यादा साधन नहीं थे लेकिन फिर भी दिल भरा हुआ था अपनों के प्यार से। घर के पीछे अमरूद का पेड़ था और उस पर फल आते ही, जितने दोस्त आते सबको अमरूद खिलाना मेरा शौक था लेकिन मां ने कभी डांटा नहीं क्योंकि बांट के खाने के संस्कार उन्होंने ही दिए थे। घर में एक छोटा सा किचन गार्डन भी था और हमने उसमें मेंहदी की बाड़ लगाई थी। तब पता नहीं था कि यही मेंहदी आज खरीद कर बालों और हाथों में लगानी पड़ेगी। घर में अगर छोटे होने के कई फायदे थे तो बड़े भाई–बहनों के काम भी बहुत करने पड़ते थे। बाबूजी की लाडली थी मैं। सब की पढ़ाई की निगरानी का जिम्मा उन्होंने मुझे सौंपा था और बाबूजी की बात न मानें ऐसे तो बिल्कुल नहीं थे हम। जो मुझे ज्यादा परेशान करता, मैं बाबूजी से उनकी शिकायत लगाकर बदला निकालती थी कि आज इसने स्कूल से आकर होमवर्क नहीं किया या पढ़ाई नहीं की। कभी–कभी इस वजह से भाई–बहन डरते भी थे कि ये शिकायत लगा देगी। बाबूजी मिजाज के कुछ सख्त थे लेकिन सिर्फ पढ़ाई के लिए और उसका नतीजा ये था कि सब बिना मम्मी के कहे ही अपना काम और पढ़ाई कर लिया करते थे। आज जिंदगी के इस मुकाम पर उनके अनुशासन का ही परिणाम मानती हूं कि हम सभी भाई–बहन सरकारी नौकरी में अधिकारी हैं।

स्कूल जाने का मन करे या न करें बाबूजी की एक टेढ़ी नजर और बिना किसी न–नुकर के हम बिस्तर से

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

खड़े हो जाते थे। नाश्ते में जो भी मिलता था, खा लिया करते थे, क्योंकि मम्मी विकल्प ही नहीं देती थी। आज मैं देखती हूं कि बच्चे एक चीज़ नहीं खाते तो आइटम की झड़ी लग जाती है ये..... बना दूं.....ये खा ले। जब मम्मी स्कूल के लिए टिफिन में मेरी पसंद का आइटम देती थी तो बस ऐसा लगता था.....

किताबों से निकल कर,
तितलियाँ गजलें सुनाती थी
जब पसंदीदा टिफिन रखती थी मेरी माँ,
तो मेरा बस्ता मुस्कुराता था।

शाम के समय हमारे घर के सामने बड़े पार्क में बच्चों की खूब भीड़ होती थी। बच्चों का शोरगुल माहौल को खुशनुमा बना देता था। पूरी रात क्रिकेट मैच हुआ करते थे और लोगों के घरों से बल्ब और तार लगाकर पूरा पार्क रात में भी जगमग करता था। अगर गलती से किसी की खिड़की का शीशा टूट जाता था तो कोई डांटता भी नहीं था। आजकल के पार्क तो बच्चों के मोहताज से हैं। कोई आता ही नहीं है उनकी रौनकें बढ़ाने। मेरा बचपन तो लड़कों और लड़कियों के साथ खेलते हुए ही गुजरा और कभी मम्मी या बाबूजी ने नहीं डांटा कि लड़कों के साथ नहीं खेलना। बाबूजी के आने से पहले ही मम्मी दरवाजे पर खड़े होकर आवाज लगाती थी और हम सभी भाई–बहन उनकी एक ही आवाज़ में घर की ओर दौड़े चले आते थे क्योंकि बाबूजी के आदेश थे कि उनके आने पर सभी घर में होने चाहिए। रात के भोजन का मज़ा हम एक साथ बैठकर ही उठाया करते थे। एक–दूसरे की प्लेट से खाना बहुत सुहाता था। आज सब अपने–अपने कमरे में बंद होकर भोजन करते हैं। भोजन का टाइम ही फिक्स नहीं है। रात में दो–तीन बजे भी घरों में खाने की डिलीवरी होती देखी है हमने। कई रेस्तरां तो 24X7 खुले रहते हैं। हमारे बचपन की रातें बड़ी बेफिक्र थीं, सभी अपने घरों के बाहर चारपाई लगा कर सोते थे। प्राकृतिक हवा में जो सुकून था, वो आज के एसी वाले कमरों में भी नसीब नहीं होता। सुबह बिल्कुल फ्रेश उठते थे हम। उस समय कुछ ही घरों में टीवी होते थे और टीवी वाले घर बड़े अमीर माने जाते थे जिसके घर में टीवी होता था उसके घर में ही पूरा मोहल्ला जाता था और पड़ोसी आंटी बड़े प्यार से घर में बुलाने भी आती थीं। बुधवार को रात 8.30 बजे चित्रहार आता था जिसमें फिल्मी गाने दिखाया करते थे। रविवार को फिल्म देखने के लिए तो उनका पूरा कमरा भर जाता था। खिड़की के परदे और दरवाजे भी खोल दिए जाते थे कि लोग बाहर से भी टीवी का मज़ा ले लें। वाकई जादुई समय था, किसी को कोई घमंड नहीं बस प्यार ही प्यार। उस समय पड़ोस में जिसके घर में खेलते थे अगर भूख लग जाए तो उन्हीं के घर खाना खा लेते थे। सबके सुख–दुख सांझे होते थे। किसी की भी तबीयत खराब होती थी तो पड़ोस से ही खाना उनके घर जाया करता था। कोई नए पड़ोसी आते थे तो जब तक उनका घर सैट नहीं हो जाता था तब तक नाश्ता, लंच और डिनर सबके घरों से मिलकर आता था और आज का माहौल तो ऐसा है कि कोई झांकने भी नहीं आता। किसी को किसी की तकलीफ से कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे आज भी याद है कि जब होली के एक दिन पहले मम्मी रात को दस बजे के बाद घर का सारा काम खत्म करके गुजिया और पकवान बनाने के लिए स्टोव कमरे में ले आती थी और कमरे की खिड़की के बाहर हमारे पड़ोसियों के पूरे परिवार चारपाई लगाकर बैठ जाते थे और लगभग पूरी रात जाग. कर पकवानों का मज़ा लिया करते थे। सच कहूं त्यौहार का मज़ा ही कुछ और था। अब सब कुछ रेडीमेड मिल जाता है तो पकवान और त्यौहार दोनों फीके से हो गए हैं।

आज देखती हूं तो लगता है कि जो बचपन हमने जिया वो आज की पीढ़ी को मिला ही नहीं। जब रात को मां थकी होने के बावजूद सोते समय हमारे बालों में हाथ फेरती थी तो कसम से.....ऐसी गहरी नींद आती थी कि बस पूछो नहीं। उस समय के बाद इतनी सुकून की नींद कभी आई ही नहीं और दादी–नानी की कहानियों को सुनकर जो बच्चे बड़े हुए है वो जानते है कि उनको क्या ख़जाना मिला है।

एक हाथी, एक राजा, एक रानी के बगैर
हमें नींद नहीं आती थी कहानी के बगैर

पता नहीं रिश्ते सब आज भी वही हैं लेकिन वो दुलार और स्पर्श कहीं खो सा गया है। बच्चों की वो मासूमियत कहीं खो–सी गई है। मैंने कई बार नवजात शिशु के माथे पर बल देखे हैं। बड़ा असहज महसूस होता है कि क्या समय इतना बदल गया कि जीवन के प्रारंभ में ही चिंता और अवसाद ने घर कर लिया।

बचपन किसी के भी जीवन का सबसे मज़ेदार और यादगार समय होता है। यह जीवन का पहला चरण है जिसका हम नादानी में जी भरकर आनंद लेते हैं। इसके अलावा, यही वह समय है जो हमारे भविष्य को आकार देता है। बचपन में जब स्कूल जाना बोझिल लगता था तो ये गलतफहमी होती थी कि **बड़े होते ही जिंदगी मज़ेदार हो जाएगी** और बड़े हुए तो बिजली का सा झटका जोर से लगा कि मन कराह कर रोज ही ये गीत गाता है कि **कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन**। हाथ अब पहले से ज्यादा खाली है। बचपन का हर एक पल आज हमारी खुशनुमा यादों का खजाना है। वह बचपन की अमीरी आज भी याद आती है जब बारिश के पानी में हमारे भी जहाज चलते थे। मुस्कुराहट के साथ सुबह होती थी और खिलखिलाते हुए शाम। हथेली में पैसे नहीं थे लेकिन झोली में खुशियां बेशुमार थी। दिल से बड़े अमीर थे हम। अब भागदौड़ भरी जिंदगी की शाम में ऐसा लगता है कि मुस्कुराए हुए भी मुद्दतें हो गई। औरों का मन रखने के लिए तो अक्सर मुस्करा ही लेते हैं लेकिन भौतिकवादी युग में जीने के सलीके ने मुस्कराहट छीन ली है। अपने आसपास देखने की फुर्सत ही नहीं है हमें। तनाव, चिंता, परेशानी ने हमें इस तरह अपने आगोश में भर लिया है कि बस अब यह जीवन का पर्याय बन गए हैं। यह तो हम सभी जानते हैं कि तस्वीर के रंग चाहे जो भी हों, मुस्कुराहट का रंग हमेशा खूबसूरत होता है। अब तो बस यही दुआ है...

ऐ खुदा मुझे तेरा एक अहसान चाहिए,
हर बच्चे के चेहरे पर बस मुस्कान चाहिए।

आजकल की पीढ़ी के पास तो ऐसी रंगीन कोई यादें ही नहीं हैं। स्ट्रैस शब्द तो बच्चों के लिए भी कॉमन हो गया है। बचपन से ही किस फील्ड को कैरियर के लिए चुनना है ये माता–पिता से ज्यादा बच्चे सोच रहे हैं। मोबाइल और लैपटॉप बस यही इनके पढ़ने और खेलने के साधन हैं। कॉलोनी के पार्क सूने हो गए है कभी–कभी बच्चों की आवाज पार्क से आती है तो बड़ा सुकून मिलता है कि कोई तो अपने बचपन को संजो कर रख रहा है वरना आजकल बच्चे नहीं बड़े पैदा हो रहे हैं। मासूमियत तो रही ही नही है आजकल की पीढ़ी में। पड़ोसी शब्द भी गायब होता जा रहा है। आपके पड़ोस में कौन रह रहा है कई जगह तो लोगों को ये भी पता नहीं है। सुख–दुख भी अपने–अपने हो गए हैं। बचपन का वास्तविक मूल्य केवल बड़े लोग ही समझ सकते हैं क्योंकि बच्चे उस महत्व को समझने में उस समय सक्षम नहीं होते और जब समझ पाते हैं तो स्थिति बदल चुकी होती है। बच्चों को वयस्क होने तक यह अहसास ही नहीं हो पाता कि वे किन सुनहरे पलों से गुजर रहे हैं। एक वयस्क के लिए उसके जीवन का स्वर्णिम काल बचपन ही हो सकता है और तनावपूर्ण दिनों के दौरान वह उस खोए हुए समय की लालसा करता है। यही वह समय है जब बालक के नैतिक एवं सामाजिक चरित्र का विकास होता है। इस समय में माता–पिता आसानी से बच्चों की मानसिकता को बदल सकते हैं और उन्हें सही और गलत के बीच अंतर करा सकते हैं। बच्चों का दिमाग साफ स्लेट की तरह होता है जिस पर कोई भी कहानी आसानी से लिखी जा सकती है। बचपन खुशनुमा होगा तो उसके यादगार पल उसके बड़े होने पर भी उसके साथ रहेंगे और तनाव निवारक के रूप में काम करेंगे। एक खुशहाल बचपन एक सफल वयस्कता का निर्माण करता है। बच्चे बिना किसी उचित गंतव्य वाले वाहनों की तरह हैं। आप उन्हें अपनी इच्छानुसार किसी भी दिशा में चला सकते हैं। वे भगवान के प्रतिनिधि हैं और इस दुनिया के सबसे मासूम इंसान।

यह हम ही हैं जो उन्हें एक सुंदर भविष्य दे सकते हैं।

बचपन मेरे जीवन का सबसे अविस्मरणीय समय है। बचपन की यादें मेरे जीवन के उस लापरवाह चरण की यादों को ताज़ा करती हैं, जो मुझे अपने वर्तमान दबाव और तनाव को भूलने का मौका देती हैं। जब भी मैं उदास होती हूं तो वही बीते हुए प्यार भरे लम्हें आंखों में चमक और चेहरे पर मुस्कान ला देते हैं और मन कहता है कि

बच्चों के छोटे हाथों को चाँद -सितारे छूने दो
बड़े होकर ये भी हम जैसे नीरस हो जाएँगे।।

मुझे उम्मीद है कि इस लेख के माध्यम से मैंने आपमें से कई लोगों के बचपन की यादों को सजीव किया है और अगर आपके चेहरे पर उन सुनहरी यादों से तरोताज़ा होकर मुस्कान आई तो मेरी लेखनी सार्थक हो जाएगी।

निगमित कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

प्रभावी संप्रेषण एवं व्यक्तित्व विकास पर कार्यशाला

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी

"ज्ञान सागर" का शुभारंभ

केंद्रीय भंडारण निगम ने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में वृद्धि करने की दिशा में डिजिटल लाइब्रेरी की शुरूआत की है। इस डिजिटल लाइब्रेरी "ज्ञान सागर" का शुभारंभ निगम के प्रबंध निदेशक महोदय श्री अमित कुमार सिंह के कर कमलों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के अवसर पर किया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक) सहित सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

निगम राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु हमेशा से न्वोनमेषी पहल करता रहा है। इसी दिशा में डिजिटल लाइब्रेरी की शुरूआत की गई है। यह डिजिटल लाइब्रेरी निगम की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई गई है। डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण निगमित कार्यालय के राजभाषा अनुभाग की संकल्पना एवं अथक प्रयासों से एमआईएस विभाग के सहयोग से पूरा किया गया है।

इस डिजिटल लाइब्रेरी का उद्देश्य निगम के प्रत्येक कर्मचारी के लिए डिजिटल रूप में पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएं एवं हिंदी से जुड़ी नवीनतम जानकारी तथा राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय से संबंधित अद्यतन जानकारी डिजिटल रूप में उपलब्ध कराना है।

डिजिटल लाइब्रेरी के निर्माण के प्रथम चरण में प्राचीन साहित्य, शब्दावलियां, समाचार पत्र–पत्रिकाओं के लिंक, निगम की गृह पत्रिका भंडारण भारती, हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले व्यक्तियों के वीडियो लिंक उपलब्ध कराए गए हैं। आने वाले समय में डिजिटल लाइब्रेरी को और अधिक समृद्ध एवं यूजर अनुकूल बनाने के लिए निगम का राजभाषा अनुभाग निरंतर प्रयासरत है।

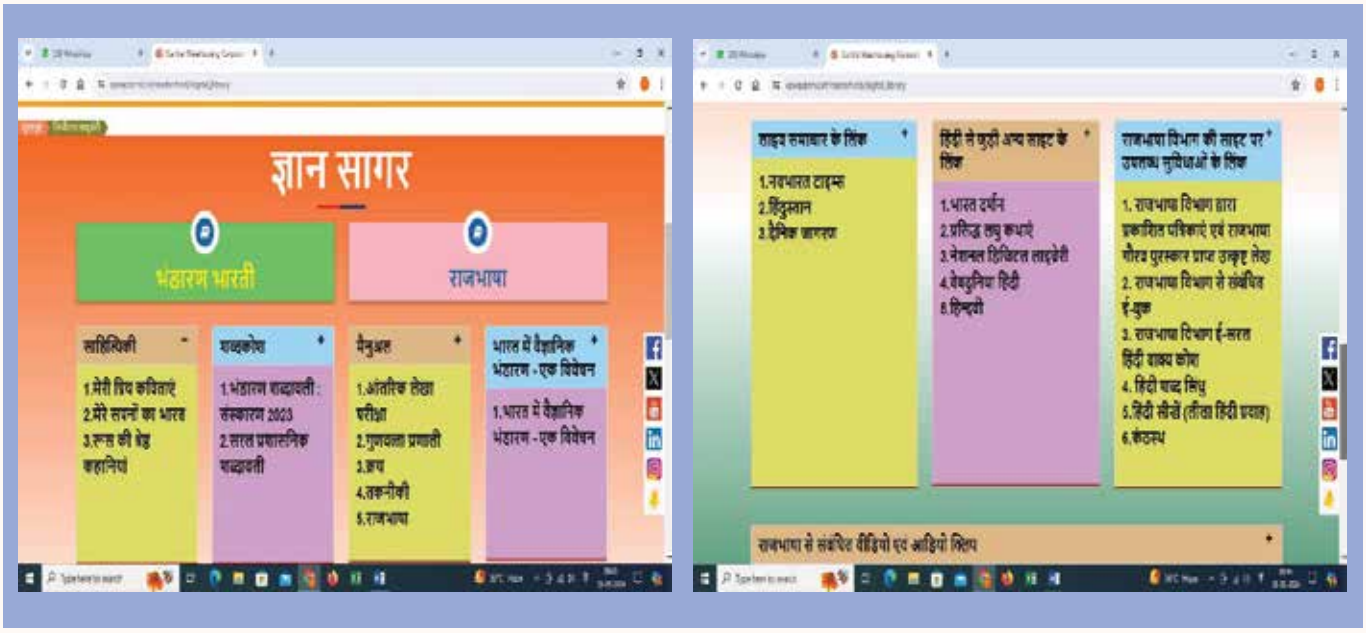

*राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से

जयपुर अतीत एवं वर्तमान

रजनी सूद*

सन 1727 मे सवाई जय सिंह द्वारा बसाया गया, जयपुर शहर भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान की राजधानी है। जयपुर को पिंक सिटी अथवा गुलाबी नगरी भी कहते हैं, इसको सबसे पहले स्टेनली रीड ने पिंक सिटी बोला था। जानते है क्यूँ? 1876 मे तत्कालीन जमींदार सवाई राम सिंह ने इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत मे पूरे शहर को गुलाबी रंग से सजा दिया था। तभी से इसे गुलाबी नगरी के नाम से पुकारा जाने लगा। जयपुर जहां एक तरफ गुलाबी इमारतों से युक्त पुराने शहर नाहरगढ़ पहाड़ी पर स्थित नाहरगढ़, आमेर एवं जयगढ़ किला, हवामहल, सिटी पैलेस म्यूजियम आदि इमारतों के कारण उत्तर भारत का महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है। दूसरी तरफ यह मेट्रो रेल सेवा, बड़ी बड़ी इमारतें, फ्लाईओवर, एलिवेटेड सड़कें, शॉपिंग मॉल्स, मल्टीप्लेक्स तथा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे के फलस्वरूप आधुनिक महानगर बनने की राह पर है। जयपुर भारत के टूरिस्ट सर्किट गोल्डन ट्रायंगल का हिस्सा है जिसमें दिल्ली, आगरा, जयपुर आते हैं।

यूनेस्को द्वारा जुलाई, 2019 में जयपुर को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी का दर्जा दिया गया है। जयपुर अपनी समृद्ध भवन निर्माण–परंपरा, सरस–संस्कृति ओर ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर तीन ओर से अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है। जयपुर शहर की पहचान यहाँ के महलों और पुराने घरों मे लगे धौलपुरी पत्थरों से होती है, जो यहाँ के स्थापत्य की खूबी है।

- करीब 71 वर्ष पूर्व बनीपार्क क्षेत्र में जानवर घूमा करते थे, जब यह निर्जन वन हुआ करता था। जो आज का व्यस्तम इलाका है।
- जयपुर का वर्तमान ढेहर का बालाजी रेलवे स्टेशन जयपुर पश्चिम के नाम से जाना जाता था ।
- जयपुर से दिल्ली जाने वालों की पसंदीदा ट्रेन पिंक सिटी एक्सप्रेस को दिल्ली रेलवे लाइन (मीटरगेज) से सन् 1977 मे 120 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलाया गया।
- जयपुर जिले के चोमू कस्बे का नाम बदल कर विजयनगर किया गया परंतु लोग आज भी इसे चोमू के नाम से पुकारते हैं।
- जयपुर के कनाट प्लेस के नाम से विख्यात एम.आई. रोड तत्कालीन रियासत के दीवान मिर्जा इस्माइल के नाम से जानी जाती है।
- 1960–70 के दशक मे महारानी गायत्री देवी जयपुर की लोकसभा सांसद रहीं थीं ।
- 1977–78 मे इंदिरा बाजार का नाम बदलकर महाकवि बिहारी बाजार किया गया परंतु लोग इस नाम के

*प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

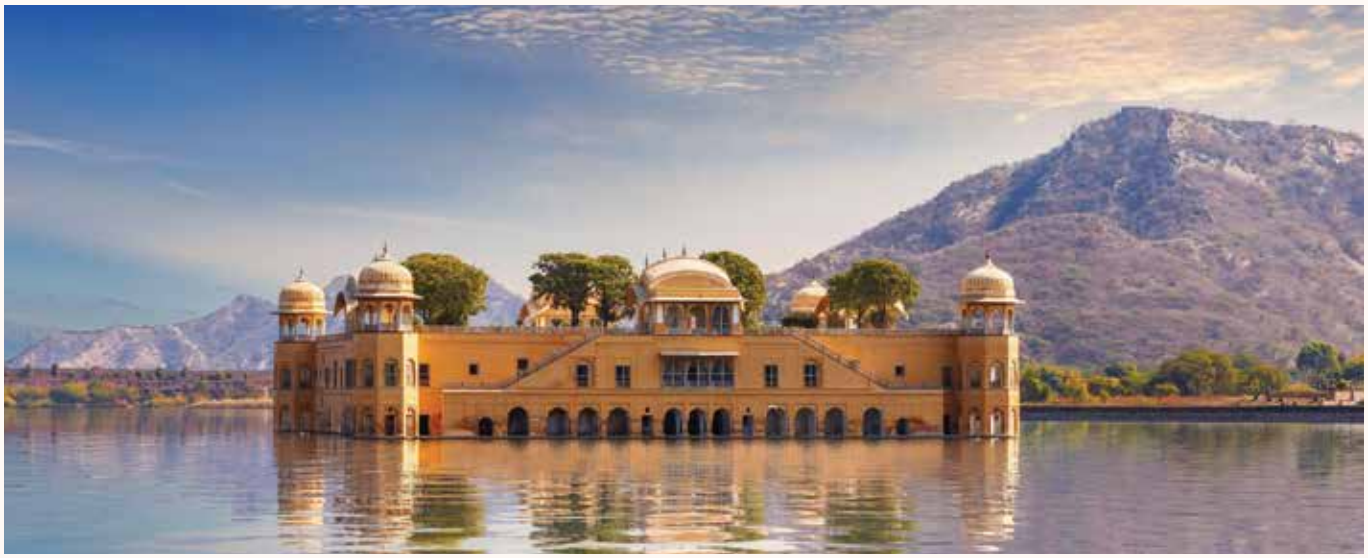

अभ्यस्त नहीं हुये तथा इसका नाम इन्दिरा बाजार ही प्रचलित रहा ।

- 1986 में प्रसिद्ध अभिनेत्री एवं नृत्यांगना सुधाचंद्रन के जीवन पर आधारित नाचे मयूरी की अधिकांश शूटिंग जयपुर में की गई जिन्हें देखने के लिए लोग दूर– दूर से आते थे। बहुत सारी हिंदी ओर दक्षिण भारतीय फिल्मों की शूटिंग जयपुर में ही की जाती थी।
- पिछले तीन दशकों में जयपुर के सिनेमा थियेटरों मे महत्वपूर्ण बदलाव आए। परंपरागत सिनेमा का स्थान मल्टीप्लेक्स थियेटरों ने ले लिया, केवल राजमंदिर सिनेमा ही अपना अस्तित्व बचा पाया।
- वर्ष 1970–71 के दौरान जयपुर शहर में डबल डेकर बस कमल एंड कंपनी द्वारा चलाई जाती थी। पुच्छल बस छात्रों मे बहुत लोकप्रिय थी।
- वर्ष 2000 से पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रामगढ़ झील अब पूरी तरह सूख चुकी है जो पूरे जयपुर शहर के लिए जीवनदायिनी थी।

वर्तमान का जयपुर :–जयपुर लगातार विकास की राह पर है, समय के साथ इस राज्य में भी बदलाव आया है। जयपुर एशिया के हीरे, सोने और पत्थर के गहनों के सबसे बड़े निर्यातकों मे से एक है। हालांकि परंपरा की जगह आधुनिकता ने ले ली है परंतु यहाँ के निवासी आज भी सरल और सहज हैं। आर्थिक रूप से विकसित शहर मे पर्यटन का बहुत योगदान है। पिछले साल जयपुर को ग्यारहवें सबसे बड़े जमा केंद्र और भारत के सबसे बड़े क्रेडिट केंद्र के रूप में स्थान दिया गया। स्वार्थता यहाँ लोगों को ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाई है। सिटी पैलेस, जंतर–मंतर, हवामहल, नाहरगढ़ का किला, अल्बर्ट हाल म्यूजियम, रामबाग पैलेस, राजमंदिर सिनेमा, जलमहल, जयगढ़ फोर्ट, कनक वृन्दावन पार्क, अंबर पैलेस, मसाला चौक, जवाहर कला केंद्र, पत्रिका गेट, बिरला मंदिर, झलाना लेपेर्ड पार्क गोविंद देव जी का मंदिर, सरगासूली, रामनिवास बाग, गुड़ियाघर, बी एम बिड़ला तारामंडल, मोती डूंगरी गणेश जी मंदिर इत्यादि यहाँ के दर्शनीय स्थल हैं। दाल बाटी और चूरमा जयपुर की शान है। बांधनी, पगड़ी सुप्रीम और टाई एंड डाई साड़ी, लहंगा–चोली–ओढ़नी यहाँ का पहनावा है। शहर की आधिकारिक भाषा हिंदी और अतिरिक्त आधिकारिक भाषा अँग्रेजी है। मुख्य बोली ढूंढारी, मारवाड़ी है।

तो आप भी आइये रँगीले
राजस्थान के जयपुर शहर में ।

आत्मविश्वासः उच्चस्तरीय जीवन की कुंजी

स्वाति अग्निहोत्री*

"जो कल थे, आज हैं, कल नहीं रहेंगे।
परंतु कुछ ऐसे भी हैं जो आज हैं
और आगे भी रहेंगे।।"

भारतीय आध्यात्मिकता के सुमेरु युग दृष्टा, युग सृष्टा और युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत **स्वामी विवेकानंद** ऐसे ही महापुरुष संत साधक थे जिनकी विचारधारा समस्त विश्व के गत, आगत और अनागत तीनों युगों के कालुष्य का प्रक्षालन करने में समर्थ हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने व्यक्ति के उत्थान, समाज के उन्नयन और राष्ट्र के विकास के लिए तीन बातें आवश्यक बताई हैं: **सर्वप्रथम अच्छाई की शक्तियों पर दृढ़ विश्वास, दूसरा ईर्ष्या और संदेह का अभाव और तीसरा उन सभी की सहायता जो अच्छा कार्य करने और अच्छा बनने का प्रयत्न करते हैं।**

वर्तमान दौर में बढ़ती जटिलताओं, प्रतिस्पर्धाओं, कैरियर चुनौतियों व वैयक्तिक एवं व्यावसायिक जीवन की अपेक्षाओं के बीच उत्पन्न असंतुलित स्थितियों के कारण तनावपूर्ण परिस्थितियों का पाया जाना स्वाभाविक है। सृजनात्मक कौशल और वैयक्तिक जीवन की गुणवत्ता में संतुलन स्थापित करने के लिए मनुष्य को **भगवान बुद्ध** की आनापानसती और विपश्यना की अवधारणा को जीवन में समाहित करना आवश्यक है। भगवान बुद्ध संसार के दुःख का संकेत पाकर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि **मानव तथा मानवेत्तर जीवन ही दुःख है और दुःख के कारण हैं– मन के विकार।** अतः बुद्ध इसके उपचार की साधना में संलग्न हुए जिसे **आनापानसती** अर्थात् श्वांस प्रश्वांस का निरीक्षण या पूर्ण सजकता एवं **विपश्यना** अर्थात वस्तुओं को उनके वास्तविक स्वरूप में देखना आदि नामों से जाना जाता है। इसी अवधारणा को भारतीय दर्शन में **'दृश्यते अनेक इति दर्शनम'** कहा गया है।

अभिप्राय यह है कि **सतत जागरूक** रहकर मन की गतिविधियों का साक्षी भाव से अवलोकन करने पर मन के विकार दूर किए जा सकते हैं तथा मन का यह सूरज कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारे अंतःकरण, चेतना और आत्म–विश्लेषण में है जिससे साक्षात्कार एवं एकाकार करके मन को आलोकित किया जा सकता है।

चेतना का अंग्रेजी पर्याय Consciousness (कॉनशियसनेस) है जो लैटिन मूल के दो शब्द Con(कॉन) और scire (सायर) से मिलकर बना है। कॉनशियसनेस एक सरल दृष्टिकोण यह है कि इस बोध के आधार पर जीवन के विविध अनुभव रूप एवं आकार लेते रहते हैं। मानवीय सभ्यता में विज्ञान, कविताएं, इतिहास, साहित्य, दर्शन, धर्म आदि सब चेतना की गतिविधियों के ही परिणाम हैं। इसी संदर्भ में **हाथी की एक छोटी–सी कहानी** बहुत प्रासंगिक है–

एक शिशु हाथी को लोहे की मोटी–मोटी जंजीरों से बांध दिया गया। उस शिशु हाथी ने अपनी पूरी क्षमता से

*हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

जंजीर तोड़ने का प्रयास किया, किंतु असफल रहा। वह ऐसा ही प्रयास कई सालों तक करता रहा, किंतु हर बार उसे असफलता ही हाथ लगी। अंततः उसने प्रयास करना ही छोड़ दिया। अब वह एक वयस्क और पूर्ण क्षमता वाला हाथी है। आज वह लोहे की जंजीरों से नहीं, अपितु एक मामूली रस्सी से बंधा है, आज वह रस्सी से बंधा होने के बाद भी उसे तोड़ने का प्रयास नहीं कर रहा। जानते हो क्यों? वह ऐसा इसलिए नहीं कर रहा है क्योंकि बार–बार की असफलता से उसने यह मान लिया कि वह ऐसा नहीं कर सकता। बार–बार प्रयास के उपरांत भी जब सफलता नहीं मिली तो अब क्या मिलेगी अर्थात उस सक्षम एवं वयस्क हाथी ने यह स्वीकार कर लिया कि अब वह कभी मुक्त नहीं हो सकेगा।

आशय स्पष्ट है कि विपरीत परिस्थितियों में कभी भी हताश या निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि यही वह समय होता है, जब हम अपने अंतःकरण में झांकें और अपनी वास्तविक क्षमता को पहचानें। शक्ति के अजस्त्र स्त्रोत अदम्य साहस से तूफान के रुख को भी बदल देने वाले पुरुषार्थ का परिचय देते हुए स्वयं से यह कहें, "कठोर परिश्रम करने वालों को ही ईश्वर अपनाता है। जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं, उन्हीं की सहायता ईश्वर करता है, इसलिए **पुरुषार्थ** का ही आश्रय लो।"

"भले ही तुम्हारा सूर्य बादलों से ढक जाए,
आकाश उदास दिखाई दे
फिर भी धैर्य धरो हे वीर हृदय,
तुम्हारी विजय अवश्य होगी।"

उपनिषद् में **'अजोरणीयान् महतोयहीयान'** अर्थात् आत्मा को अणु से भी सूक्ष्म और महान बताया गया है तथा **'आत्मतत्त्व'** की व्याख्या में यह बताया गया है कि भौतिक जगत में सबकुछ अपने प्रयोजन के लिए ही प्रिय है। ईश्वर सत्य, जगत मिथ्या की यह परिभाषा अर्थात् असत्य वह जो कभी था, अब नहीं है और फिर नहीं हो जाएगा– जैसे सपना रात में सोए तब नहीं था, अब है और फिर नहीं हो जाएगा। ऐसे ही शरीर है, एक दिन नहीं था और एक दिन फिर नहीं होगा इसलिए आत्म के दर्शन में ही स्वमेव का दर्शन है:

"चली जो पुतली लौन की थाह सिन्धु की लेन।
आपही धुली पानी भई उलटी कहे कौ बैन।।"

अर्थात् यदि नमक की डेली पानी में डाल दी जाए तो उसमें ही घुल जाती है, फिर जहां–जहां से पानी चखेंगे आपको उसका स्वाद नमकीन ही लगेगा।

वर्तमान युग में मानव बुद्धि प्रधान हो गया है और वह विलासिता के साधनों में सुख व आनंद की खोज करता है जोकि भौतिकता का अर्थ मात्र है। यही बुद्धिवादी अतिरेक द्वन्द और बैचैनी को जन्म देते हैं जिसका समाधान ध्यान एवं योग के माध्यम से स्वयं को सामाजिक विषाक्तों से कुछ समय के लिए दूर ले जाकर अपने अंतस को नई ऊर्जा से भरकर दैदीप्यमान करने के प्रयास से होगा।

विशुद्ध भावुकता मनुष्य को क्षीण और अतिशय बौद्धिकता किंकर्तव्यविमूढ़ बनाती है इसलिए **गुरू, ज्ञान, चेतना और परमात्मा से एकाकार** जीवन के अहं रूपी तम को मिटाने वाले सूर्य हैं जो मन, बुद्धि और विश्वास में संतुलित समन्वय एवं समरसता स्थापित करके निरंतर कर्म करते रहो, पर आसक्त मत हो और कोई वस्तु तुम्हें कितनी भी प्यारी क्यों न हो उसे अपनी इच्छानुसार त्यागने की शक्ति अपने अंदर संचित रखो, की निश्छल निर्भोग्यता से व्यक्तित्त्व का उन्नयन करते हैं:

"ये किरणें, ये फूल
किन्तु अंतिम सोपान नहीं हैं,
उठना होगा बहुत दूर
ऊपर इनके तारों पर।"

पुस्तकें जीवंत देव प्रतिमाएं हैं जो ज्ञान का अक्षय भंडार हैं, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं, **"अप्प दीपो भव"** का सामर्थ्य प्रदान करती हैं और **एकांत का आनंद** प्रदान करती हैं क्योंकि जैसे जहां सूर्य की रश्मियां हो, वहां अंधकार का अस्तित्व नहीं रहता, उसी प्रकार पुस्तकों से प्रेम और पढ़ने का अभ्यास हो तो जीवन में जड़ता नहीं रहती। पुस्तकें वह विश्वस्त दर्पण हैं जो संतों और वीरों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क में करती हैं:

"जब साहित्य पढ़ो तब पहले पढ़ो ग्रंथ प्राचीन।
पढ़ना हो विज्ञान अगर तो पोथी पढ़ो नवीन।।"

अंत में, यदि मृत्यु अंतिम सत्य है तो जीवन भी एक अनूठी घटना है, यदि इस संसार में आए हो तो कुछ चिह्न छोड़ जाओ, अन्यथा तुम में और वृक्ष आदि में अंतर ही क्या? वे भी तो पैदा होते हैं, परिणाम को प्राप्त होते हैं और मर जाते हैं।

यूं ही जीते चले जाना, सांसें लिए जाना ही जीवन नहीं है.....**जीवन सृजन है। उत्सव है। उपहार है।** जीवन वहां है, जहां प्रेम की झील में अनुग्रह के फूल खिलते हैं। जीवन प्रवाह है, समस्त विपरीतताओं को अपने में समेट कर बहता हुआ, चिर पुरातन, चिर नवीन, अभी और यहीं वर्तमान के शाश्वत क्षण में।

जीवन एक अवसर है, इस परिवर्तनशील जगत को एकता और महत्त्व के सूत्र में गूंथते हुए सृजनात्मक होने का जिसे प्रो. शहरयार का शेर कुछ ऐसे व्यक्त करता है–

"इस अन्जुमन में आपको आना है बार-बार
दिवारे दर को गौर से पहचान लीजिए"

"उन्नत देश भारत देश"

जीतेंद्र कुमार*

देखो ये सबका साथी, भारत देश हमारा है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जहाँ रहते साथ-साथ हैं
सभी पर्व मनते हैं जहाँ, हाथों में देकर हाथ हैं,
किसी भी मांझी और लहर का, यही तो एक किनारा है
देखो ये सबका साथी, भारत देश हमारा है।

अंकीकरण को दिया बढ़ावा, हर क्षेत्र में जिसका हाथ है
दुनिया हुई चकित जब, 104 उपग्रहों का प्रक्षेपण किया एक साथ है,
हर दिन हर पल जिसने खुद को, नए रूप में ढाला है
देखो ये सबका साथी, भारत देश हमारा है।

योग शक्ति को किया उजागर, योग दिवस जो लाया है
जी-20 की करके मेजबानी, विश्वगुरू कहलाया है,
एकता, समता और समर्पण, की जिसमें अनूठी धारा है
देखो ये सबका साथी भारत देश हमारा है।

विज्ञान को जिसने दिया बढ़ावा, चाँद पर परचम लहराया है
खेल-कूद में भी जिसने अब, अपनी जड़ों को जमाया है,
दुनिया के हर कोने में अब तो, गूंजता एक ही नारा है
देखो ये सबका साथी, भारत देश हमारा है।

*तकनीकी सहायक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

दिल्ली की जीवनदायिनी – मेट्रो

प्रिया*

देश भर के कई शहरों में मेट्रो रेल की सेवा उपलब्ध है। मगर उनमें से सबसे ज्यादा चर्चा दिल्ली मेट्रो की होती है। दिल्ली मेट्रो के आने से वहां के यात्रियों का सफर और भी ज्यादा आरामदायक हो गया। देश का दिल माने जाने वाले दिल्ली की खास चीजों में यहां की मेट्रो सेवा शामिल है। दिन भर में लाखों यात्री मेट्रो की सेवा का आनंद उठाते हैं। आप में से कई लोगों ने दिल्ली घूमते समय मेट्रो की सवारी भी की होगी। दिल्ली की मेट्रो रेल यातायात की अत्याधुनिक सुविधा है। यह राजधानी के लाखों लोगों के लिए वरदान सिद्ध हुई है। इस सुविधा के होने से समय, श्रम और धन तीनों की बचत होती है। इससे सड़क यातायात का बोझ कुछ कम हुआ है। लोग बसों की भीड़–भाड़, धूल और उबाऊ यात्रा से बचकर अब मैट्रो रेल से आरामदायक ढंग से यात्रा करना पसंद करने लगे हैं।

वक्त पर ऑफिस पहुंचना हो या कोई जरूरी बिजनेस डील हो या फिर किसी मैरिज फंक्शन में ही क्यों ना जाना हो। दिल्ली–एनसीआर में रहने वाले अधिकांश लोग आजकल इन सभी जगहों पर शॉर्टकट तरीके से पहुंचने के लिए मेट्रो का ही इस्तेमाल करते हैं। मेट्रो रेल पूर्णतया स्वचालित एवं वातानुकूलित सुविधा है। यह नियमित अंतराल पर पूरे नियम से चलती है। स्टेशन एवं बोगियों में साफ–सफाई की अच्छी व्यवस्था है। इसमें यात्रा करने के लिए लोग टोकन खरीदते हैं अथवा अपेक्षाकृत सस्ते स्मार्ट कार्ड का प्रयोग करते है। मेट्रो रेल भारत की राजधानी की शान कही जा सकती है।

देश में सबसे पहले मेट्रो ट्रेन की शुरुआत कोलकाता में हुई थी। बता दें कि यह रेल सर्विस 24 अक्तूबर, 1984 में पहली बार शुरू की गई थी। भारत में बनी इस पहली मेट्रो रेल का उद्घाटन उस समय की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा किया गया था। दिल्ली की बात करें तो यहां पर मेट्रो कंपनी 'डीएमआरसी' की स्थापना 3 मई, 1995 में की गई थी। इस कंपनी की शुरूआत भारत सरकार और दिल्ली सरकार दोनो ने मिलकर की थी। बता दें, कि श्रीमान ई. श्रीधरन को कंपनी का चेयरमैन नियुक्त किया गया था, जिन्हें लोग मेट्रो मैन के नाम से भी जानते हैं।

साल 1998 से मेट्रो सर्विस के लिए काम शुरू कर दिया गया, मगर करीब 4 साल बाद 24 दिसंबर, 2002 में पहली मेट्रो को चलाया गया। दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन ने राजधानी में पहले चरण के तहत मेट्रो रेल की शाहदरा– तीस हजारी खण्ड सेवा शुरू की । इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने 24 दिसम्बर, 2002 को किया। मेट्रो रेल अत्याधुनिक संचार व नियंत्रण प्रणाली से सुसज्जित है। दिल्ली मेट्रो सेवाएं आमतौर पर सुबह 05:30 बजे शुरू होती हैं और 11:30 बजे तक चालू रहती हैं। हालांकि हर स्टेशन पर पहली ट्रेन के आने के समय में थोड़ा बदलाव हो सकता है। दिल्ली मेट्रो एयरपोर्ट लाइन सुबह 04:45 बजे शुरू होती है और 11:30 बजे तक सेवा चालू रहती है।

दिल्ली मेट्रो हर कैटेगरी के लोगों को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवा देती है। ऐसे में जो व्यक्ति अशिक्षित हैं, उन्हें भी कलर कोड से रूट समझने में आसानी होती है। हर लाइन को अलग रंग से पहचान दी गई है, जिससे यात्री अपनी लाइनों को आसानी से याद रख सकें। अभी तक इंद्रधनुष के रंगों पर मेट्रो के नाम रख दिए गए हैं।

*लोक उद्यम विभाग, सी जी ओ कॉम्पलेक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली

दिल्ली मेट्रो के अंतर्गत बहुत सी लाइन चलती हैं। आइए, अब आपको हर लाइन की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं:

1 **रेड लाइन**–रेड लाइन ये लाइन रिठाला से शहीद स्थल के बीच चलती है और इसके 29 स्टेशन हैं।

2 **येलो लाइन**– येलो लाइन समयपुर बादली से मिलेनियम सिटी सेंटर के बीच चलती है। वहीं, ये 37 स्टेशनों पर रुकती है।

3 **ब्लू लाइन**–ब्लू लाइन दो भागों में बंटी है। एक ब्लू लाइन द्वारका सेक्टर 21 से नोएडा सिटी सेंटर के बीच चलती है और दूसरी द्वारका से वैशाली की ओर चलती है, जो यमुना बैंक से अपना रूट बदलती है। इसमें कुल 58 स्टेशन हैं।

4 **वायलेट (बैंगनी) लाइन**–वॉयलेट लाइन कश्मीरी गेट से राजा नाहर सिंह (बल्लभगढ़) तक चलती है और कुल 34 स्टेशनों पर रुकती है।

5 **ग्रीन लाइन**-ग्रीन लाइन मेट्रो रूट दिल्ली के इंद्रलोक और हरियाणा के ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेशन के बीच चलती है और इसके कुल 24 स्टेशन हैं।

6 **ऑरेंज लाइन**–ऑरेंज लाइन एयरपोर्ट लाइन है, जो नई दिल्ली से यशोभूमि द्वारका सेक्टर 25 के बीच चलती है। ये कुल 7 स्टेशनों पर रुकती है।

7 **पिंक लाइन**-पिंक लाइन के कुल 38 स्टेशन हैं, जो मजलिस पार्क से शिव विहार के बीच चलती है।

8 **मैजेंटा लाइन**–मजेंटा लाइन जनकपुरी वेस्ट से बोटैनिकल गार्डन के बीच चलती है। इस लाइन पर कुल 25 स्टेशन हैं।

9 **ग्रे लाइन**–ग्रे लाइन डीएमआरसी की सबसे छोटी लाइन है, जो 4 स्टेशनों पर रुकती है। द्वारका से धंसा बस स्टैंड के बीच चलती है।

10 **एक्वा लाइन**– एक्वा लाइन दिल्ली में नहीं चलती, हालांकि डीएमआरसी के मेट्रो से इंटरलिंक है। ये लाइन नोएडा से ग्रेटर नोएडा के बीच चलती है। इसमें कुल 21 स्टेशन हैं। **रैपिड मेट्रो** हरियाणा राज्य के गुरुग्राम में चलती है। ये सिकंदरपुर मेट्रो स्टेशन पर दिल्ली मेट्रो की येलो लाइन से जुड़ती है। इसमें कुल 11 स्टेशन हैं।

11 **सिल्वर लाइन**– इस लाइन पर अभी काम जारी है ये तुगलकाबाद से दिल्ली एरोसिटी के बीच चलेगी इसमें कुल 15 स्टेशन होंगे ।

दिल्ली मेट्रो में विभिन्न सुविधाएं यात्रियों को उपलब्ध कारवाई जाती हैं, विवरण इस प्रकार हैं:

1. किस स्टेशन या रूट पर भीड़ की स्थिति क्या है? इसकी जानकारी डीएमआरसी मोबाइल ऐप पर यात्रियों को मिलेगी।
2. किसी रूट/लाइन पर कोई तकनीकी खामी है या फिर ब्रेकडाउन होने तक डीएमआरसी ऐप पर तुरंत जानकारी अपडेट कर दी जाएगी।
3. आपात स्थिति में दिल्ली में किस मेट्रो स्टेशन या रूट पर सेवाएं बाधित हैं, इसकी जानकारी भी यात्रियों को पलभर में मिल जाएगी।
4. यात्रा के दौरान कौन सा रूट लोगों के लिए बेहतर होगा? यह सुविधा भी मोबाइल ऐप में दी जाएगी।
5. भूख लगने की स्थिति में खाने की सुविधा कहां है? यह जानकारी भी यात्री को मिलेगी।

6. खरीदारी करने के लिए कहां पर सुविधा है या फिर मूवी हॉल की जानकारी भी होगी।

7. मेट्रो रूट मैप से भी यात्रियों का सफर आसान होगा।

8. वीकेंड्स के दिन मेट्रो से ट्रैवल करने पर आपकी थोड़ी सी बचत हो सकती है। टोकन पर छूट मिलती है और स्मार्ट कार्ड से पेमेंट करने पर भी छूट मिलती है। ऐसे में अगर आप कहीं छुट्टी में घूमने का प्लान बना रहे हैं तो परिवार के साथ मेट्रो के जरिए जा सकते हैं। इससे आपका किराया भी कम लगेगा और घूमना–फिरना भी हो जाएगा।

9. आप रेस्टोरेंट और बैंक्वेट हॉल के अलावा मेट्रो में भी कुछ अलग तरीके से बर्थडे या सालगिरह सेलिब्रेट कर सकते हैं। इसके लिए आपको हर घंटे के हिसाब से 5 से लेकर ₹10 हजार के बीच में खर्च करने पड़ेंगे। बुकिंग करने के बाद ₹ 20,000 सिक्योरिटी अमाउंट के तौर पर जमा करनी होगी जो आपको बाद में वापस कर दी जाएगी।

10. आप मेट्रो की एक कोच या पूरी एक ट्रेन भी बुक कर सकते हैं। इसके लिए कम से कम 45 लोग और ज्यादा से ज्यादा 150 लोगों की बुकिंग होनी चाहिए। रिजर्व कोच में सीआईएसएफ के जवान तैनात किए जाते हैं। स्टेशनों की दूरी के हिसाब से किराया लिया जाता है। इसके लिए आपको 40 से 50 हजार रुपए चुकाने पड़ सकते हैं।

11. मेट्रो स्टेशन और ट्रेन में दिव्यांग यात्रियों के लिए व्हीलचेयर उपलब्ध कराई जाती है। स्टेशन में एंट्री और एग्जिट के लिए ऑटोमेटिक फ्लैप गेट्स है ताकि दिव्यांग यात्रियों को किसी तरह की दिक्कत ना हो। इसके साथ ही ट्रेन में दिव्यांग यात्रियों के लिए सीट भी अरक्षित है।

महिला यात्रियों के लिए सुविधाएं

- हर डिब्बे में महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित होती हैं।
- अगर पुरुष महिला डिब्बे में यात्रा करते हैं, तो उन पर 250 रुपये का जुर्माना लगेगा।
- मेट्रो में शराब पीकर और उत्पात मचाने वालों को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाता है।
- स्टेशनों, प्लेटफार्मों और रेलगाड़ी के डिब्बों में सीसीटीवी कैमरे लगे हैं।
- सूर्यास्त के बाद के सुरक्षा बलों (CISF) द्वारा प्लेटफॉर्म पर पेट्रोलिंग।
- अपराधियों को पकड़ने के लिए मेट्रो में त्वरित प्रतिक्रिया टीम (Quick reaction team) तैनात है।
- महिला यात्रियों की सुरक्षा जांच के लिए स्टेशनों पर महिला CISF स्टाफ को तैनात किया गया है।
- इतना ही नहीं, महिला डिब्बे में यात्रा कर रहे पुरुष यात्रियों की जांच के लिए भी दल तैनात किए गए हैं।

अंत में यही कहना है कि दिल्ली मेट्रो यहाँ के यात्रियों के लिए निश्चित रूप से जीवन दायिनी है। दिल्ली मेट्रो यात्रियों की सहूलियत के लिए एवं मेट्रो को यात्री फ्रेंडली बनाने के लिए नित नए प्रयास कर रही है। मेट्रो के सुचारु रूप से संचालन के लिए हम सब का कर्तव्य है कि हम इसे स्वच्छ बनाएँ एवं मेट्रो के यात्रा नियमों का पालन करें।

विश्वास और अंधविश्वास

मीनाक्षी गम्भीर *

- इंसान बिना मुहूर्त के जन्मता है, बिना मुहूर्त के ही मर जाता है फिर भी हर कार्य के लिए मुहूर्त पूरी जिंदगी तलाशता है।
- अगर कुंडली देखकर किसी का भाग्य तय हो जाता तो कोई अपने बच्चे को महँगे–महँगे स्कूलों और यूनिवर्सिटी में नहीं पढ़ाता।
- बिल्ली के रास्ता काटने पर अगर आप रुक जायेंगे तो इतनी तेजी से आगे बढ़ रही दुनिया के कदमों से कदम मिलाकर कैसे चल पाएंगे।
- कोई भी दिन बुरा नहीं होता है, कोई कार्य सकारात्मक विचार के साथ दिल से करेंगे तो उसका परिणाम भी सुखद और अच्छा होगा।
- ताबीज और पत्थरों की अँगूठी पहनने से जीवन के दुःख दूर हो जाते, तो सच कहता हूँ दोस्त इस दुनिया में कोई भी दुःखी ना होता।

विभिन्न सोशल मीडिया पर हम ऐसे अनेक अनमोल विचारों और कथनों को पढ़ते हैं, जो अचानक ही हमें छू जाते हैं और हमारे दिलो–दिमाग पर हावी हो जाते हैं, क्योंकि इन सभी विचारों में एक खास बात होती है, ये वर्षों के अनुभवों के उपरांत लिखे एवं बोले गए होते हैं और हम इनसे तुरंत अपने आपको जोड़ (connect) लेते हैं। जी हाँ, आप ठीक समझ रहें हैं, आज इस लेख में मैं विश्वास और अन्धविश्वास पर ही बात करने जा रही हूँ। घर से निकलते हुए छींक आ जाना, बिल्ली का रास्ता काट देना, पूजा के दीपक का बीच में बुझ जाना, आधी रात में कुत्ते भौंकना या उल्लू का रोना इत्यादि बातें है, जिससे लोग सदियों से डरते आ रहे हैं। इन्हीं अंधविश्वासों ने हमें कोसों पीछे छोड़ रखा है।

शाब्दिक अर्थों में जाएँ तो अंधविश्वास का मतलब हुआ – आँखें मूंदकर विश्वास कर लेना या बिना जाने समझे विश्वास करना। तात्पर्य निकाला जा सकता है कि विषय को जाने समझे बिना, विश्वास कर लेना – संक्षिप्त में अंधविश्वास कहलाता है। अंग्रेजी में इसे ही Blind Faith के नाम से जाना जाता है। सामाजिक तौर पर पुरानी रूढ़िवादी विचारों से प्रभावित होकर किए जाने वाले कार्यों को जिसमें कारण अज्ञात होता है, हम अंधविश्वास कहते हैं।

मेरे पड़ोस में एक दादी आई हैं। बहुत केयरिंग। नमस्ते करो तो सिर पर बाकायदा हाथ फेरती हैं। आशीर्वाद देती हैं। एक दिन बाहर रखे मरवे के पौधों पर कहने लगी – बेटा इनको हटा दियो। ये घर के लिए अच्छे नहीं होते। मैं हंस पड़ी। कहा– कुछ नहीं होता। पर यह बात हफ्ते भर अटकी रही। और कुछ अटक जाए तो उसे निकाल देना बेहतर होता है। मेरे तर्क और अंधविश्वास गुत्थमगुत्था हो गए और इस तर्क ने अंधविश्वास को जिता दिया कि उखाड़ देंगे तो नुकसान क्या है? उसी गमले में नया पौधा लगा देंगे। और मैंने मरवे उखाड़ दिए। पहले मैं ऐसी नहीं थी पर अब अक्सर कुछ अंधविश्वासों के सामने मेरे तर्क घुटने टेक देते हैं। कई बार ये बात कचोटती है कि पढ़–लिखकर भी इनसे ऊपर नहीं उठ पाई। लेकिन यह मसला जितना सरल लगता है, उतना है नहीं। जब हम किसी भी बात पर बिना सोचे समझे विश्वास कर लेते है फिर चाहे वो किसी इंसान, वस्तु या भगवान से जुड़ी हो, कई बार आपने भी देखा होगा कि लोग अंधविश्वास को इतना ज्यादा मान लेते है कि कोई भी उनसे अंधविश्वास के नाम पर कोई भी गलत चीज करवा ले। अंधविश्वास एक ऐसी चीज है जो एक बार बन जाए तो कभी टूटती नहीं

*प्रधान निजी सचिव, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय

है। इसके विपरीत, यदि विश्वास टूट जाए तो फिर इसे वापस बना पाना ना के बराबर होता है। ध्यान देने योग्य बात यह है की यह दोनों चीजें बहुत अलग–अलग हैं। अंधविश्वास वह झूठ विश्वास और विचार हैं, जिनका कोई तार्किक आधार नहीं होता। लोग अनजाने डर के चलते इन्हें गढ़ते हैं। कहते हैं कि हमारे पुरखों ने किसी नुकसान से बचाने के लिए इन्हें बनाया होगा। इनकी खासियत ही यह है कि हमें पता होता है कि हम जो मान रहे हैं, वह संभव नहीं है, फिर भी हम मान लेते हैं।

भारत के कई प्रमुख टीवी चैनल और समाचार चैनलों पर स्वयंभू बाबाओं का दरबार लगा है। बड़ी संख्या में भक्तों के बीच चमत्कारी शक्तियों का दावा करने वाले शख्स सिंहासन पर विराजमान हैं। लोग प्रश्न पूछते हैं और बाबा जवाब देते हैं। सामान्य परेशानी वाले सवालों के असामान्य जवाब। एक छात्रा पूछती है, बाबा मैं आर्ट्स लूँ, कॉमर्स लूँ या फिर साइंस ? बाबा कहते हैं– पहले ये बताओ आखिरी बार रोटी कब बनाई है, रोज एक रोटी बनाना शुरू कर दो। एक और हताश एवं परेशान व्यक्ति पूछता है, बाबा नौकरी कब मिलेगी? बाबा कहते हैं क्या कभी साँप मारा है या मारते हुए देखा है? ये है बाबा का दरबार। जनता मस्त है और बाबा भी। बाबा की झोली लगातार भर रही है। बाबा के नाम प्रॉपर्टी भरमार है, बड़ी–बड़ी गाड़ियाँ हैं। कई अखबार दावा करते हैं कि बाबा के बैंक खाते में हर दिन एक करोड़ रुपए आते हैं। गरीब से गरीब और धनी से धनी बाबा के लिए अपनी संपत्ति कुर्बान कर देना चाहता है। कितनी अजीब बात है कई समाचार चैनल बाबा की बैंड बजाने पर तुले हैं और उन्हीं के चैनल पर बाबा अपने भक्तों को बेमतलब का ज्ञान बाँट रहे हैं। बाबाओं को लेकर जनता का प्रेम नया नहीं है। कभी किसी बाबा की धूम रहती है तो कभी किसी बाबा की। ये बाबा भी बड़ी सोच–समझकर ऐसे लोगों को अपना लक्ष्य बनाते हैं, जो असुरक्षित हैं। आस्था और अंधविश्वास के बीच बहुत छोटी लकीर होती है, जिसे मिटाकर ऐसे बाबा अपना काम निकालते हैं। इनका निशाना हैं मध्यमवर्ग, जो बड़े–बड़े स्टार्स, चुनाव जीतने के लिए बाबाओं के चक्कर लगाते नेता और व्यापारिक घराने के लोगों की ऐसी श्रद्धा देखकर इन बाबाओं की शरण में आ जाता है। राजनेता हों या नौकरशाह– इन बड़े लोगों ने जाने–अनजाने में इस अंधविश्वास को बल दिया है। दरअसल समृद्धि अंधविश्वास भी लेकर आती है, जिसकी वजह है अपना रुतबा, अपनी दौलत कायम रखने का लालच। जो जितना समृद्ध, वो उतना ही अंधविश्वासी। फिर समृद्धि के पीछे भागता मध्यमवर्ग, इस मामले में क्यों पीछे रहेगा?

मैं मानती हूँ कि आस्था और अंधविश्वास में बहुत थोड़ा ही फर्क है– लेकिन यह भी सच है कि जब विज्ञान और व्यवस्था किसी के सामर्थ्य से बाहर हो जाती है तो चमत्कार करने वाले बाबा व्यक्ति की आखिरी उम्मीद बन जाते हैं। देश में कितने ही सौतन–दुश्मन से छुटकारा, बीमारी, विदेश यात्रा, मनचाहा प्यार आदि को गारंटी से मुहैया कराने वाले कितने ही बाबाओं की खूब मोटी कमाई हो रही है क्योंकि गरीब बड़े अस्पतालों में इलाज नहीं करा सकता, ऊँची फीस देकर मुकदमा नहीं लड़ सकता। कई बार ये अंधविश्वास हमारे भीतर इतनी गहराई तक उतर जाते हैं कि जानलेवा साबित हो सकते हैं। दिल्ली का बुराड़ी जैसे केस ही देख लें, जहां परिवार के 11 लोगों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली थी। अंधविश्वास से मुक्ति पाना थोड़ा कठिन हो जाता है क्योंकि जब कोई इंसान इस चीज के घेराव में आ जाता है तो वह उसे इस कदर तक घेर लेती है, कि जब तक वह इंसान अपने अंदर से इस चीज को दूर करने की जिज्ञासा नहीं

पैदा कर लेता तब तक वह अंधविश्वास को दूर नहीं कर पाता। फिर चाहे उसे कोई कितना भी क्यों न समझा ले, अंधविश्वास पर काबू पाना उसके लिए मुश्किल होता है। परन्तु फिर भी कुछ उपाय है जिन्हें अगर ईमानदारी से अपनाया जाए तो यकीन मानिये अंधविश्वास से मुक्ति मिल जाएगी। कोई कितना भी ज्ञानी क्यों न हो हमे उस पर आँख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। तर्क और विज्ञान के अनुसार सोचना जरूरी होता है, सिर्फ बातें मान लेना गलत है। अपनी सोच को तर्कवादी रखना, अपनी मानसिकता बदलना बहुत जरूरी है क्योंकि भाग्य–दुर्भाग्य विधि का विधान है, इस पर किसी का काबू नहीं है फिर चाहे वो कितना ही ज्ञानी हो। यदि अंधविश्वास से मुक्ति पाना है तो इसके लिए हमें खुद पर विश्वास रखना जरूरी है, अपने कर्म/कार्यों पर विश्वास रखना जरूरी है। यदि हमें खुद पर ही विश्वास नहीं होगा तो दूसरा फिर हमारे लिए कुछ नहीं कर सकता। दूसरों की बातें मानने से अच्छा अपने कार्य पर विश्वास रखे। सकारात्मक सोचें और नकारात्मक चीजों का अपने आप पर प्रभाव न पड़ने दें। अपनी मेहनत, कठिन परिश्रम, लगन और दृढ़ संकल्प से अपनी मंजिलों को पाने का प्रयत्न करे न कि किसी टोने–टोटको पर। कोई भी व्यक्ति किसी भी बात को लेकर अपने अंदर किसी कमी या कमजोरी को महसूस करता है तो उसे डर लगता है और उसके अन्दर नकारात्मक विचार आने लगते है। जब व्यक्ति के अन्दर डर आ जाता है तो वह उसके अन्धविश्वास का कारण बनता हैं। तभी पाखंडी बाबा लोगों की कमियों का फायदा उठाते है इसलिए अपनी सोच सकारात्मक रखना बहुत जरूरी है। कई बार व्यक्ति के जीवन मे ऐसे पड़ाव आ आते हैं जहां पर निराश होना पड़ता है। असफल होने से कभी निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है। जो लोग अपनी जिंदगी में मंजिलों को पाने की कोशिश करते हैं वो ही लोग इन असफलताओं से आगे बढ़ते हैं। इसलिए बिना घबराहट के पूरी लगन और मेहनत से आगे बढ़ने का प्रयास करें। यह मेहनत जीवन में जरूर रंग लाएगी न कि किसी पर अन्धविश्वासी होने का जूनून।

यदि हम इन उपायों पर अमल करेंगे तो जल्द ही अन्धविश्वास से मुक्त हो जायेगें। जीवन में कुछ छोटी छोटी चीजों पर ध्यान दें और कभी भी अपने विश्वास को अन्धविश्वास न बनने दे। व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है। मेरा पसंदीदा वाक्यांश है– "Believe (विश्वास) everything but Trust (आँख मूँद कर विश्वास) nothing."

बाबाओं का बाजार गर्म है। मुझे इस बात की फिक्र है कि बाबा बनने का कोई कॉलेज न खुल जाए या मैनेजमेंट का कोर्स न शुरु हो जाए इसलिए मैं तो कोशिश कर ही रही हूँ की अन्धविश्वास से दूरी बनाये रखूँ–आप भी करिये। मिली–जुली कोशिश जरूर रंग लाएगी।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है –

सुमित्रानंदन पंत

निगम की कीट नियंत्रण सेवा

भारत सरकार द्वारा 23.03.1968 की अधिसूचना के माध्यम से केंद्रीय भंडारण निगम को अपने गोदामों के बाहर पीड़क नियंत्रण सेवा प्रदान करने के लिए अधिकृत किया गया था। लगभग 65 वर्ष के अंतराल में केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा कीट नियंत्रण सेवा का न केवल उच्चानुशीलन किया गया, बल्कि देश के कोने– कोने में पीड़क नियंत्रण सेवा प्रदान करके पीड़क मुक्त वातावरण की संकल्पना को साकार किया गया है। पीड़क नियंत्रण सेवा के अंतर्गत केंद्रीय भंडारण निगम देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों, संगठनों, कार्यालयों, अस्पतालों, बैंकों आदि को सेवाएँ प्रदान कर रहा है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा COVID–19 महामारी के दौरान जन सामान्य को भी संक्रमण मुक्त वातावरण प्रदान करके इसके प्रकोप को कम करने में अपना अंशदान दिया गया।

- केंद्रीय भंडारण निगम, तकनीकी रूप से समृद्ध, अपने कर्मचारियों के माध्यम से पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए पीड़क नियंत्रण सेवा प्रदान करता है ।
- रेल यात्रियों को पीड़क मुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों तथा कोचेस (यात्री बोगियों) का विसंक्रमण केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा किया जाता है।
- केंद्रीय भंडारण निगम आयात निर्यात के क्षेत्र में संघरोध व्यवस्था के तहत विसंक्रमण सेवाएँ प्रदान करता है जिससे किसी भी बाहरी पीड़क के आवागमन को रोका जा सके।
- प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा एक महत्त्वपूर्ण कदम उठाते हुए दिल्ली सरकार के अंतर्गत धान की पराली पर बायोडिकम्पोजर का प्रयोग कर पराली जलाने की समस्या के निदान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया है।
- निगम विभिन्न नगर महापालिकाओं के साथ मिलकर पीड़क मुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए फोगिंग आपरेशन का संचालन करता है। इसमें अहमदाबाद रीजन अग्रणी है।
- वेअरहाउस के बाहर खाद्यान परिरक्षण में भी केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। जिसके अंतर्गत निजी पार्टियों/संस्थानों द्वारा भंडारित स्टॉक के परिरक्षण का कार्य सम्पूर्ण भारत में बड़े स्तर पर केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा देखा जा रहा है।
- दीमक के प्रकोप से बचाने के लिए विभिन्न संस्थानों, अस्पतालों आदि को केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा सेवाएँ प्रदान की जा रहीं हैं। केंद्रीय भंडारण निगम की यह सेवा आमजन के लिए बहुत ही उचित दरों पर उपलब्ध है।
- इसके अतिरिक्त वेक्टर नियंत्रण तथा घरेलू पीड़कों के नियंत्रण के लिए भी कारगर तरीके से उपचार दिया जाता है।
- विमानों तथा विमानपत्तनों को पीड़क मुक्त रखने के लिए भी विभिन्न विमानपत्तनों तथा एयरलाइन्स को सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

*तकनीकी विभाग के सौजन्य से

ये तेरा डर, ये मेरा डर

रोहित उपाध्याय*

डर क्या होता है? शायद यह बताने की आवश्यकता नहीं हैं। डर हर किसी को लगता है। गला सब का सूखता है। बस कुछ लोग दूसरे के सामने बहादुर बनने के लिए अपना डर सबको बताते नहीं। दुनिया में शायद ही कोई व्यक्ति या प्राणी होगा जिसने अपने जीवन में कभी न कभी

डर का अनुभव न किया हो। आग, पानी, तूफान, बिजली और भूकंप जैसी प्रकृति में होने वाली घटनायें मनुष्य को सदा से ही डराती रही हैं। जिन चीजों के बारे में हम नहीं जानते उनसे हमें और भी अधिक डर लगता है। बचपन से ही हमें इतना डराया जाता है कि डर हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन जाता है। हर किसी का अपना–अपना डर होता है और हर किसी के लिए इस डर की परिभाषा भी अलग–अलग होती है। कोई भीड़ से डरता है तो कोई अकेलेपन से। किसी को थप्पड़ से नहीं, प्यार से डर लगता है। बचपन में किसी को भूत से डर लगता है, किसी को नहाने से तो किसी को स्कूल जाने से। गणित तथा अंग्रेजी जैसे विषयों का डर तो न जाने कितने बच्चों को दसवीं कक्षा भी पास नहीं करने देता है। गाँव के बच्चे जहां सांप–बिच्छू और आवारा कुत्तों से नहीं डरते वहीं शहरी बच्चों को कॉकरोच और छिपकली से भी डर लगता है।

'द अल्केमिस्ट' के लेखक ब्राजील के पाउलो कोइलो के अनुसार व्यक्ति मूलतः दो प्रकार के डर साथ लेकर पैदा होता है। पहला गिरने का डर और दूसरा तेज आवाज का डर। ये दोनों डर हमारा मन नहीं बल्कि हमारा तंत्रिका तंत्र महसूस करता है। इनके अतिरिक्त व्यक्ति अपने सभी डर जीवन के अपने अनुभवों के साथ ही अर्जित करता है। वस्तुतः मृत्यु का डर भी जन्मजात नहीं होता।

जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं, हमारे डर और इसके प्रकार भी बदलने लगते हैं। एक छोटा शिशु अपनी माँ के आँचल में अपने सब डर भूल कर रात को चैन की नींद सोता है। माँ के पास न होने से बच्चा अंधेरे से भी डरने लगता है। जन्म से मृत्यु तक डर हमारा पीछा नहीं छोड़ता। डर की परिभाषा हर किसी के लिए अलग–अलग होती है। उम्र के हर पड़ाव में डर अनेक रूप में हमारे सामने आता है। बचपन के डर अलग होते हैं और युवावस्था तथा वृद्धावस्था के डर अलग प्रकार के होते हैं। जब बच्चा चलना सीखता है तो उसे गिरने से बचाने के लिए बहुत से हाथ होते हैं जो उसे गिरने से पहले ही थाम लेते हैं और इसी भरोसे पर वह डरते के बावजूद भी अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है। बड़ा होने के बाद उसके डर अपने हो जाते हैं, उसे डर से बचाने वाले लोगों की संख्या धीरे–धीरे कम होने लगती है। इस उम्र में केवल स्वयं का आत्मविश्वास ही डर से लड़ने में सहायता करता है। उम्र बढ़ने के साथ ही बीमारियों और मृत्यु का डर सताने लगता है।

हमारे भारतीय समाज में लोगों को सबसे ज्यादा डर उन चार लोगों से लगता है जिन्हें न उन्होंने कभी देखा होता है और न ही वे उन्हें जानते हैं। परिवार में

*भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

कुछ भी ऊंच–नीच हो जाने पर हमारे मन में सबसे पहले यही आता है कि चार लोग क्या कहेंगे? कार्यालय में हमें अपने उच्च अधिकारी से डर लगता है लेकिन हो सकता है यही उच्च अधिकारी घर में अपनी पत्नी से डरता हो। इसी प्रकार किसी सास को अपनी बहू से और किसी बहू को अपनी सास से डर लगता है। मरने से तो हर किसी को डर लगता है। जो लोग हमें बेहद शक्तिशाली लगते हैं वो भी अपनी सुरक्षा के लिए बॉडीगार्ड रखते हैं। किसी को जेड प्लस सुरक्षा चाहिए तो किसी का काम केवल दो–चार सुरक्षाकर्मियों से ही चल जाता है। जिन नेताओं के पास जाने में आम मतदाता को डर लगता है उसी नेता को चुनाव के समय मतदाता से डर लगने लगता है कि पता नहीं उसकी कुर्सी बरकरार रहेगी या नहीं। जो हीरो हमें सिनेमा के परदे पर अपनी बहादुरी दिखा रहा होता है वह भी अपनी फिल्म फ्लॉप होने से डरता है।

डर का जन्म अक्सर भविष्य की संभावनाओं से ही होता है। कहीं मैं परीक्षा में फेल न हो जाऊँ? कहीं मुझे नौकरी न मिली तो? कहीं मेरी नौकरी न चली जाए? कहीं मुझे कोई गंभीर बीमारी न हो जाए? कहीं मेरा एक्सीडेंट न हो जाए? कहीं मैं लिफ्ट में न फंस जाऊँ? कहीं मेरा पैसा न चोरी हो जाए? कहीं बाढ़ से फसल न खराब हो जाए? कहीं मुझसे कोई गलती न हो जाए? इस प्रकार डर वर्तमान के स्थान पर अधिकांशतः कल्पना पर ही आधारित होता है। यदि आपको कोरोना का समय याद हो तो एक बार फिर से अपने और अपने आसपास के लोगों के बीच फैले डर के माहौल को याद करिए। घर–परिवार में किसी को जरा सी छींक आते ही डर लगने लगता था कि कहीं कोरोना हमारे घर में तो नहीं आ गया। कोरोना के मरीजों से उनके पड़ोसी ही नहीं बल्कि कहीं–कहीं परिवार के लोग भी डर कर दूरी बना रहे थे। पूरी दुनिया मास्क लगाए घूम रही थी और लगता था कि शायद कुछ दिनों में ही ये दुनिया समाप्त हो जाएगी। उस समय भी कोरोना की बजाय उसके डर से न जाने कितने लोगों ने अपनी जान गवां दी। शहरों में लॉकडाउन और कोरोना के डर से अपने परिवारों से मिलने के लिए बेताब न जाने कितने मजदूर पैदल ही सड़कों पर निकल पड़े और विभिन्न दुर्घटनाओं में मारे गए। कई स्थानों से यह भी खबर आई कि लोगों ने कोरोना हो जाने के केवल डर मात्र से आत्महत्या कर ली। धीरे–धीरे समय के साथ कुछ माह में दुनिया फिर से पटरी पर आ गई और आज कोरोना केवल एक साधारण सर्दी–जुकाम बन गया है। अब कोरोना होने पर कोई डरता नहीं है। न कोई मास्क लगाता है और न ही वैक्सीन लगवाता है।

कुछ लोग डरते हैं तो कुछ उसी डर पर विजय प्राप्त कर चुके होते हैं। कोरोना काल में जहाँ लोग अपने ही परिवार के मरीज से डर रहे थे वहीं कुछ समाजसेवी लोग समाज की सेवा कर रहे थे। स्वास्थ्यकर्मी बिना डरे अस्पतालों में डटे हुए थे। इसी प्रकार जहाँ कुछ लोग आग से डरते हैं तो कुछ आग से बचाने वाले भी होते हैं, कुछ पानी से डरने वाले होते हैं तो कुछ तेज बहाव में बहते इंसान को भी अपनी जान की बाजी लगाकर बचा लाते हैं, कुछ को ऊंचाई से डर लगता है तो कुछ आसमान की ऊंचाई से पैराशूट के सहारे जमीन पर छलांग लगाते हैं। किसी को मरने से डर लगता है तो कुछ देश के लिए हँसते–हँसते अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं। कुछ लोगों को मंच पर लोगों से आँखें मिलाने में भी डर लगता है तो कोई मंच से नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेता है।

कोई डर स्वभाविक होता है तो कोई अस्वाभाविक। स्वभाविक डर हमें कोई भी काम अच्छे से करने की प्रेरणा देता है। जैसे परीक्षा का स्वभाविक डर हमें उसकी तैयारी ठीक से करने में मदद करता है तो अस्वाभाविक डर दिमाग की बत्ती गुल कर देता है। स्वाभाविक डर हमें किसी भी संभावित खतरे के लिए पहले से ही आगाह कर देता है और हम उस खतरे से निबटने के लिए पूरी तरह से तैयार रहते हैं। अस्वाभाविक डर का एक साधारण–सा उदाहरण है रस्सी को भी सांप समझकर डर जाना। हर सांप जहरीला नहीं होता इसलिए सांप पकड़ने वाले बिना डरे पूरी सावधानी के साथ सांप को बिना डरे पकड़ लेते हैं। डर हमारे भ्रमित मन की उपज है। हम उस चीज को

लेकर परेशान होते हैं जो केवल सिर्फ कल्पना होती है कि कहीं ऐसा न हो जाए। परीक्षा में असफल होने के केवल डर मात्र से ही हर साल सैकड़ों विद्यार्थी आत्महत्या कर लेते हैं।

डर हमेशा हानिकारक नहीं होता। डर के अपने लाभ भी हैं। डर के बिना कोई भी कार्यालय नहीं चल सकता। अधिकांश कॉर्पोरेट फीडबैक और प्रदर्शन मूल्यांकन कर्मचारियों के बीच डर पैदा करने के आधार पर बनाए जाते हैं। स्टाफ रेग्युलेशन ऐक्ट न हो तो कर्मचारी अपने से उच्च अधिकारी की बात ही न मानें। स्कूल में यदि अध्यापक का डर न हो तो बच्चों में अनुशासन खत्म हो जाता है। जहाँ पुलिस का डर नहीं होता वहाँ अपराध बढ़ जाते हैं। यदि अपने प्रतिद्वंदी का डर न हो तो बहुत सी कंपनियां ग्राहकों तक लाभ ही न पहुँचने दें ।

डर बिकाऊ भी है और अनेक कंपनियाँ केवल हमारे डर को भुना रही हैं। एक ठंडा पेय तो सिर्फ इसी टैगलाइन के साथ बेचा जा रहा है कि डर के आगे जीत है। डर के आधार पर ही बीमा कंपनियों का कारोबार चलता है। बीमा कंपनियाँ जीवन, चिकित्सा और अन्य बीमा उत्पाद बेचने के लिए डर का ही सहारा लेती हैं। आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर हमारे परिवार का क्या होगा यह सोच हमें जीवन बीमा लेने के लिए प्रेरित करती है। परिवार में किसी को कोई बीमारी होने पर चिकित्सा के लिए चिकित्सा बीमा बेचने के लिए बीमा कंपनियाँ हर तरह के हथकंडे अपनाती हैं। इसी प्रकार घर, दुकान, कार्यालय और फैक्ट्री के लिए भी आग, भूकंप और चोरी इत्यादि से होने वाली हानि की प्रतिपूर्ति के लिए भी बीमा कंपनियाँ अपने उत्पाद बेचती हैं। इसी प्रकार क्रिकेट और फुटबॉल जैसे बड़े मैच का भी बीमा किया जाता है ताकि बारिश या किसी अन्य आकस्मिक परिस्थिति के कारण मैच रद्द हो जाने पर आयोजनकर्ता के नुकसान की भरपाई हो सके। हमारे निगम के सभी कार्यालयों का तथा गोदामों का भी आकस्मिक दुर्घटनाओं से होने वाली हानि की भरपाई करने के लिए बीमा किया जाता है। हथियार बनाने वाले अमेरिका, फ्रांस, चीन और रूस जैसे तमाम देश भारत को पाकिस्तान का और पाकिस्तान को भारत का डर दिखाकर हरदम अपने–अपने हथियार और लड़ाकू विमान बेचने की जुगाड़ में रहते हैं।

इसी डर से हमारे निगम का भी काम–काज चलता है। यदि अनाज के खराब होने का डर न हो तो कौन हमारे गोदाम में अनाज रखेगा? यदि चूहे, दीमक और कॉकरोच का डर न हो तो कोई हमारी कीट–नियंत्रण सेवा का लाभ क्यों लेगा? इस प्रकार डर हमारे निगम की प्रगति में भी एक सहायक की भूमिका निभाता है।

शिक्षा का क्षेत्र भी एक ऐसा ही क्षेत्र है जहाँ कोचिंग संस्थान आपके डर का पूरा फायदा उठाते हैं कि अगर आपने अपने बच्चे को उनकी कोचिंग नहीं दिलवाई तो आपका बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर नहीं बन पाएगा। कोरोना महामारी के समय तो डर को बेचने में कोई भी पीछे नहीं रहा। मास्क और हैंड सैनिटाइजर बनाने वालों की तो बाढ़ सी आ गई थी। जहाँ कुछ लोग ऑक्सीजन सिलिन्डर ऊंची कीमत पर बेच कर लोगों के डर का लाभ उठा रहे थे तो वहीं कुछ लोग बिना किसी डर के नकली इंजेक्शन और दवाइयाँ बेचकर लोगों की जान से खिलवाड़ कर रहे थे। इसी तरह अस्पताल और डॉक्टर भी आपके डर का फायदा उठाने में हिचकिचाते नहीं हैं। आवश्यकता न होने पर भी बीमारी का डर दिखाकर आपको अस्पताल में भर्ती कर दिया जाता है और अनावश्यक टेस्ट लिख दिए जाते हैं।

बॉलीवुड में एक निर्माता थे रामसे ब्रदर्स, जो डरावनी फिल्में बनाकर ही पैसे कमाते थे। हॉलिवुड हो या बॉलीवुड डरावनी फिल्मों का एक विशेष दर्शक वर्ग है जो ऐसी ही फिल्में देखना पसंद करता है। भूत–प्रेत और आत्मा वाले धारावाहिक दिखाकर न जाने कितने टीवी चैनल कमाई कर रहे हैं।

हाल ही में कहीं पढ़ने को मिला कि सदी के महानायक अमिताभ बच्चन को भी डर लगता है। अब

कौतूहल हुआ कि भला इन महाशय को किसका डर है? पढ़ने पर पता चला कि हमारे महानायक को ए. आई. अर्थात आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स से डर लगता है। इसी प्रकार जब कंप्यूटर आया था तो लोगों को उससे भी डर लगता था। कोई भी नई चीज अक्सर डर पैदा करती है। वृद्धावस्था में तो और भी अधिक डर लगता है क्योंकि हम हर नई तकनीक से जल्दी अभ्यस्त नहीं हो पाते हैं। अपनी स्वयं की बुद्धि लगाकर इंटरनेट के माध्यम से आज अनेक जालसाज लोगों को ठग रहे हैं। यह सोच कर भी डर लगता है कि जब इनकी ठग बुद्धि को कृत्रिम बुद्धि का साथ मिलेगा तो न जाने ये लोग कितनी बड़ी जालसाजी को अंजाम देंगे। अमिताभ बच्चन की आवाज और चेहरे का आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स के माध्यम से दुरुपयोग किया जा सकता है। उनका डर पूरी तरह से जायज भी है।

मैं न तो अमिताभ बच्चन हूँ और न ही कोई बड़ा लेखक और कवि लेकिन जब से उनके डर का पता चला है मुझे भी डर लग रहा है कि कहीं कोई मेरे लेख चोरी करके अपने नाम से न छाप दे। जब यह लेख लिखने का विचार पहली बार मन में आया था तो सोचा कि मैं यह लेख लिखने में क्यों अपनी बुद्धि लगा रहा हूँ? जब कृत्रिम बुद्धि मेरा काम कर सकती है तो क्यों न उसका ही उपयोग किया जाए लेकिन डर लगा कि कृत्रिम बुद्धि का उपयोग करने से मैं कहीं भविष्य में अपनी बुद्धि का प्रयोग करना ही न भूल जाऊँ इसलिए कृत्रिम बुद्धि का सहारा नहीं लिया।

कृत्रिम बुद्धि की परीक्षा लेने के लिए मैंने डरते–डरते ChatGPT से पूछा– डर कितने प्रकार के होते हैं।

परम ज्ञानवान कृत्रिम बुद्धि कहती है :

डर के प्रमुख प्रकार निम्न हैं :

- **भौतिक भयः** इसमें स्थितियों जैसे आग, भूकंप, बारिश आदि होने वाले खतरों से जनहित या जीवित रहने की प्रेरणा होती है।
- **मानसिक भयः** इसमें व्यक्ति के दिमाग में उत्पन्न भय होता है जैसे डरावनापन, अंधकार, उदासीनता आदि।
- **सामाजिक भयः** सामाजिक स्थितियों या पारिवारिक दृष्टियों से उत्पन्न होता है जैसे की समाज में निरादर, परिवार में अविश्वास या सामाजिक प्रतिशोध से भय आदि
- **अज्ञात भयः** कुछ लोगों को किसी अनजाने डर से घबराहट होती है जो कि व्यक्ति के विचारों या अनुभवों से जुड़ा होता है।
- **भावनात्मक भयः** इसमें व्यक्ति के भावनात्मक स्थितियों से उत्पन्न भय होता है जैसे कि विरह, विपत्ति या असफलता से भय आदि।
- **विशेष परिस्थितियों से उत्पन्न भयः** कुछ लोगों को खास स्थितियों से या वस्तुओं से भय होता है, जैसे कि पर्यावरणिक अत्याचार, उच्च चिंतात्मक दबाव या जनहित या सुरक्षा से जुड़ी कमी से भय आदि।

इस प्रकार के डर भिन्न–भिन्न कारणों से उत्पन्न होते हैं और व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। लोगों को इन दर्शनों का सामना करने के लिए सामाजिक समर्थन, व्यक्तिगत विकास और मानसिक स्वास्थ्य की जरूरत होती है।

कृत्रिम बुद्धि मेरे टेस्ट में तो फिलहाल फेल हो गई है। अभी हिन्दी भाषा पर अपनी पकड़ नहीं बना पाई है। शायद यह अंग्रेजी में सोचती है और हिन्दी में उसका अनुवाद परोस देती है। मुझे डर तब लगेगा जब यह हिन्दी में सोचने लगेगी।

आज तक मैंने भंडारण भारती के लिए कभी कविता नहीं लिखी। मैंने सोचा क्यों न कृत्रिम बुद्धि से ही डर पर एक कविता लिखवाई जाए। मैंने ChatGPT पर लिखा डर पर हिन्दी भाषा में एक कविता लिखो। कुछ ही क्षणों में कविता कंप्यूटर के स्क्रीन पर थी। आपको जिस भी विषय

पर कविता चाहिए कृत्रिम बुद्धि पलक झपकाते ही आपके लिए कविता लिख देती है। क्या कविता पढ़कर आप कह सकते हैं कि यह मैंने अपनी बुद्धि से नहीं लिखी बल्कि कृत्रिम बुद्धि से लिखवाई है।

पढ़ने और देखने में लगता है किसी बहुत बड़े नहीं तो किसी छोटे–मोटे कवि की कविता है। अब यह कविता पढ़कर तो डर लगना स्वभाविक ही है कि कृत्रिम बुद्धि मुझसे अच्छी कविता लिख सकती है। जैसे–जैसे कृत्रिम बुद्धि का विकास होगा किसी भी पत्रिका के संपादक मण्डल को लेखकों से उनकी कविता और लेख मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। यदि लेखक झूठा मौलिकता प्रमाण–पत्र लगाकर दे दे तो कैसे पता चलेगा कि लेख या कविता लेखक/कवि ने अपनी बुद्धि के बजाय कृत्रिम बुद्धि की सहायता से लिखा है। बस मेरा तो इतना सा ही डर है। यह डर स्वभाविक है या अस्वाभाविक? फैसला आप पर छोड़ता हूँ।

डरो मत, अब और नहीं,
सृजनात्मकता की बुलंदी पर चढ़ो।
सपनों के संग, हिम्मत से चलो,
चिंगारियों की राहों पर आगे बढ़ो।

डरो मत, समय का सामना करो,
उसके साथ चलकर, सीमाओं को छू लो।
संघर्षों को स्वीकार करो, मजबूती से खड़े हों,
जीत की खुशबू से अपने आप को भर लो।

डरो मत, आगे बढ़ो, उन्नति करो,
सपनों को साकार करो, आगे बढ़ो।
संघर्षों को सामना करो, विजय की ओर बढ़ो,
डर को अपनी उत्साह से हराओ, डरो मत।

डरो मत, अपने अधिकार पर जोर डालो,
उत्साह से नई दिशा चुनो।
आसमान की उंचाइयों को छूते हुए,
सपनों को हकीकत में बदलो।

डरो मत, जिन्दगी का मजा लो,
हर दिन को खुशियों से भरो।
सपनों को पंख लगाओ, उड़ान भरो,
डर को चित्त के कोनों में भगाओ।

साष्टांग प्रणाम

देवराज सिंह 'देव'

पृथ्वी, जल, वायु
और अग्नि, आकाश,
पांचों तत्व प्रतीक हैं
प्राकृतिक श्रद्धा के साथ,

धरती को स्पर्श करूं
टेक हथेली घुटने माथ,
दसों दिशा प्रतीक हैं
जुडवां दोनों हाथ,

तन,मन,धन अर्पित करूं
दिशा तत्व के साथ,
बुद्ध समर्पित में रहूं
करूं साष्टांग प्रणाम,

सेवानिवृत्त वेअरहाउस प्रबंधक, नि. मुरादनगर, गाजियाबाद

खिलखिलाकर हँसिए, मुस्कुराइए और स्वस्थ रहिए

–डॉ. मीना राजपूत*

मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है। वह अपने परिजनों, प्रियजनों, मित्रों, संबंधियों, समाज के बिना नहीं रह सकता। सभी के साथ उठना–बैठना, गपशप/बातचीत करना, विचार–विमर्श करना उसका मौलिक स्वभाव व जीने की मूलभूत आवश्यकता है। वह बोलकर, लिखकर, स्पर्श कर, हाव–भाव से, इशारे से अपनी भावनाएं व्यक्त करता है। हर व्यक्ति की अपनी भावनाओं को प्रकट करने की अपनी विशिष्ट शैली, भाव–भंगिमा और संप्रेषण क्षमता होती है, तथापि किसी बात पर प्रतिक्रिया स्वरूप उसके हँसने, रोने, चिल्लाने, गुस्सा होने, शांत रहने से भी हरेक की मनोभावना व मनोदशा का मोटे तौर पर अंदाजा लगाया जा सकता है, जो मूलतः उसकी उस समय विशेष की परिस्थितियों और मानसिक अवस्थाओं का प्रतिबिंब होती हैं।

मनुष्य की इन आत्मिक व आंतरिक भावनाओं की विभिन्न सांकेतिक अभिव्यक्ति को साहित्य में 'नव रस' कहा जाता है। रस नौ प्रकार के होते हैं– अद्‌भुत करुण, भयानक, रौद्र, वीभत्स, वीर, शांत, श्रृंगार और हास्य। इन नव रसों की अनुभूति के अनुसार मनुष्य के चेहरे के हाव–भाव बदलते रहते हैं। अद्‌भुत, वीर, शांत, श्रृंगार और हास्य रस सुखात्मक रस की श्रेणी में आते हैं। करुण, भयानक, रौद्र और वीभत्स की गणना दुःखात्मक रूप में की जाती है। रस का शाब्दिक अर्थ है– आनंद। व्यक्तिगत रूप से अनुभव किए जा सकने के कारण हास्य रस सबसे अधिक सुखात्मक व सकारात्मक रस माना जाता है। मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच भिन्नता दर्शाने वाले अनेक लक्षणों – बुद्धि, विवेक, सामाजिकता, हास्य आदि – में भी हास्य एक महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता है। हँसना अपने आप में एक महत्वपूर्ण गुण है, जो केवल मनुष्य में ही पाया जाता है। यह गुण मनुष्य के अन्य प्राणियों से भिन्न होने की मुहर तो लगाता ही है, मानवीय जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाता है। हास्य की विशेषता सभी मनुष्यों में समान रूप से विद्यमान होती है। पूर्वानुमानित से विपरीत, विलक्षण या विचित्र आकार, प्रकार, वेशभूषा, चेष्टा, वाणी, अर्थ विशेष से हास्य उत्पन्न होता है। हमारा मनोरंजन करने के साथ ही परस्पर हास्य आपसी संबंधों को तरोताजा करता है। एक–दूसरे के करीब लाता है। उदासी, एकाकीपन, तनाव, निराशा कम करता है। सभी विपरीत परिस्थितियों को नजरअंदाज कर हँसी–खुशी जीवन बिताने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

हास्य रस के दो प्रकार हैं– आत्मस्थ और परस्त। हास्य के विषय को देखने मात्र से उत्पन्न हास्य को आत्मस्थ हास्य तथा दूसरों को हँसते हुए देखने से प्रकट होने वाले हास्य को परस्त हास्य कहते हैं। आचार्यों ने हास्य क्रिया के छह भेद किए हैं– स्मित, हसित, विहसित, उपहसित, अपहसित और अतिहसित। आँखों की मुस्कराहट स्मित, मंद स्मित कहलाती है, जो सभ्य, सौम्य, शांत और शालीन हास्य की श्रेणी में आती है। नेत्रों एवं कपोलों के विकास के साथ थोड़े से दाँत दिख

*सेवानिवृत्त – वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

पड़ना हसित है। नेत्रों एवं कपोलों के विकास के साथ दाँत दिखाते हुए मुख से हो–ही जैसी मधुर शब्द ध्वनि निकल पड़ना, मध्यम हास्य – न तो बहुत उच्च और न बहुत मधुर – विहसित हास्य है। विहसित के लक्षणों के साथ सिर और कंधों का कांपना, नाक फूल जाना तथा चितवन तिरछी हो जाना उपहसित हास्य कहलाता है। असमय, अकारण, उपहास स्वरूप हँसी अपहसित कहलाती है। हाथ–पैर पटक कर पूरे ठहाके वाली, झकझोर देने वाली, गलाफाड़ व लोट पोट हँसी अतिहसित कहलाती है। इस हँसी में हास्य और काया दोनों पर ही नियंत्रण कम हो जाता है। इन सबसे परे भी हँसी के कई और रूप हैं, जैसे– खिलखिलाती हँसी, खिसियानी हँसी, गलाफाड़ हँसी, झूठी हँसी, दोस्ताना हँसी, नटखट हँसी, प्यारी हँसी, फीकी हँसी, मासूम हँसी, शर्मीली हँसी आदि।

हँसी मात्र भावाभिव्यक्ति नहीं, अपितु व्यक्ति की पहचान होती है। व्यक्तित्व का आइना होती है। स्वभाव की तरह हर व्यक्ति की हँसी भी भिन्न–भिन्न होने के चलते हँसी के माध्यम से उस व्यक्ति में मौजूद गुण–दोषों व उसकी सोच को सरलता व सहजता से जाना जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार – खिलखिलाकर अपनी खुशी खुलकर जाहिर करने वाले उत्साही प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता अच्छी होती है तथा वे सहनशील होते हैं। मंद मुस्कान बिखेरने वाले काफी बुद्धिमान, गंभीर प्रकृति के तथा धैर्यवान होते हैं। रुक– रुक कर हँसने वालों की बौद्धिक क्षमता सामान्य होती है और ऐसे लोग विवेक की बजाय भावना से काम लेते हैं। अट्टहास लगाने वाले स्वाभिमानी और परिश्रमी होते हैं। ठहाका मारकर ऊँचे स्वर में हँसने वाले दुनियादारी की परवाह किए बिना खुलकर जीने वाले होते हैं। ये अपनी जिंदगी जिंदादिली से जीते हैं। ही–ही कर बनावटी हँसी हँसने वाले मौकापरस्त और धूर्त होते हैं। ऐसे लोगों की बौद्धिक क्षमता सामान्य स्तर की होती है। हँसते समय आँखें बंद करने वाले संकुचित मनोवृत्ति वाले होते हैं। वे अपने भीतर बहुत–सी बातें छिपाए रहते हैं। हिनहिनाहट की तरह हँसने वाले बेपरवाह होते हैं और विपरीत समय में जल्दी निराश हो जाते हैं।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि जिस तरह अच्छी जलवायु और अच्छा खानपान स्वस्थ रहने के लिए जरूरी होता है, उसी तरह हँसी भी स्वस्थ रहने में अहम भूमिका निभाती है। इसी को आधार मान कर हमारे देश में विभिन्न तीज–त्यौहारों, शादी–ब्याह के मौकों, जन्मोत्सवों, अनुष्ठानों, विभिन्न ऋतुओं, फसल की बुवाई–कटाई के अवसरों पर नाचने–गाने, खुशियाँ मनाने, आपसे में मिल–जुलकर हँसी–मजाक व हास–परिहास करने की परंपरा रही है। हमारी सभ्यता और संस्कृति का अनूठा और अभिन्न हिस्सा रहे इन उत्सवों का सिलसिला किसी–न–किसी रूप में चलता ही रहता है। इस तरह के मजेदार, आनंदमय, रुचिकर व जीवंत वातावरण में मानवीय अभिव्यक्तियों का रसमय आदान–प्रदान होते रहने से लोग वास्तविक व मौलिक रूप से आनंदित, प्रफुल्लित व प्रसन्नचित्त रहते हैं।

स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से भी सेहतमंद रहने के लिए हँसना बहुत जरूरी है। हँसने से मानसिक तनाव दूर होता है, फेफड़ों में ऑक्सीजन की पूर्ति होती है, रक्त संचार सामान्य रहता है, नई स्फूर्ति आती है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है और स्वास्थ्य ठीक रहता है। तन स्वस्थ और मन प्रसन्न रहने से सुकून भरी नींद आती है। अच्छी नींद आने से दिल और दिमाग से जुड़ी बीमारियों का खतरा कम होता है। इससे वैयक्तिक व्यवहार और सामाजिक माहौल में भी सकारात्मक बदलाव आता है।

अपने चेहरे पर हँसी और मन में खुशी लाने के लिए मजेदार पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, हास्य टी.वी. धारावाहिकों, वीडियो, फिल्मों का सहारा लिया जाता है। हास्य की महत्ता और नितांत आवश्यकता को समझते हुए हिंदी साहित्यकारों, यथा– चंद्रधर शर्मा गुलेरी, पं. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनाथ भट्ट, बालमुकुंद गुप्त, भगवतीचरण वर्मा, भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लाला श्रीनिवास दास, श्रीलाल शुक्ल, हरिशंकर शर्मा आदि ने हास्य – व्यंग्य साहित्य लिख कर समाज के लिए अतुलनीय व अविस्मरणीय कार्य किया है। इसके अलावा, अशोक चक्रधर, काका हाथरसी, अरुण जैमिनी, शैल चतुर्वेदी ने हास्य काव्य को समृद्ध कर अपना अमूल्य योगदान दिया है। अंगूर, अंदाज अपना–अपना, ओ माई गॉड, खट्टा–मीठा, खोसला का घोंसला, गरम मसाला, गोलमाल, चुपके–चुपके, जाने भी दो यारो, थ्री इडियट्स, धमाल, पड़ोसन, मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस., हंगामा, हेरा फेरी आदि कॉमेडी फिल्मों सहित असरानी, ओमप्रकाश, कादर खान, केष्टो मुखर्जी, जगदीप, जॉनी लीवर, जॉनी वाकर, टुनटुन, देवेन वर्मा, राजेंद्र नाथ आदि फिल्मी हिंदी हास्य कलाकारों ने अपनी हास्य कला के माध्यम से कभी बिना एक शब्द बोले, कभी हास्य अभिनय से, कभी अपनी भाषा से, तो कभी हँसी–ठिठोली में, जिंदगी के फलसफे को समझाने और दर्शकों को खूब हँसाने का महत्त कार्य किया है।

सामान्य मानवीय अनुभवों और अनुभूतियों पर आधारित मुहावरों में भी हँसी से संबंधित कई मुहावरे बेहद प्रचलित हैं। ये मुहावरे हमारे जीवन में हँसी के अस्तित्व व हँसी की महत्ता सिद्ध करने सहित हँसी के बारे में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं – आस्तीन ऊपर कर हँसना (अपनी हँसी छुपाने के इरादे से छिपकर हँसना), किसी के चेहरे पर हँसना (किसी के कुछ कहने या करने पर उसके चेहरे पर हँसना, उसका उपहास दिखाने का एक तरीका), खिसियानी हँसी हँसना (दिखावे के लिए हँसना), ठहाका मार कर हँसना (अचानक और अनियंत्रित रूप से हँसना), हँसने वाली बात न होना (बहुत गंभीर विषय, या परिस्थिति/कुछ ऐसा जिसे हल्के में नहीं लिया जा सकता), हँसी उड़ाना (मजाक बनाना), हँसी का पात्र (ऐसा व्यक्ति जिसकी किसी गलती के कारण मजाक उड़ाया जाता है/उपहास किया जाता है), हँसी खेल न होना (आसान कार्य न होना), हँसी छाना (चेहरे पर खुशी के आसार नजर आना), हँसी छूटना (अचानक हँसी आ जाना), हँसी बनाना (मजाक उड़ाना), हँसी मजाक में टालना (बात को एहमियत न देना, बात को हँसी में उड़ा देना), हँसी में बात उड़ाना (गंभीरता से न लेना), हँसी में लेना (मामूली समझना/अनदेखा करना), हँसी से लोट–पोट होना (बहुत हँसना), हँसी से लौटना (बे–इंतिहा हँसना), हँसी होना (अपमान होना/रुसवाई होना) आदि।

हम सभी हँसी के महत्व व उससे होने वाले शारीरिक व मानसिक लाभ जानने के बावजूद अपनी सहज, स्वाभाविक व मौलिक हँसी नहीं हँस पाते। प्रसिद्ध विद्वान मैल्कम मगरीज के अनुसार ''संसार में आज हँसी की सबसे अधिक आवश्यकता है, किंतु दुःख है कि दुनिया में उसका अभाव होता जा रहा है।'' आज की भाग–दौड़ भरी जिंदगी, अस्त–व्यस्त जीवनशैली, व्यस्त दिनचर्या, तनावपूर्ण वातावरण आदि के कारण हम कुदरती रूप से हँसना–मुस्कुराना भूलते जा रहे हैं। हमारे अंतरमन को झंकृत कर संपूर्ण परिवेश में आनंद व उल्लास भर देने वाली हँसी हमारे जीवन से अनजाने व अनचाहे ही विलुप्त होती जा रही है। परिणामस्वरूप नीरसता, थकान, तनाव, बोझिलता हमारे जीवन का हिस्सा बनते जा रहे हैं। इनके नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञ दिल खोलकर खूब हँसने की सलाह देने लगे हैं। उनका भी यही मानना है कि स्वस्थ रहने के लिए हँसी का काफी महत्व है। यह कई बीमारियों की अचूक दवा है, रामबाण उपाय है, संजीवनी बूटी है। यही कारण है कि आधुनिक समय में हास्य थेरेपी के रूप में 'हास्य योग' या 'लाफ्टर योगा' का सहारा लिया जा रहा है। हास्य योग अपनी सुविधानुसार बड़ी ही सरलता से प्रायः किसी सार्वजनिक उद्यान या शांतिपूर्ण वातावरण कहीं भी समूह में किया जाता है। इसमें बिना किसी बाह्य कारण के, प्रयत्नपूर्वक लंबे

समय तक औपचारिक या कृत्रिम रूप से हास्य पैदा किया जाता है। जोरदार ठहाके लगाए जाते हैं। यह योग इस विश्वास पर टिका हुआ है कि इस तरह किए जाने वाले कृत्रिम हास्य से भी वही सारे लाभ होते हैं जो स्वाभाविक रूप से अनायास हँसने, खिलखिलाने, ठहाका लगाने और उन्मुक्त हँसी हँसने से मिलते हैं। चूँकि हमारे जीवन में हँसी का महत्व निर्विवाद है इसलिए हँसना–हँसाना जरूरी है। हास्य योग में लयबद्ध रूप में प्रतिदिन हँसने–हँसाने के अभ्यास से भी सेहत में फर्क महसूस हो सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सजगता के चलते हर साल मई के पहले रविवार को 'वर्ल्ड लाफ्टर डे' भी मनाया जाता है। वैसे हमारे देश में हास्य योग भी कोई नई बात नहीं है, बल्कि इसकी परिपाटी लंबे समय से चली आ रही है। मूलतः नाथ परंपरा से इसकी शुरुआत मानी जाती है। माना जाता है कि महायोगी गुरु गोरखनाथ ने इसकी शुरुआत की थी। उनका योग दर्शन 'हंसिबा खेलिबा, धरिबा ध्यान' इसी पर आधारित है, जिसका मतलब है हँसते–खेलते हुए अपना ध्यान धरने की खेलपूर्ण कला। अपने शिष्यों को योग की मजेदार और आसान प्रकृति सिखाने हेतु मन की एकाग्रता बनाए रखने के लिए उन्होंने यह जीवन दृष्टि दी थी।

गीतकार वर्मा मलिक का लिखा और किशोर कुमार द्वारा गाया गया कठपुतली फिल्म का गीत हँसने की महत्ता व सकारात्मक जीवन शैली की सार्थकता सिद्ध करता है–

जो तुम हँसोगे तो दुनिया हँसेगी
रोओगे तुम तो ना रोएगी दुनिया, ना रोएगी दुनिया
तेरे आँसुओं को समझ ना सकेगी
तेरे आँसुओं पर हँसेगी यह दुनिया, हँसेगी यह दुनिया।

अगर तुम हँसोगे तो सारी दुनिया तुम्हारे साथ हँसेगी और अगर तुम रोओगे तो कोई तुम्हारा साथ न देगा और इस प्रकार तुम अकेले पड़ जाओगे। अगर आप सदा खुश रहते हैं और आपकी सोच भी सकारात्मक है तो हर कोई आपके करीब, आपके पास, आपके साथ रहना चाहेगा, लेकिन अगर आप हमेशा दुःखी रहते हैं, किसी–न–किसी बात पर रोते रहते है या आपकी सोच नकारात्मक है तो कोई भी आपके आस–पास फटकना भी पसंद नहीं करेगा और आप अकेले व तन्हा रह जाओगे, इसलिए सदा खिलखिलाकर हँसिए, मुस्कुराइए, स्वस्थ रहिए और अपना जीवन सफल बनाइए।

निगम की सीसीटीवी निगरानी प्रणाली

गोदामों की सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए देशभर में वेअरहाउसों पर सीसीटीवी निगरानी प्रणाली स्थापित की गई है। मोबाइल फोन पर रिमोट व्यूइंग सुविधा के साथ सीसीटीवी कैमरों को अपग्रेड करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर भी उपलब्ध कराया गया है। सी.सी.टी.वी. शिकायतों और ट्रैकिंग के लिए ऑनलाइन पोर्टल को शुरू कर दिया गया है। अखिल भारतीय स्तर पर वेअरहाउसों में सीसीटीवी के वेब फ़ीड को निगम की वेबसाइट पर लाइव किया गया है।

पैस्ट नियंत्रण परिचालनों के पश्चात् ग्राहकों द्वारा रखी जाने वाली सावधानियां

ऐसा करें

- सभी खाद्य पदार्थों को एअर टाइट कंटेनरों में रखें अथवा पूरी तरह कवर कर रखें।
- जिस क्षेत्र को कीटनाशक द्वारा उपचारित किया गया है, उससे बच्चों, वृद्धों, रोगियों एवं पालतू जानवरों को दूर रखें।
- कृपया पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेशन के पश्चात् परिसरों को कम से कम 2 घंटे के लिए बंद रखें।
- कृपया पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से परिसर का पूरा क्षेत्र अर्थात् स्टोर, स्नानघर/शौचालय/शयन कक्षों आदि में छिड़काव/ उपचार करवाएं।
- परिचालनों के दौरान फर्श पर बिखरे रसायन के घोल को हटाने के लिए फर्श को अच्छी प्रकार पोंछें, धोएं ताकि पालतू जानवरों, बच्चों आदि को विषैले तत्वों से बचाया जा सके।
- परिसरों में प्रवेश करने से पहले सभी दरवाजे, खिडकियां तथा रोशनदान खोल दें और लगभग एक घंटे तक पंखे चला दें।
- परिचालनों के लिए प्रयोग किए गए कीटनाशकों का नाम एवं गुणवत्ता के बारे में पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से अवश्य पूछें।

ऐसा न करें

- कीटनाशक द्वारा उपचारित क्षेत्र में विषैले प्रभाव से बचने के लिए पालतू जानवरों एवं बच्चों को न जाने दें।
- रसोई के सामान को डिटर्जेंट एवं पानी से पूरी तरह धोए बिना प्रयोग न करें।
- यदि कीटनाशक उपचार के समय कोई खाद्य पदार्थ अथवा अन्य खाने योग्य वस्तु बिना ढके रह गयी है तो उसका प्रयोग न करें।
- विषैले प्रभाव से बचने के लिए उपचारित कक्षों के दरवाजों, खिड़कियों अथवा दीवारों को न छुएं।
- कीटनाशक उपचार के दौरान सामने खुले पड़े रह गए कपड़ों को न पहनें।

सचित्र गतिविधियाँ

निगम के अंशधारियों की वार्षिक साधारण बैठक की झलकियां

उपलब्धियां एवं सम्मान

निगम को भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा रिश्वत विरोधी प्रबंधन प्रणाली आईएस/आईएसओ 37001:2016 के लिए पुनः प्रमाणन प्राप्त हुआ। यह उपलब्धि उच्चतम नैतिक मानकों के साथ व्यापार करने की निगम की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

भांडागारण विकास एवं नियामक प्राधिकरण द्वारा निगम को सरकारी क्षेत्र की श्रेणी के अंतर्गत चार समूहों अर्थात – मध्य, दक्षिण, पूर्वोत्तर क्षेत्रों में उच्चतम प्लेज फाइनेन्सिग तथा ई – एनडब्ल्यूआर जारी करने पर प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।

निगम को एग्री कॉमोडिटी वेअरहाउस मैनेजमेंट में उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया।

निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 का आयोजन

निगमित कार्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन

गणतंत्र दिवस के अवसर पर निगमित कार्यालय में ध्वजारोहण

आईमा, नई दिल्ली में महिला प्रोफेशनल्स पर आयोजित कार्यक्रम

ऑल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन (आईमा), नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित महिला प्रोफेशनल्स हेतु विशेष प्रबंधन विकास कार्यक्रम में निदेशक (कार्मिक) द्वारा "स्प्रैड योर विंग्सः बिल्ड योर लीडरशिप स्किल्स" विषय पर व्याख्यान दिया गया।

निगमित कार्यालय नई दिल्ली में स्थापना दिवस समारोह

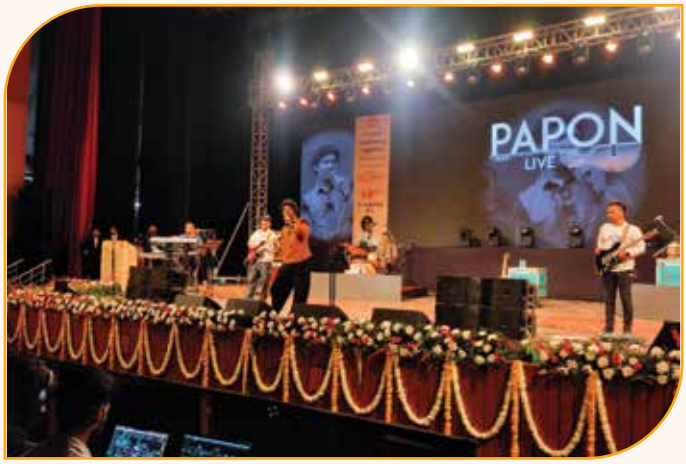

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति जी की अध्यक्षता में हैवलॉक, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में आयोजित मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

निगमित कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

निगमित कार्यालय में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

निगम द्वारा की गई सीएसआर गतिविधियां

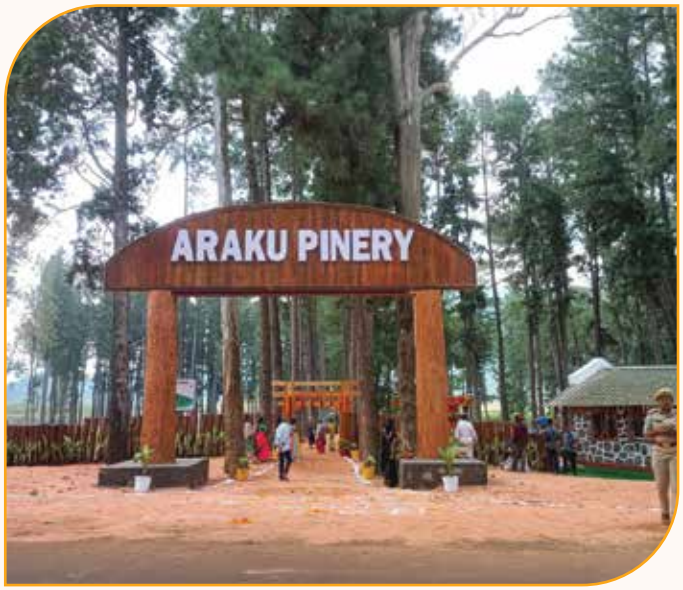

सीएसआर के तहत आंध्र प्रदेश स्थित अराकू पाइनरी में लकड़ी के डेक, टेंटेड आवास, टिकट काउंटर और पार्क कार्यालय आदि जैसी सुविधाएं केंद्रीय भंडारण निगम के सहयोग से बनाई गई हैं

बम्हरौली, विकास खंड- मौंठ, जिला झांसी में सार्वजनिक पुस्तकालय में लाइब्रेरी हॉल, लाइब्रेरियन कक्ष सहित अन्य सुविधाओं का निर्माण

फिजियोथेरेपी उपकरणों की खरीद हेतु एफएचसी अंबालाबायल, जिला वायनाड को धनराशि प्रदान की गई

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत संपन्न गतिविधियां

वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन में निगम की प्रतिभागिता

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर का राजभाषा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई का राजभाषा निरीक्षण

उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा निगमित कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय द्वारा निगमित कार्यालय का राजभाषा निरीक्षण

निगमित कार्यालय में अखिल भारतीय राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालयों में संपन्न विभिन्न गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू

क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालयों में संपन्न विभिन्न गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

वैज्ञानिक भंडारण के महत्वपूर्ण तथ्य

किसी भी राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए खाद्यान्नों को संजोकर रखना अत्यंत आवश्यक है। खाद्यान्नों का सीधा संबंध मानवीय अस्तित्व से जुड़ा है, अतः खाद्यान्नों का संरक्षण आने वाले कल के लिए जरूरी है।

केंद्रीय भंडारण निगम पिछले कई वर्षों से उत्पादक तथा उपभोक्ताओं के बीच में मजबूत कड़ी का काम कर रहा है तथा देश के किसानों को वैज्ञानिक भंडारण की तकनीक की जानकारी उपलब्ध कराता है।

वेअरहाउसिंग सेवा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ग्राहकों के स्टॉक को समय पर डिपॉजिट करना एवं डिलीवरी देना है तथा वेअरहाउसिंग कारोबार की सफलता वेअरहाउसों की क्षमता के निरंतर भरपूर उपयोग पर ही निर्भर है।

निगम खाद्यान्नों के वैज्ञानिक भंडारण के अतिरिक्त कंटेनर फ्रेट स्टेशन, अंतरदेशीय कंटेनर डिपो, लैंड कस्टम स्टेशन तथा एअर कार्गो कॉम्पलेक्स जैसी लॉजिस्टिक सेवाएं भी उपलब्ध कराता है।

निगम अपनी वैज्ञानिक भंडारण सुविधाओं के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है तथा इससे किसानों की खुशहाली में स्थिरता आई है और पूरे देश में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।

कृषि एवं औद्योगिक कार्यकलापों के क्षेत्र में वेअरहाउसिंग एक महत्वपूर्ण घटक है। विकासशील अर्थव्यवस्था में वेअरहाउसिंग प्रणाली का विशेष महत्व है जो उत्पादन के लिए सुरक्षित वैज्ञानिक भंडारण प्रदान कर सकता है।

निगम ग्राहकों के स्टॉक का स्वामी नहीं है बल्कि यह एक अभिरक्षक और अमानतदार के रूप में कार्य कर रहा है तथा वैज्ञानिक भंडारण की दिशा में आज कीटनाशन सेवाओं एवं प्रधूमन कार्य द्वारा भंडारित माल का परिरक्षण किया जाता है।

मूल्य नियंत्रण के लिए भंडारण का विशेष महत्व है। जन-जन के लिए आधुनिक भंडारण व्यवस्था सुनिश्चित करना आवश्यक ही नही बल्कि देश की समृद्धि के लिए उपयोगी है।

देश में खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण और उनकी आपूर्ति करने सहित भंडारण की वैज्ञानिक तकनीक के विकास में भी निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए वार्षिक कार्यक्रम (2024–25)

क्र. स.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपि की भर्ती	80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं अथवा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13	i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम–से–कम एक निरीक्षण		
14	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली–110016